वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

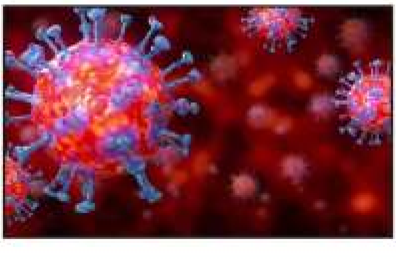
तर्कशील पथ

TARKSHEEL

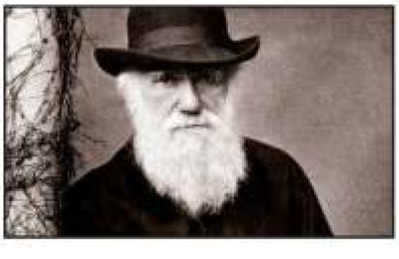
जून - अगस्त 2020
(संयुक्तांक)



₹20







हमारे पास लूट से मुक्ति के लिए संघर्ष के अलावा और कोई रास्ता नहीं ...निकोल कजान जाकिस

पूछते हैं बच्चे!

वीरेंदर भाटिया

मैं सुबह-सुबह
बच्चों से अखबार छिपा लेना चाहता हूं
और टीचर कहती हैं
न्यूज लिख कर लाओ
न्यूज लिखते वक्त पूछते हैं बच्चे
क्यों जलाया प्रोफेसर लड़की को
निर्भया कौन थी
यह ब्लात्कार क्या होता है
कौन थी सोनी सोरी
योनि में पत्थर क्यों भरे उसके
जामिया की लड़कियों को
क्यो पीट रही है पुलिस
ये प्राइवेट पार्ट का क्या मतलब है पापा
मैं बच्चों को
कोमल अंगों की कोमलता के साथ
बड़ा करना चाहता हूं
समाचार हैं कि
हमारी चेतनाओं से
कोमलता छीन रहे हैं
मैं अखबार हटा देना चाहता हूं
सोचता हूँ फिर
कि कठोर जीवन मे
कोमलता का कोई मूल्य है क्या?
बच्चे न्यूज लिख रहे होते हैं
और मैं व्यस्त होने का दिखावा करता हूं
कि बच्चे क्रूर सवाल न पूछें।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-
गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-
द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :
गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए
www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-
http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:
दोआबा कम्यूनिकेशंस
मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

आगामी मीटिंग के बारे

कोरोना महामारी के कारण तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग को आयोजित होना अभी अनिश्चित है। अगली मीटिंग जब भी संभव होगी, तर्कशील साथियों को विभिन्न माध्यमों से सूचित कर दिया जायेगा।

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

कोविड 19 के कुप्रभाव

दिसम्बर, 2019 में उभरे कोरोना ने अकस्मात चलती दुनियां को आतंकित कर दिया। ग्लोबल विलेज के रूप में विकसित दुनियाभर में एक भय का वातावरण विकसित होने में देर न लगी और आनन फानन में दुनिया लॉक डाऊन होने लगी । कुछ देशों में बेहद भयावह स्थिति बनी व कुछ में प्रभाव कम रहा। इसी कारण कुछ इसे बेहद खतरनाक व कुछ मामूली वायरस बताने लगे। इस के भयावह परिणाम सामने आने लगे। मुख्यतः आर्थिक गतिविधियों पर बेहद कुप्रभाव पड़ने लगा। भारत जैसे घनी आबादी वाले व बहुसंख्यक रोज कमा कर खाने वालों के सामने बड़ा संकट पैदा हो गया। स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यापकता न होने के कारण अन्य बीमारियों से पहले से ही ग्रस्त लोगों का जीवन बेहद कष्टमय हो गया। इसके साथ ही कोविड 19 से निपटने के लिए आवश्यक उपकरणों व दवाईयों की कालाबजारी ने रिकार्ड तोड़ दिए। 1200 रुपए का टेम्प्रेचर नापने वाला इंफ्रारेड थर्मामीटर 10000 तक मे बिका। इसी तरह मास्क, सेनेटाइजर आदि की कीमत भी ऊंचाईयां छूने लगी। दूसरी तरफ श्रमिक वर्ग पर जैसे आफत आ पड़ी। इस वर्ग के अनियंत्रित पलायन ने मानव त्रासदी को बेहद दुःखमयी बना दिया। इस समय सरकार के साथ साथ सामाजिक संगठनों ने अहम भूमिका निभाई। बहुत से संगठन भोजन व अन्य जरूरी सामान को लेकर जरूरतमन्दों की मदद को मैदान में उतर आए इन सब से यह समझने में मदद मिली कि समाज मे मानवीय संवेदना बहुत महत्व रखती है। समाज मे अंधविश्वास ने भी नए आयाम गढ़ दिए। जहां नीम हकीम सामने आने लगे और इससे बचने के टोटके बताने लगे, वही कुछ जगहों पर कोरोना देवी जैसे अंधविश्वास ने भी जगह बना डाली। आर्थिक व सामाजिक कारणों से मानसिक रोगों की रफ्तार बढ रही है। यद्यपि विश्व स्तर पर ही मानसिक परेशानियों से उभरने के लिए सरकारों ने व्यवस्था की हेल्प नम्बर जारी किए और बहुत लोगों ने इन काउंसलिंग सेंटरों से लाभ उठाया।

कोविड-19 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है। मुख्य समस्या अब पहले से ही संकट ग्रस्त पूंजीवाद को लेकर है जिसने वर्किंग क्लास के जीवन को दुश्वार कर दिया है। आने वाले समय मे महामारी तो चली जाएगी आर्थिक व सामाजिक जीवन की गतिविधियों को पटरी पर लाना बेहद कठिन रहेगा। इस दिशा में सरकारें कितना प्रयास कर पाएंगी कि मानव जीवन सुखमय हो चले। मानसिक परेशानियों में घिरे मानव समाज को आगे बढ़ने के लिए बेहद संजीदगी से चलना होगा। इस कार्यकाल में तर्कशील सोसायटी ने सोशल मीडिया के द्वारा लोगों को संकटों से बाहर आने का लगातार सन्देश दिया। कोशिश की गई कि भय के फोबिया से समाज बचा रहे। आने वाले समय मे भी तर्कशील सोसायटी अपने इसी कर्तव्य को लेकर प्रतिबद्ध है।

महामारी और मीडिया

-विर्जल हॉकिंस नोवल

कोरोना वायरस, जिसे कोविड-19 के नाम से जाना जाता है, पूरी दुनिया में बड़ी संख्या में लोगों के स्वास्थ्य और उनकी जिंदगी के लिए चुनौती बनगया है। इससे खासतौर पर एशिया और पश्चिम के उच्च आय वाले देशों में सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में भारी तबाही ला दी हैं इसने मीडिया का ध्यान भी पूरी तरह से आकर्षित किया है, जिससे हर तरह की घरेलू और वैश्विक खबरें दरकिनार हो गई हैं।

मगर वैश्विक स्तर पर आकर्षण का स्तर अनिवार्य रूप से मानव जीवन के खतरे के स्तर के अनुमान में नहीं है। इस आलेख के लिखे जाने तक कोविड-19 से पूरी दुनिया में संक्रमित लोगों की संख्या चार लाख से अधिक और इससे हुई मौतों की संख्या 18 हजार से अधिक हो चुकी थी।...

इसी परिप्रेक्ष्य में रखकर देखें तो हर साल पूरी दुनिया में मलेरिया 20 करोड़ लोगों को संक्रमित करता है और इससे चार लाख लोगों की मौत हो जाती है। इसमें से 90 फीसदी मौतें अफ्रीका में होती हैं। क्षय रोग यानी टीबी से हर साल एक करोड़ लोग संक्रमित होते हैं, और उनमें से मोटे तौर पर डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती हैं। दूषित पानी और दूषित पानी से होने वाले अतिसार से मरने वालों की संख्या मलेरिया, टीबी, और एड्स से मरने वालों की संख्या के योग से अधिक होती है। कोविड-19 की तरह इन सारी बीमारियों (मलेरिया के कुछ अपवाद को छोड़कर) का प्रभाव पूरी दुनिया में है, हालांकि ये दक्षिणी गोलार्द्ध में कहीं अधिक केंद्रित होती है।

ये ऐसी लाखों जिंदगियां हैं, जो व्यापक रूप से बचाई जा सकती हैं और इन मौतों और मानवता के लिए निरंतर चुनौती पैदा करने वाली इन बीमारियों की समाचार मीडिया उपेक्षा करता रहा है। न्यूयार्क टाइम्स की वेबसाइट का अध्ययन करने से पता चला कि 2019 में इसमें टीबी के बारे में सिर्फ छह लाख थे। (ऐसे आलेख, जिनके शीर्षक में टीबी शब्द का प्रयोग हुआ था) और मलेरिया के बारे में चार आलेख (जिनमें से दो आलेख 2019 बीजिंग एक्सपो में मलेरिया विरोधी दवा से संबंधित थे) प्रकाशित हुए थे। समाचार मीडिया के नजरिये से देखें, तो इन बीमारियों से होने वाली मौतें, इन्हें बचाया जा सकता था या नहीं, इससे लगता है कि ये 'सामान्य' और एक हद तक 'स्वीकार्य' हैं, क्योंकि न तो ये छापने योग्य हैं और न ही विचारणीय हैं। स्वाभाविक निकर्ष यह है कि ऐसी बीमारियों के प्रति मीडिया और जन आकर्षण का निर्धारण वास्तव में मानव जीवन को इनसे होने वाले नुकसान या जोखिम से नहीं होता बल्कि व्यापक रूप से इस बात पर निर्भर होता है कि किनकी जिंदगियां जा रहीं या किन्हें खतरा है।

जिस तरह से सशस्त्र संघर्ष (सामान्य तौर पर पूरी दुनिया के कवरेज में) संपन्न और वंचित तबके के संदर्भ में भारी अंतर देखा जा सकता है, उसी तरह से पीड़ितों की भौगोलिक स्थिति, राष्ट्रीयता, नस्ल, जातीयता और सामाजिक-आर्थिक हैसियत निधार्सरण करने वाले मुख्य कारक हैं। 2014-16 में पश्चिमी अफ्रीका में जब इबोला वायरस के प्रकोप के रूप में इतिहास को सबसे बुरी महामारी फैली थी, तो यह तब तक सुर्खियां नहीं बनीं, जब तक कि इस बीमारी को उच्च आय वाले देशों में लोगों के लिए खतरों के रूप में नहीं देखा जाने लगा। इन देशों में रहने वाले लोगों को शायद यह ध्यान न देने के लिए क्षमा किया जा सकता है कि हम अब इबोला के दूसरे सबसे खराब प्रकोप पर काबू पा रहे हैं, जो कि 2018 से डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरपी) में चल रहा हैं पश्चिमी मीडिया में यह शायद ही सुर्खिया बने।

समाचार के आकर्षण का स्तर न केवल पीड़ित के स्थान और उसकी पहचान पर निर्भर करता है बल्कि इसमें 'नया' क्या है, इस पर भी निर्भर होता है। मलेरिया, टीबी और अतिसार जैसी बीमारियां बड़ी संख्या में लोगों की जान लेती हैं, लेकिन इससे जुड़े खतरे और त्रासदी की एक सतत धारा है। मगर कोविड-19 मेर्स और सार्स दूसरे कोरोना वायरस की तरह दुर्लभ किस्म की महामारियां हैं। (अभी तक के

रूझानों के अनुसार) जो कुछ वर्षों के अंतराल में आई हैं। नए तरह के घटनाक्रम, उनसे जुड़े खतरे और मौतों, जिनके हम आदी नहीं हैं, समाचार मीडिया के लिए विशेष आकर्षण का कारण है। उच्च आय वाले देशों पर भी यही लागू होता है।

जैसा कि अनेक लोग रेखांकित कर चुके हें कि अकेले अमेरिका में हर साल दसियों हज़ार लोगों की मौत मौसमी इन्फ्लूंजा से हो जाती है, वहां कोविड-19 से अब तक हुई मौतों की तुलना में यह संख्या काफी अधिक है, लेकिन मीडिया की प्रतिक्रिया इसमें शांत ही होती है। जबकि यह खतरा काफी गहरा है, लेकिन समाज और मीडिया इसे सामान्य ढंग से लेते हैं। इसी तर्क के साथ मीडिया से यह अपेक्षा की जा सकती है कि उसे डीआरसी में इबोला के प्रकोप के समय ऐसी ही प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए थी। आखिर यह एक खतरनाक बीमारी और अत्यंत संक्रमित है और यह दुर्लभ ढंग से कभी कभार होती है।

यही बात दुनिया में खसरे के सबसे भयंकर प्रकोप के बारे में कही जा सकती है, जिसका सामना डीआरसी को ही करना पड़ा था। मलेरिया और टीबी के विपरीत यह भी एक नया घटनाक्रम है। एक आखिरी कारक जो नवीनता से जुड़ा है, वह है अज्ञात से भय। इबोला और खसरे का प्रकोप कभी-कभार होता है और इनका प्रकोप पहले भी हुआ और इनके बारे में काफी कुछ पता है। कोविड-19 कोरोना वायरस का एक नया रूप है और इनके प्रभाव के बारे में अभी पूरी तरह से पता नहीं हैं । वैज्ञानिक अब भी यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि यह कितना घातक है। इस वायरस के बारे में अज्ञात के भय और इसने जो आतंक पैदा किया है, उससे लोग निरंतर अद्यतन जानकारियां जानना चाहते हैं और इससे मीडिया के हित जुड़े हुए हैं। वहां कोविड-19 ने वास्तव में पूरी दुनिया में एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया है और यदि इसकी संख्या निरंतर बढ़ती है तो अफ्रीका को भी इसे नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। जब राष्ट्रीयता, नस्ल या सामाजिक-आर्थिक हैसियत से इतर कोविड-19 से मानव जीवन को बचाना ही लक्ष्य है, तो यही ठीक समय है कि स्वास्थ्य संबंधी दूसरे बड़े सार्वजनिक संकटों पर भी हमें गौर करना चाहिए।

-संदर्भ अफ्रीका सेंटर फॉर कोलोब्रेशनद ऑन पीस एंड सिक्योरिटी (एनएसीसीपीएस) में प्रकाशित बलॉग)

मेरी खामोशी ही मेरा प्रतिरोध है

-- मृत्युंजय प्रभाकर

मैं अब चुप ही रहूंगा
अब यही मेरी भाषा है
मेरी खामोशी ही मेरा प्रतिरोध है

जब सब बोल रहे हों
गर्जनाद कर रहे हों
हर दिशा में शोर हो
सामूहिक अट्टहास हो
भीड़ का गणराज्य हो
तब ठहर जाना ही श्रेयकर है

स्वर, व्यंजन, वर्ण, शब्द, अर्थ से
आकार लेती भाषा
जब चुकने लगे अपना ही मूल
जब बोले जाने में कुछ भी
कहा जाना शामिल न हो
तब चुप हो जाना ही बेहतर है

जब जो नहीं होना था
उसी का उत्सव मनाया जा रहा हो
और जो होना था
उसकी विरुद्धावली गाई जा रही हो
तब समझ लेना चाहिए
थोड़ा थम जाना ही हितकर है

कहने में जोखिम है
कहने का जोखिम उठाकर भी
हम कहते हैं कि कोई सुने
पर शोर से बहरे कानों में
जब कहना शोकगीत बन उतरे
तब कुछ न कहना ही प्रियकर है

इसलिए
मैं अब चुप ही रहूंगा
अब यही मेरी भाषा है
मेरी खामोशी ही मेरा प्रतिरोध है।

विज्ञान ही बचायेगा संकट से

-प्रेमपाल शर्मा

विज्ञान और वैज्ञानिक सोच समझ के चलते दुनिया भर में यह यकीन लौट रहा है कि कोरोना विषाणु पर जल्दी जीत मिलेगी। पहली बार दुनिया का कोई देश इस महामारी से अछूता नहीं रहा और यह भी पहली बार हो रहा है कि लोगों की आस्था चर्च, मंदिर, मस्जिद या दुनिया भर के धर्म द्वीपों से हट कर विज्ञान और उसकी प्रयोगशालाओं की तरफ लौटी है। इसका तुरंत असर शिक्षा व्यवस्था और विशेषकर विज्ञान की शिक्षा पर पड़ना लाजिमी है। निश्चित रूप से आर्थिक-सामाजिक व्यवस्थाओं में भी बदलाव आएगा लेकिन इन सब बदलावों की बुनियाद में रहेगी शिक्षा और उसका चरित्र। इसी शिक्षा के बूते नौजवान पीढ़ी को रोजगार मिलेगा और उसी बूते देश का विकास। मनुष्य के इतिहास ने इसे बार-बार सिद्ध किया है।

यूरोप के पुनर्जागरण को याद करें। लगभग पांच सौ वर्ष पहले इसी वैज्ञानिक सोच, तर्कशक्ति का अंजाम था -भौतिकी, रसायन से लेकर डार्विन के विकासवाद तक के सिद्धांत। पोप और उनके धर्मावलंबियों को चर्च तक सीमित कर दिया गया था और कोलम्बस, वास्कोडिगामा, कप्तान कुक विज्ञान के रथ पर बैठ कर निकल पड़े थे दुनिया को जीतने के लिए। भारत की खोज भी यूरोपियों के लिए उसी अभियान का हिस्सा थी और वैसे ही अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के द्वीपों की। लेकिन विज्ञान सफल तो तभी होगा, जब आपके स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली पीढ़ी उसे समझेगी और आगे बढ़ायेगी। कैंब्रिज, ऑक्सफोड, और दूसरे विश्वविद्यालय इन्हीं खोजों, शोध और सिद्धांत के लिए दुनिया भर में मशहूर हुए। जिसे कुछ उपनिवेशवाद कहते हैं, वह उन देशों के लिए नए रोजगार नए साम्राज्य की तलाश थी। भारत, चीन जैसे देशों की सभ्यता हजारों साल पुरानी जरूर थी, लेकिन वे विज्ञान के आगे कहीं नहीं टिक पाये। उन्हें गुलाम होना पड़ा और इस गुलामी से मुक्ति मिली दूसरे विश्व युद्ध के बाद। पहले और दूसरे विश्वयुद्ध ने भी विज्ञान की पताका ही फहराई। बड़े-बड़े रासायनिक उद्योग, ऑटोमोबाइल उद्योग, हवाई जहाज, परमाणु बम ले लेकर पेनिसिलिन और दूसरी दवाएं यानी जितनी बड़ी घटना होगी, होमो सेपियंस की जिजीविषा बताती है, उतने ही बड़े बदलाव होंगे।

कोरोना विषाणु की महामारी को तो मनुष्य जाति के ज्ञात इतिहास की सबसे बड़ी परिघटना माना जा रहा हैं। भारत में पूर्णबंदी और दूसरे कदम तुरंत उठाते हुए अभी तक अद्वितीय समझबूझ का परिचय दिया गया है। अंजाम भी सामने है। दुनिया की बाईस फीसद आबादी वाले देश में महामारी का प्रकोप दो फीसद से भी कम है। लेकिन यही वक्त है उत्तर कोरोना काल के लिए तुरंत तैयार रहने का। इसमें जो जीता वही सिंकंदर। दुनिया भर के वैज्ञानिक अभी ऐसी संभावनाओं से घिरे हुए हैं कि जब तक विषाणु की कोई मुकम्मल काट नहीं खोज ली जाती और दुनिया भर में यदि एक भी व्यक्ति उससे संक्रमित रहता है, तो इसकी वापसी फिर वैसा ही कहर ढहा सकती है। हम सबने देश के लाखों मजदूरों को हाल में सड़कों पर रोते बिलखते देखा हे और यह तबका ऐसे ही निर्वासन में आधा पेट काटने को मजबूर है। पूरी व्यवस्था के लिए शर्मनाक है। पर अच्छी बात यह है कि देश के डॉक्टर, नर्स और पुलिस कर्मी जान की परवाह न करते हुए इस महामारी के मुकाबले के लिए अग्रिम मोर्चे पर तैनात हैं।

लेकिन भविष्य तो शिक्षा में बुनियादी बदलाव से ही संभव हैं शिक्षा के बुनियादी बदलाव में विज्ञान की वैसे ही वापसी करनी होगी जैसे 1957 में शीत युद्ध के दौर में रूस के अंतरिक्ष विज्ञान में आगे बढ़ाने की भनक ने अमेरिका की विज्ञान नीति को सदा के लिए बदल डाला था, या पिछले दो दशक में चीन ने विज्ञान और तकनीकी के बूते युद्ध, शोध, शिक्षा, रोजगार और यहां तक कि राजनय संस्कृति तक के समीकरण बदल दिए हैं। कोरोनाविषाणु चीन से शुरू जरूर हुआ है, लेकिन विज्ञान के बूते

ही चीन पर उतना असर नहीं हुआ जितना सारी दुनिया पर। यहां तक कि उत्तर कोरोनाकाल में चीन अपने विज्ञान और शिक्षा के बूते और बेहतर ढंग से दुनिया पर कब्जे की तरफ अग्रसर है।

पुरानी कहावत का सहारा लें तो लोहा ही लोहे को काट सकता है, यानी इक्कीसवीं सदी में विज्ञान और तकनीकी की चुनौतियों को विज्ञान और तकनीकी से ही परास्त करने की जरूरात है, न कि धर्म के कोड़े से। यह अटकलबाजी जरूर चल रही है कि दुनियाभर की बहुराष्ट्रीय कंपनियां चीन का विकल्प भारत में खोज रही हैं। पर यह हकीकत से दूर की कौड़ी है। क्या हमारे पास ज्ञान-विज्ञान में ं चीन की टक्कर की पढ़ी-लिखी पीढ़ी है? हम भले ही दुनिया की सबसे नौजवान आबादी का फख्र करते रहें, उस आबादी के बारे में हाल में एक प्रसिद्ध वैश्विक एजेंसी ने दावा किया है कि उसके पास दर्ज स्नातकों में से साठ फीसद किसी काम के नहीं हैं। उनके पास न तकनीकी कौशल है, न दूसरे सामान्य ज्ञान की समझ। सिर्फ डिग्री बांट कर हम चीन का मुकाबला नहीं कर सकते। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए श्रम सस्ता जरूर है, लेकिन गुणवत्ता यदि नहीं मिली तो ये फिर चीन की तरफ ही लौटेंगे।

मौजूदा वक्त को चौथी क्रांति कहा जाता है, यानी इंटरनेट और दूसरे माध्यमों से ज्ञान की असीमित उपलब्धता। पहली तीन क्रांतियों में भारत कई कारणों से फिसड्डी साबित हुआ है। लेकिन मौजूदा कोरोना ने पढ़े-लिखे लोगों से लेकर गांव-देहात तक प्लाज़्मा, न्यूमोनिया, बैक्टीरिया, वैक्सीन, एंटीबॉडीज, मास्क, आरोग्य सेतु जैसे वैज्ञानिक शब्दों को पहुंचा दिया है। यानी विज्ञान की बुनियादी बातें जैसेः साफ-सफाई, बिमारियों के कारण, शारीरिक दूरी, स्वावलंबन, आदि रोज़ाना मीडिया के जरिए जन-जन तक पहुंच रही है। इन सब बातों को तुरंत पाठ्यक्रम और दूसरे मंचों के ज़रिए नई पीढ़ी के दिमाग में एक सहज तर्क से डालने की जरूरत हैं मैजूदा पाठ्यक्रम रटने से शिक्षा का सड़ा हुआ चौखटा नहीं टूटने वाला। ऑनलाईन शिक्षा को भी इससे बचना होगा और इसके लिए शिक्षकों के दिमाग और समाज को भी बदलने की जरूरत है।

अफसोस की बात है कि हम आजादी के बाद वैज्ञानिक चेतना के नारे तो दीवारों पर लिखते रहे हैं, लेकिन समाज में वैज्ञानिक चेतना दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती। यहां पथरी, पीलिया, कैंसर जैसी बीमारियों के इलाज से लेकर सामान्य बुखार और दस्त के इलाज भी झाड़-फूंक से होते रहते हैं।

शर्तिया लड़का होने की दवा धड़ल्ले से बिकती है। पुराने ज्ञान आयुर्वेदिक प्रणाली आदि को नए वैज्ञानिक ढंग से दुनिया भर के सामने आजमाने और प्रस्तुत करने की जरूरत है और साथ ही नई वैज्ञानिक खोजों को भी तुरंत आत्मसात करने की। रोजगार भी उन्हीं को मिलेगा जो ऐसी वैज्ञानिक शिक्षा से सुसज्जित हों।

अब विज्ञान पढ़ाने का पूरा ढंग बदलना होगा। आजादी के पहले भी विज्ञान और शोध की स्थिति ब्रिटिश दौर में कहीं बेहतर थी। सी.वी.रमन, प्रफुल्लचंद्र रे, जगदीश चंद्र बसु, मेघनाथ साहा, सत्येंद्रनाथ बोस की गिनती दुनिया के वैज्ञानिकों में तब भी होती थी और आज भी। आजादी के बाद हर बीते दशक में विज्ञान और शोध में हम पिछड़े हैं। जो भी कुछ मूल शोध हो पाया है, वह तभी जब इस देश के मेधावी वैज्ञानिक दूसरे देशों में बस गए हैं इसलिए कुछ दिनों पहले 2009 के नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकट रामकृष्णन ने भारत में वैज्ञानिक शोध की स्थितियों का मजाक उड़ाते हुए इसे सर्कस का नाम दिया था। हकीकत यही है कि ज्ञान-विज्ञान के जरिए ही न सिर्फ भारत, बल्कि पूरी दुनिया संकटों से मुक्ति पा सकती है।जो राष्ट्र समाज इसे जितना जल्दी समझेंगे, उत्तर कोरोना काल में जीत उन्हीं की होगी। *-जनसत्ता से साभार*

जलते घर को देखने वालों
फूस का छप्पर आपका है
आग के पीछे तेज़ हवा है
आगे मुकद्दर आपका है
उसके क़तल पे मैं भी चुप था,
मेरा नम्बर अब आया,
मेरे क़त्ल पे आप भी चुप हो,
अगला नम्बर आपका है।

-डॉ. नवाज़ देवबन्दी

विज्ञान एवं मानव स्वास्थ्य

- राजपाल सिंह
मो. 98767 10809

जिन पाठकों की आयु 50 वर्ष से अधिक है, उन्होंने ऐसे व्यक्तियों को अवश्य ही देखा होगा जिनके चेहरे दाग-धब्बों के साथ कुरूप होते थे। ऐसा एक विषाणुजनित रोग चेचक के कारण होता था। जिसको ज्ञान की कमी के कारण देवी माता का कोप समझा जाता था। इसी कारण इस रोग के रोगी के बारे में भी कहा जाता था कि उसके माता निकल आई है। इस रोग का शिकार होने वालों में से लगभग एक तिहाई मरीज मृत्यु का ग्रास बन जाते थे। जो बच जाते वे सारी उम्र कुरूप हुए चेहरे का मानसिक संताप झेलते थे। इसके अतिरिक्त उनमें से कईयों की एक-एक अथवा दोनों आंखों को भी नुकसान हो जाता था। पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह की एक आंख भी इसी रोग के कारण खराब हो गई थी। वर्तमान समय में ऐसा नहीं होता, क्योंकि विज्ञानी एडवर्ड जेनर ने 1796 में चेचक से बचाव के लिए टीका तैयार कर लिया था जो कि बचपन में ही लगा दिया जाता था। इस खोज के परिणाम-स्वरूप 1980 तक विज्ञान ने पूरे विश्व में से इस रोग का उन्मूलन कर दिया तथा करोड़ों लोग इस रोग का कष्ट झेलने से बच गये।

आज से कुछ दशक पूर्व यदि किसी को पागल कुत्ता काट लेता था तो उसकी मृत्यु निश्चित होती थी तथा यह मृत्यु अत्यन्त भयानक होती थी। रेबीज (Rabies) के विषाणु जब दिमाग में पहुंच जाते थे तो उसका कोई इलाज नहीं हो सकता था। पारिवारिक सदस्यों के लिए अपने एक सदस्य का अपनी आंखों के सामने ऐसे तड़प-तड़प कर मृत्यु की ओर अग्रसर होना कितना कष्टप्रद होता होगा? केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। परंतु आज पागल कुत्ते के काट जाने पर ऐसा दुखदायी अन्त नहीं होता जिस का श्रेय महान् विज्ञानी लुईस पास्कर के आविष्कार को जाता है। कई वर्ष पूर्व इसके ईलाज के लिए पेट में नाभि के गिर्द 14 इंजेक्शन लगते थे, जो कि काफी पीड़ादायक होते थे। फिर इन की संख्या कम हो कर 6 हुई और अब वैज्ञानिक उन्नति के कारण साधारण ढंग से ही 3-4 टीके लगते हैं।

इसी प्रकार पोलियो द्वारा टांगों से अपाहिज हुए व्यक्ति हम आज भी बैसाखियों, व्हील चेयरों अथवा हाथ-रिक्शों द्वारा चलते हुए देख सकते हैं। कुछ वर्ष पूर्व स्कूलों में प्रत्येक कक्षा में एक या दो बच्चे इस प्रकार का कष्ट झेलते मिल जाते थे परंतु अब ऐसा दृश्य बहुत कम देखने को मिलता है। अब यदि कोई बच्चा ऐसा कष्ट भोग रहा होता है तो उसका कारण कोई अन्य रोग या दुर्घटना अथवा कोई असावधानी होती है। यह भी विज्ञान की ही देन है कि इस रोग पर भी मनुष्य ने जॉन साक के द्वारा तैयार की गई पोलियो वैक्सीन के द्वारा नियंत्रण पा लिया है।

इनके अतिरिक्त अन्य भी बहुत से रोग हैं जिनको विज्ञान की सहायता द्वारा नियंत्रित किया गया, उन रोगों के चलते शरीर को होने वाले कष्ट को कम किया गया है। प्लेग से लाखों लोग मर जाते थे, परंतु अब इसे तुरंत नियंत्रित कर लिया जाता है। इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि तपेदिक से अनेकों प्रतिभावान व्यक्ति यौवन अवस्था में चल बसे थे। यह रोग भी अब लाईलाज नहीं रह गया है।

मध्यकाल में जब किसी का ऑप्रेशन करना पड़ जाता तो चार व्यक्ति उसकी टांगों व बाजू जकड कर रखते तथा फिर दर्द से कराह रहे उस व्यक्ति की चीर-फाड़ की जाती। इतना कष्ट झेलने के बाद के बचे रहने की संभावना कम ही होती थी, क्योंकि चीरफाड़ करने वाले औजार रोगाणु रहित न किये जाने के कारण घाव से इन्फेक्शन फैल जाता था। यह तो क्लोरोफार्म के आविष्कार के बाद में ही संभव हुआ कि व्यक्ति को बेहोश करके उसकी चीरफाड़ की जा सके। अब तो नये आविष्कारों के चलते व्यक्ति को बेहोश करने की भी आवश्यकता नहीं रहती बल्कि शरीर के संबंधित भाग को ही सुन्न कर लिया जाता है। इसी भांति टूटी हुई हड्डियों

को जोड़ने वाला कार्य भी अत्यंत पीड़ादायक होता था तथा एक्सय-रे की सुविधा न होने के कारण हड्डी सही स्थान पर जुड़ती भी नहीं थी।

रोगों एवं शारीरिक कष्टों से छुटकारा दिलाने में विज्ञान का क्या-क्या योगदान है, इस बारे में हजारों पन्ने लिखे जा सकते हैं, परंतु फिर भी इसके योगदान का जिक्र अधूरा रहेगा। इस लेख का मकसद भी मानव स्वास्थ्य एवं रोगों के ईलाज में विज्ञान के योगदान की सूची देना नहीं है, बल्कि इस के संबंध में पाई जाने वाली कुछ गलत धारणाओं का खण्डन करना तथा मानव जाति को स्वास्थ्य विज्ञान की उपलब्यिों को पूरा लाभ न मिल सकने के कारणों का विश्लेषण करना हैं क्योंकि विज्ञान की उपलब्धियों के लाभ समस्त मानव जाति तक न पहुंचने के कारण आजकल विज्ञान के योगदान पर ही प्रश्नचिन्ह लगाये जा रहे हैं।

उदाहरण के तौर पर प्रायः यह कहा जाता है कि पुरातन समय में बुजुर्ग अत्यन्त दीर्घायु भोगते थे। अब तो इन्सान की आयु कम ही रह गई है? पहले तो इस धारणा की तथ्यों के ऊपर परख-पड़ताल की जाए, क्योंकि भारतवर्ष में व्यक्ति द्वारा व्यतीत की जा रही औसत आयु के बारे में हमारे पास पिछले 100 वर्षों के तो बाकायदा आंकड़े उपलब्ध हैं, जो कि निम्नानुसार हैंः

वर्ष	औसत आयु
1901-1930	25 वर्ष
1930-50	30 वर्ष
1960	32 वर्ष
1970	45 वर्ष
1980	55 वर्ष
1990	60 वर्ष
2001	63.5 वर्ष
2018	68.8 वर्ष

(वर्ष 2018 के पंजाब के लोगों की औसत आयु 71.6 वर्ष है जो कि शेष भारत की औसत आयु से थोड़ी अधिक है।

अब सवाल पैदा होता है कि ऐसा प्रभाव क्यों बना कि पहले समय में लोग दीर्घायु होते थे तथा वे बीमार भी बहुत कत होते थे। वास्तव में प्राचीन समय में जन्म एवं आयु का कोई लेख-जोखा ही नहीं रखा जाता था। अधिकतर लोगों के 50 वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते बाल सफेद हो जाते थे, दृष्टि कमजोर हो जाती थी तथा दांत झड़ना शुरू हो जाते थे, अर्थात् दृष्टिगत रूप से वह काफी आयु वाला लगने लग जाता था। यदि और 20-30 वर्ष तक जीवित रहता था तो अगली पीढ़ी को ऐसा लगता था कि उसको तो इम इतने वर्षो से बुजुर्ग अवस्था में ही देखते चले आ रहे हैं, इसकी आयु तो अवश्य ही बहुत अधिक होगी। इसके अतिरिक्त पहले समय में विवाह भी छोटी सी आयु में हो जाते थे जिसके कारण 70 वर्ष की आयु तक जीवन व्यतीत करने वाला भी अपनी चौथी पीढ़ी तक देख जाता था। इस कारण से भी पुराने लोागें की आयु के बारे में अनुमान बहुत बढ़ा-चढ़ा कर लग जाता था।कुछेक राजा-महाराजाओं की आयु का सही रिकार्ड मिलता है, उससे इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है कि उन्होंने कोई लम्बी आयु नहीं भोगी थी। उदाहरण के तौर पर महाराजा रणजीत सिंह की आयु 58 वर्ष, उसके बड़े बेटे राजा खड़क सिंह की 39 वर्ष, छोटे बेटे दलीप सिंह की आयु 55 वर्ष तथा महारानी जिंदां की 45 वर्ष की आयु में ही मृत्यु हो गई थी। इसका प्रमुख कारण यही था कि उस समय चिकित्सा विज्ञान इतना विकसित नहीं था जिनसे शारीरिक व्याधियों पर काबू पाया जा सकता।

यह बात भी काफी हद तक उचित है कि पुराने समय में लोग बीमार कम पड़ते थे और वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद आजकल लोग रोगों के शिकार अधिक होते हैं। परंतु इस के पीछे के वास्तविक कारणों को जानना जरूरी है। इसके पीछे एक प्रमुख कारण यह है कि जीनज़ (Genes) में भिन्नताओं के कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में रोगों का मुकाबला करने की योग्यता भिन्न-भिन्न होती है। पुरातन समय में जो व्यक्ति रोगों का मुकाबला नहीं कर सकते थे, वे बचपन में ही खत्म हो जाते थे। जैसा कि 1950 में जन्म लेने वाले 1000 बच्चों में से 190 एक वर्ष के भीतर ही मर जाते थे, जिसे नवजात मृत्यु दर कहा जाता है। बहुत से अन्य 5 वर्ष की आयु तक नहीं पहुंच पाते थे; यानि कि एक-चौथाई बच्चे जीवन के प्रारम्भ में ही मौत का शिकार हो जाते। यौवनावस्था तक वही लोग पहुंच

पाते थे जिन में रोग प्रतिरोधक शक्ति अधिक होती थी।

इस प्रकार से मनुष्यों पर भी डार्विन के प्राकृतिक चुनाव का सिद्धांत लागू होता रहता था। परंतु अब चिकित्सा विज्ञान की प्रगति के कारण वे बच्चे भी जीवित रहते हैं, जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता (**Immunity**) बहुत कम होती है, अथवा जिनके शरीर के कुछ आवश्यक आंतरिक अंगों की कार्यकुशलता कम होती है। ऐसे बच्चे बड़े होकर बार-बार बीमार होते रहते हैं तथा अस्पतालों की भीड़ में वृद्धि होती रहती है। इसके अतिरिक्त प्रदूषण, शारीरिक श्रम की कमी तथा प्रकृति से टूटा हुआ जीवन-ढंग अपनाने के कारण भी रोगों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

यह विज्ञान ही है जो हमें सचेत करता है कि हमारे पर्यावरण में कौन से जहरीले तत्व घुलते जा रहे हैं, इनके हमारे स्वास्थ्य पर क्या-क्या दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं, इनके दुष्प्रभावों से कैसे बचाव किया जा सकता है आदि-आदि। विज्ञान के विरोधियों के द्वारा प्रायः यह कहा जाता है कि इन बातों के लिए विज्ञान ही तो उत्तरदायी है, जबकि वास्तविकता यह है कि इसके लिए वैज्ञानिक आविष्कारों को मुनाफे के लिए इस्तेमाल करने वाला धनाढ्य वर्ग उत्तरदायी है। यह वर्ग टेक्नॉलोजी का अनुचित तौर पर प्रयोग कर के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर के प्रकृतिक संतुलन को बिगाड़ता हैं, वातावरण में प्रदूषण उत्पन्न करता है, संचार के साधनों का आवश्यकता से अधिक इस्तेमाल करके जन साधारण में उपभोगता संस्कृति उत्पन्न कराता है। यह उपभोगतावादी संस्कृति मानसिक तनाव पैदा करती है जो आगे चलकर अनेकों शारीरिक व्याधियों के रूप में प्रकट होती है। इन साधारण कारणों के अतिरिक्त एक विशेष कारण चिकित्सा विज्ञान से संबंधित क्षेत्र में मानवी स्वास्थ्य के बजाय धन कमाने के उद्देश्य का प्रमुख हो जाना हैं बहुत से डाक्टरों के द्वारा अधिक रोगी भुगताने के चक्कर में पूरा निरीक्षण न करना, अनावश्यक परीक्षण एवं अनावश्यक दवाईयां देना, यहां तक कि अनावश्यक आप्रेशन करना, दवा कंपनियों द्वारा दवाओं के ऊंचे दाम, अस्पतालों के बेतहाशा खर्च, सरकार की ओर से सस्ते ईलाज की सुविधा न देना-इन बातों के वैज्ञानिक चिकित्सा ईलाज को लोगों की पहुंच से दूर किया है तथा वे चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति का कोई लाभ नहीं उठा सकते।

कुल मिलाकर विज्ञान ने रोगों का ईलाज ढूंढने में बहुत बड़ा योगदान डाला है। जिन रोगों का पक्का ईलाज नहीं ढूंढा जा सका, उनके भी कष्ट को कम करने में बहुत प्रगति हुई है तथा आशा है शीघ्र ही उन रोगों का पक्का ईलाज करना भी संभव हो सकेगा। विज्ञान हमें यह भी बताता है कि किस प्रकार खाद्य-पदार्थ खाने एवं पर्यावरण का सृजन करने से मनुष्य के रोगी हो सकने की नौबत नहीं आयेगी। यदि वैज्ञानिक उन्नति, सही जीवन ढंग एवं बेहतर सामाजिक व्यवस्था का सुमेल हो जाए तो मानवीय स्वास्थ्य से संबंधित अधिकतर समस्याएं तुरंत ही हल हो जायेंगी।

-हिन्दी अनुवाद - बलवन्त सिंह लेक्चरार

ब्रह्माण्ड में धरती जैसे और ग्रह मिलने की अधिक उम्मीद

लंदन 6 जून (भाषा)- पूरा विश्व आज कोरोना विषाणु जैसी महामारी से जूझ रहा है। आए दिन हजारों की संख्या में लोगों के मरने की खबरें आना किसी डरावने सपने से कम नहीं है। साथ ही लोगों को यही डर सताता रहता है कि आखिर जाएं तो जाएं कहां? लगभग हर जगह इस विषाणु का संक्रमण फैला हुआ है। ऐसे में एक ऐसे शोध का सामने आना जो मानवीय जीवन के लिए थोड़ा राहतदायक है। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि पृथ्वी जैसे और भी ग्रह मिल सकते हैं।।

हाल ही में ब्रिटेन में शोधकर्ताओं ने पाया है कि पृथ्वी जैसे ग्रह को उनकी उत्पत्ति के शुरुआती चरणों में ही खोज पाने की संभावना पहले की तुलना कहीं ज्यादा है। ब्रिटेन के विश्वविद्यालय के शोधकताओं के एक दल ने आकाश गंगा के नए तारों समूहों की खोज कर यह पता लगाने की कोशिश की है।

क्या भगवान एक अफवाह (र्‌यूमर) है?

-तस्लीमा नसरीन

मक्का से वैटिकन तक, कोविड-19 ने साबित कर दिया है कि इंसान पर संकट की घड़ी में भगवान मैदान छोड़ देते हैं।

मक्का में सब कुछ ठप है.. पोप का ईश्वर से संवाद स्थगित है.. ब्राह्मण पुजारी मंदिरों में प्रतिमाओं को मास्क लगा रहे हैं.. धर्म ने कोरोना वायरस से भयभीत इंसानों को असहाय छोड़ दिया है..

काबा का चक्कर लगाने के रिवाज 'तवाफ' से लेकर खुद उमरा (तीर्थयात्रा) तक, मक्का में सब कुछ ठप है.. मदीना में पैगंबर मोहम्मद के दफनाए जाने के स्थल की तीर्थयात्रा भी रोक लगा दी गई है.. संभव है, वार्षिक हज भी स्थगित कर दी जाए.. अनेकों मस्जिदें जुमे की नमाज स्थगित कर चुकी हैं.. कुवैत में विशेष अजानों में लोगों से घर पर ही इबादत करने का आग्रह किया जा रहा है.. मौलवी लोग लोगों को वायरस से बचाने के लिए मस्जिदों में जाकर अल्लाह से दुआ करने का दावा नहीं कर रहे..

ऐसा इसलिए है क्योंकि धर्म के ठेकेदारों को अच्छी तरह मालूम है कि अल्लाह हमें नोवेल कोरोनावायरस से बचाने नहीं आएंगे.. कोई बचा सकता है तो वे हैं वैज्ञानिक, जो टीके बनाने में, उपचार ढूंढने में व्यस्त हैं..

धर्म पर भरोसा करने वाले बेवकूफों को इस घटनाक्रम से सर्वाधिक विस्मित होना चाहिए, उन्हें सबसे अधिक सवाल पूछने चाहिए.. वे लोग जो कोई सवाल पूछे बिना झुंड बनाकर भेड़चाल की प्रवृति दिखाते हैं.. ना उन्हें ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण चाहिए, ना ही तार्किकता और मुक्त चिंतन में उनका भरोसा है.. क्या आज उन्हें ये बात नहीं कचोटती होगी कि जिन धार्मिक संस्थाओं को बीमारी के मद्देनजर उनकी सहायता के लिए आगे आना चाहिए था, वे अपने दरवाजे बंद कर चुके हैं? क्या धार्मिक संस्थाओं का असली मकसद आम लोगों की मदद करना नहीं है?

बहुतों के लिए भगवान संरक्षक के समान हैं, और सलामती के लिए वे उनकी सालों भर पूजा करते हैं.. लेकिन जब मानवता संकट में होती है, तो आमतौर पर सबसे पहले मैदान छोड़ने वाले भगवान ही होते हैं.. वैटिकन से लेकर मंदिरों तक, भगवान मैदान छोड़ रहे हैं

कोरोनावायरस कैथोलिकों के पवित्रतम तीर्थ वैटिकन में भी पाया जा चुका है.. माना जाता है कि पोप भगवान से संवाद कर सकते हैं.. तो फिर वे इस समय ऐसा कर क्यों नहीं रहे? यहां तक कि वह दैव संपर्क से किसी चमत्कारी दवा की जानकारी तक ला पाने में असमर्थ हैं.. इसके बजाय वायरस का प्रकोप फैलने के डर से वैटिकन की हालत खराब है और पोप जनता के सामने उपस्थित होने से भी बच रहे हैं..

वैटिकन में अनेक ईसाई धार्मिक त्यौहार मनाए जाते हैं.. पर होली वीक, गुडफ्राइडे और ईस्टर समेत सारे भावी कार्यक्रम रद्द कर दिए गए हैं और धार्मिक सभाओं पर रोक लगा दी गई है.. हिंदू मंदिरों के ब्राह्मण पुजारी मुंह पर मास्क डाले घूम रहे हैं.. इतना ही नहीं, कुछ मंदिरों में तो देवी-देवताओं के चेहरों पर भी मास्क लगा दिए गए हैं.. हिंदू महासभा ने गोमूत्र पार्टी का आयोजन किया है क्योंकि उसे लगता है कि गोमूत्र का सेवन कोविड-19 से रक्षा कर सकता है.. कुछ लोग शरीर पर गाय का गोबर पोत रहे हैं, और उससे नहा तक रहे हैं क्योंकि वे गोबर को वायरस का प्रतिरोधक मानते हैं.. धर्म और अंधविश्वास आमतौर पर एक-दूसरे के पूरक होते हैं.. तारापीठ बंद है, वहां फूल, आशीर्वाद और चरणामृत लेने वालों की भीड़ नहीं है.. तिरुपति और शिरडी साई बाबा के मंदिर भी पाबंदियों के घेरे में हैं.. शाम की पूजा और आरती को बड़ी स्क्रीनों पर दिखाया जा रहा है..

क्या ये सब अविश्वसनीय नहीं है? तो फिर भगवान कहां हैं? क्या धार्मिक लोगों के मन में ये सवाल नहीं उठता?

धार्मिक स्थलों का क्या मतलब है?

सरकारों को तमाम धार्मिक संस्थाओं को दिए जाने वाले अनुदान और सब्सिडी पर रोक लगानी चाहिए.. दुनिया भर के पोप, पुजारी, मौलवी और अन्य धार्मिक नेता लोगों की गाढ़ी कमाई खाते हैं, लेकिन जरूरत के समय वे उनके किसी काम का नहीं निकलते हैं.. इसके बजाय वे लोगों को झूठ और अवैज्ञानिक तथ्यों की घुट्टी पिलाते हैं, बच्चों के साथ यौन दुर्व्यवहार करते हैं और समय-समय पर स्त्री-विरोधी फतवे जारी करते हैं.. भला ऐसे संस्थान किस काम के हैं? इन सारे धर्मो ने नुकसान पहुंचाने के अलावा सदियों से और किया ही क्या है? महिलाओं के निरंतर उत्पीड़न, दंगे, विभाजन, खून-खराबे और नफरत फैलाने के अलावा इनका और क्या काम रहा है?

धार्मिक स्थलों को संग्रहालयों, विज्ञान अकादमियों, प्रयोगशालाओं और कला विद्यालयों में बदल दिया जाना चाहिए ताकि उनका जनता की भलाई के काम में इस्तेमाल हो सके.. प्रकृति ने बार-बार दिखलाया है और विज्ञान ने बार-बार साबित किया है कि कोई भगवान नहीं है और धर्म एक परिकथा मात्र है.. हालांकि बहुत से लोग, विशेष रूप से दुनिया के अधिक विकसित हिस्सों में, खुद को धर्म के चंगुल से निकालने में कामयाब रहे हैं, पर जहां कहीं भी गरीबी है, सामाजिक असमानताएं हैं, स्त्री-विरोध और बर्बरता है, वहां भगवान और पूजा-पाठ पर अतिनिर्भरता देखी जा सकती है..

भगवान के लिए, विज्ञान को मानें..

अपने विकासवाद के सिद्धांत के जरिए भगवान के अस्तित्व को चार्ल्स डार्विन द्वारा नकारे जाने के लगभग 160 साल बीत चुके हैं.. मनुष्य किसी विधाता द्वारा निर्मित नहीं हैं, बल्कि उसका वानरों से विकास हुआ है.. डार्विन से बहुत पहले 16वीं शताब्दी में ही गैलीलियो और उनके पूर्ववर्ती कॉपरनिकस ने अंतरिक्ष एवं ब्रह्मांड की बाइबिल में वर्णित धारणाओं को गलत साबित कर दिया था.. इसके बावजूद, दुनिया में अधिकांश लोग परमात्मा को मानते रहे हैं.. उनके अवश्य भगवान अवश्य ही बने हुए हैं, उनके अस्तित्व का कोई प्रमाण आज तक नहीं मिला है, लेकिन अंधविश्वास सतत् कायम रहा..और अब जब कोरोना वायरस महामारी एक व्यक्ति से दूसरे में और एक देश से दूसरे में फैलता जा रहा है, अधिकांश धार्मिक सभाएं और समारोह स्थगित कर दिए गए हैं.. अस्वस्थता और बीमारियों से सुरक्षा पाने के लिए आमतौर पर अपने आस-पास के मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों और अन्य पूजा स्थलों की शरण में जाते रहे लोगों के लिए इस समय अस्पतालों और क्वारेंटाइन केंद्रों के अलावा और कोई ठौर नहीं बचा है..

इसलिए आज बिल्कुल स्पष्ट हो चुका तथ्य यह कि रोगों का उपचार अल्लाह, देवता या भगवान नहीं करते, बल्कि वैज्ञानिक हमें उनसे निजात दिलाते हैं.. मनुष्यों की रक्षा अलौकिक शक्तियां नहीं करतीं, बल्कि उन्हें अन्य मनुष्य ही बचाते हैं.. धार्मिक लोगों को इस समय अपने-अपने देवताओं की कृपा का नहीं, बल्कि एक टीके का इंतजार है..

धार्मिक पागलपन से छुटकारा पाने और तार्किकता को गले लगाने का भला इससे बढ़िया वक्त क्या होगा..।

पुजारी ने मंदिर में दी मानव बलि, बोला-कोरोना वायरस खत्म करने के लिए भगवान ने दिया था आदेश।

कोरोना वायरस को खत्म करने ओडिशा के कटक जिले में पुजारी ने मंदिर में मानव बलि दी। बोला-कोरोना वायरस खत्म करने के लिए भगवान ने सपने में आकर दिया था आदेश।

घटना नरसिंहपुरा थाना क्षेत्र के बाहुड़ा गांव के ब्राह्मणी देवी मंदिर में बुधवार रात हुई। मृतक की पहचान 52 वर्षीय सरोज कुमार प्रधान के तौर पर हुई है, अपना जुर्म कबूल करते हुए पुजारी ने कहा कि उसने देवताओं का आह्वान कर कोरोना वायरस महामारी को खत्म करने के लिए मंदिर के अंदर एक 'मानव बलि' दी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक पुजारी ने अनुष्ठान करने के लिए एक स्थानी युवक का सिर काटकर उसे मौत के घाट उतार दिया। आरोपी पुजारी की पहचान संसारी ओझा के रूप में हुई है जो बांधा मां बुद्ध ब्राह्मणी देवी मंदिर का पुजारी है। बाद में उसने अपराध करने के तुरंत बाद बुधवार राात पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करा दिया ।

-डॉ. दिनोश मिश्र

महान् विज्ञानी चार्ल्स डार्विन

-डा. हरीश मल्होत्रा, ब्रमिंघम
मो. 00447763013424

चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन के सिद्धांत 'औरिजन ऑफ स्पीसीज़' (Orogin of Species) ने जितनी बहस दुनिया में छेड़ी उतनी अभी तक किसी भी सिद्धांत, पुस्तक पर नहीं हुई। यह बहस आज तक जारी है तथा मुझे ऐसा लगता है कि पुश्तों तक जारी रहेगी। डॉर्विन की पुस्तक 'ऑरिजन ऑफ स्पीसिज वर्ष 1859 में प्रकाशित हुई थी, जिसने धार्मिक अदारों का सिंहासन हिला कर रख दिया था तथा वह सिंहासन आज तक डांवांडोल है। जो धर्मिक पुस्तकें एवं 'ईश्वर को पहुंचे' लोग ये दावे करते थे कि मानव को ईश्वर ने अमुक दिन पैदा किया था, का खोखलापन डार्विन ने जग जाहिर कर दिया।

चार्ल्स डार्विन का जन्म ब्रिटेन के एक शहर श्रूज़बरी में 12 फरवरी 1809 ई में हुआ था। डार्विन के पिता पेशे से एक डॉक्टर थे तथा धन-दौलत से सम्पन्न थे। डार्विन के पांच अन्य भाई-बहन थे तथा डार्विन पांचवें नंबर पर थे। डार्विन के दादा जी एक प्रसिद्ध कवि थे ईरास्मस डार्विन (Erasmus Darwin) । डार्विन की आयु अभी 8 वर्ष ही थी कि उनकी मां सुजान विजवुड (1765-1817) उसे सदा के लिए अलविदा कह गई। डार्विन का पालन-पोषण उसकी बहनों एवं घर में राखी गई नौकरानियों ने किया। उनकी प्रारम्भिक पढ़ाई श्रूज़बरी के स्कूल में हुई तथा उन्हें होस्टल में रखा गया।

अक्तूबर 1825 में चार्ल्स अपने भाई ईरास्मस के साथ एडनब्रा विश्वविद्यालय में डॉक्टरी की पढ़ाई करने के लिए चला गया। चार्ल्स ने समुद्र में रहने वाले, रीढ़धारी जंतुओं की रॉबर्ट ग्रांट के साथ मिल कर खोज की। तथा उनका नाम सर्वप्रथम ग्रांट के एक लेख में प्रकाशित हुआ।

कोमल हृदय वाले चार्ल्स को मेडिकल की पढ़ाई इस कारण से अच्छी नहीं लगी कि वह लोगों का दुख-दर्द एवं बहता हुआ रक्त नहीं देख सकता था। चार्ल्स के डॉक्टर पिता ने यह फैसला किया कि उसको पादरी बना दिया जाए। चार्ल्स भी इस पढ़ाई के लिए इस कारण से सहमत हो गया कि वह अपना, 'प्रकृति की खोज करने का शौक' पूर्ण करने के लिए स्वतंत्र रहेगा। पादरी की पढ़ाई के लिए मन बनाने से पूर्व चार्ल्स ने ईसाई धर्म के बारे में अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया ताकि उसे उस के बारे में जानकारी मिल सके। पादरी बनने के लिए यह शर्त थी कि वह इंग्लैंड की यूनिवर्सिटी से बी.ए. की डिग्री उत्तीर्ण करे।

इसी कारण चार्ल्स ने 15 अक्तूबर 1827 को क्राईस्ट कालेज, कैम्ब्रिज में दाखिला ले लिया। इस पढ़ाई के लिए ग्रीक भाषा का ज्ञान आवश्यक था तथा जो ग्रीक भाषा चार्ल्स ने छोटी उम्र में पढ़ी थी, उसे अब वह भूल चुका था। इस कमी को पूर्ण करने के लिए चार्ल्स के लिए घर पर ही ट्यूशन का प्रबन्ध किया गयास तथा यह ही कारण था कि चार्ल्स 26 जनवरी 1828 से पूर्व कैम्ब्रिज नहीं आया था तेज दिमाग चार्ल्स ने यूनिवर्सिटी के सीनेट हाऊस से 26 फरवरी 1828 को ग्रीक में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। अब कालेज के होस्टल के सभी कमरे भर चुके थे तथा चार्ल्स को कालेज से बाहर एक तंबाकू विक्रेता की दुकान पर रहना पड़ा।

चार्ल्स का मन प्राकृतिक परिघटनाओं में तल्लीन होने के कारण वह कभी भी अग्रणी विद्यार्थियों में से नहीं रहा। वह अपना अधिकतर समय कीट-पतंगों को एकत्र करने में तथा उनके बारे में जानने में व्यतीत करता था। यही कारण था कि वह बॉटनी अर्थात् 'वनस्पति विज्ञान' के प्रोफेसर जॉन स्टीवन हिंसलो का शिष्य बन गया। प्रोफेसर की मित्रता ने चार्ल्स को प्रकृतिक परिघटनाओं क्रमों के बारे में ढेर सारी जानकारी प्रदान की। चार्ल्स अपनी पढ़ाई भी कर रहा था तथा बी.ए. की डिग्री उसने 1831 में उत्तीर्ण कर ली। इसके पश्चात् कुछ समय के लिए प्रोफेसर एडम मिज़विक ने उन्हें भूमि की परतों के बारे में बहुत कुछ समझाया तथा वह उस

प्रोफेसर के साथ नार्थ वेल्ज़ की यात्रा पर चला गया। परंतु असली कहानी तो उस समय रंग लाई जब चार्ल्स के मित्र एवं प्रोफेसर जॉन स्टीवन हिंसलो ने उसे मना लिया कि अन्वेषण के मार्ग पर जा रहे ेसमुद्री जहाज वाले अवसर को गंवाया न जाए। यह H.MS. BEAGLE H.M.S. नामक एक जहाजी ट्रिप ने चार्ल्स का जीवन तो बदला ही, बल्कि चार्ल्स डार्विन द्वारा सूक्ष्म ढंग से की गई खोज ने विश्व के ज्ञान को ऐसी दिशा प्रदान की कि विश्व के चिन्तन ने एक अलग गति अपना ली। यह ट्रिप पांच वर्षों तक चलता रहा। इस समय चार्ल्स डार्विन ने खास तौर पर दक्षिणी अमेरिका के गलापैगोस द्वीप एवं प्रशांत महासागर के द्वीपों की यात्रा के समय भूमि की परतों एवं जानवरों के बारे में खोजें की। वह अपनी बातों को अपनी डायरी में लिखता रहा तथा अपने तजुर्बो का भी विवरण देता रहा। यह उसकी रोजमर्रा की एक डायरी थी जिसने 1839 में एक प्रसिद्ध पुस्तक Journal of Research को जन्म दिया। इसी पुस्तक का नाम 1905 को Voyuage of the Beagle रखा गया। चार्ल्स ने भूकम्प, आंधियां, तूफान एवं बरसातें अपनी इस खोजपूर्ण यात्रा के दौरान देखे व सहे थे। इन प्राकृतिक परिघटनाओं का प्रभाव भी देखा था कि किस प्रकार से पानी के साथ भूमि में कटाव हो जाता है। भूकम्प के किस प्रकार से उथल-पुथल हो जाती है तथा इन बातों का जीव-जंतुओं की बनावट एवं उनके जीवित रहने के संघर्ष पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है। चार्ल्स ने प्राकृतिक परिघटनाओं द्वारा हो रहे परिवर्तनों के बारे में अत्यन्त बारीकी के साथ जांच पड़ताल की तथा उनसे तर्कसंगत परिणाम निकाले। दैवी शक्तियों एवं दैवीय शक्तियों के दावेदारों के विरुद्ध यह एक बहुत बड़ी ललकार सिद्ध हुई जिसने उनको बौखला दिया तथा उनकी चिंतन करने वाली खोपड़ियों को उल्टी दिशा में घुमा दिया। उनके धौंस पर यह एक भयंकर चोट थी।

चार्ल्स ने पांच खण्डों की एक अन्य पुस्तक The Zoology of the Voyage of H.M.S.Beagle **(1838-43)** लिख दी जिसमें उसने कीट-पतंगों के बाबत लिखा। चार्ल्स ने जमीन को खोद कर मर चुके जीव जंतुओं के बारे में खोज की तथा अनेक सवाल खड़े किये कि इतना समय पूर्व मर चुके जीव वर्तमान समय के जीवों के साथ क्यों मेल खाते हैं? विश्व में इतने जीव-जंतु, जानवर क्यों हैं तथा ये भिन्न-भिन्न क्यों हैं तथा आपस में मिलते भी क्यों हैं? यदि 'ईश्वर' ने ही सभी कुछ पैदा किया है तो भिन्न-भिन्न जंगलों में रहने वाले जानवर भिन्न-भिन्न क्यों हैं, जबकि वहां का वातावरण एक जैसा ही है? चार्ल्स ने अपनी खोज जारी रखी तथा इन उठ रहे सवालों का जवाब तर्क के आधार पर सोचने लगा। धीरे-धीरे बात साफ होती गई कि प्रत्येक वस्तु बदलती रहती है तथा परिवर्तन ही जीवन है। यह समय एवं प्राकृतिक परिघटनाओं के साथ-साथ वातावरण के परिवर्तन के साथ ही बदलती रहती है। यह परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा किसी भी 'दिव्य शक्ति' का इसमें कोई रोल नहीं है। इन बातों का संकेत चार्ल्स के बाबा कवि इरास्मस डार्विन एवं महान् फ्रांसीसी वैज्ञानिक ज़ीन लामार्क ने पहले कर दिया था। डार्विन का सिद्धांत स्पष्ट हो रहा था कि यह समस्त जीवन का प्रारम्भ एक कोशकीय जीव से हुआ है तथा वह ही एक ऐसा वट वृक्ष है जिससे शाखाएं फूटीं और उन शाखाओं से आगे शाखाएं फूटती रहीं। जीवनधारा इसी प्रकार ही चली थी और चलती जा रही है। जो पौधे एवं जीव चार्ल्स ने इस पांच वर्षीय यात्रा के दौरान एकत्र किये थे, उनमें से कई ऐसे थे जो अद्वितीय थे। चार्ल्स इस विषय पर गंभीरता के साथ चिन्तन करने लगा तथा परिणाम निकालने लगा कि जीव एवं पौधे धीरे-धीरे बदलते रहते हैं और समय, वातावरण के अनुसार सदैव एक जैसे नहीं रहते। डार्विन इस नतीजे पर भी पहुंचा कि प्राकृतिक परिघटनाओं से जीवन जंतुओं एवं पौधों की बहुतायत उजड़ती भी रहती है तथा वे ही बचे रहते हैं जो इन परिघटनाओं से बचे रह सकते हों। कमजोर जीव जन्तु एवं पौधे मर जाते हैं। जनसंख्या की बहुतायत पर अंकुश लगाने का यह प्राकृतिक ढंग है। इस जीवित रहने के संघर्ष में 'प्राकृतिक चुनाव' (Natural Selection) ही सामने आती है। यही कारण है कि इस परिघटना में से जीवित निकलने वाले जीव-जन्तु एवं पौधे आगे जीवन की वृद्धि करते हैं और मर चुके जीवों की नस्लें धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं।

डार्विन की खोजों ने यह भी साबित किया कि किस प्रकार से नर जानवर, जीव-जंतु, पक्षी एवं पौधे अपनी नस्ल की और वृद्धि करने के लिए परस्पर मुकाबला करते हैं तथा मादा पर अपना प्रभाव डाल कर मेल करते हैं।

चार्ल्स डार्विन ने अपने समय में मिलने वाली विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का गहन अध्ययन करके समझने का प्रयत्न किया तथा अधिकतर समय एकांत में व्यतीत किया। उनके अधिकतर मित्र प्रतिगामी विचारों के साथ सहमत थे, परंतु चार्ल्स ने स्वतन्त्र चिंतन के साथ नये-नये सिद्धांतों को जन्म दिया जिनके बारे में उस समय अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता था। चार्ल्स ने अपने विचारों को स्वयं तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि अपने परिचितों एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ भी साझा किया। चार्ल्स डार्विन अब पूर्ण कालिक तौर पर एक खोजकर्ता के रूप में कार्य करने लगा। चार्ल्स ने 1839 में ऐसा विज़वुड के साथ शादी रचा ली। अब तक चार्ल्स डार्विन अपनी खोज में प्रसिद्ध हो चुका था। चार्ल्स ने अत्यन्त ध्यानपूर्वक ढंग से अपनी खोज पर कार्य किया तथा कई शोधपत्र भी लिखे। अन्त में डार्विन की पुस्तक On The Origin of Species ने 1859 में उथल-पुथल मचा कर रख दी। यद्यपि डार्विन 15-20 वर्ष अपनी खोज के आधार पर लिखे गये लेखों के द्वारा वैज्ञानिकों को सब कुछ बताता रहा था परंतु अभी भी कई वैज्ञानिक ऐसे थे जिन्होंने उसके सिद्धांत को मानने से इनकार कर दिया था। चार्ल्स से पूर्व भी कुछ पुस्तकें अन्य विद्वानों की प्रकाशित हो चुकी थीं, परंतु जिस स्पष्टता एवं तर्कों के साथ प्रमाण प्रस्तुत करके चार्ल्स ने बात स्पष्ट की थी इसकी मिसाल अन्य और कोई नहीं थी। चार्ल्स की खोज पर टी.एच. हक्सले, जॉन टईडल एवं हुकर ने उसकी प्रौढ़ता कर दी तथा डार्विन की खोजों को लगभग सभी वैज्ञानिकों 1879 तक मान लिया गया था।

चार्ल्स डार्विन ने यह साबित कर दिया था कि इस पदार्थवादी दुनिया में जो भी घटनाएं घटित होती हैं वे किसी दैवी शक्ति की मर्जी से नहीं बल्कि प्राकृतिक नियमों के अनुसार घटित होती हैं। डार्विन के इस सिद्धांत ने मनोविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, दर्शन एवं अन्य ढेर सी विज्ञानों के अतिरिक्त साहित्य पर भी गहरा प्रभाव डाला। लोगों की सोच को एक अलग दृष्टिकोण से देखने का मार्ग डार्विन ने ही खोला। यही कारण था कि डार्विन के लेख प्रत्येक वर्ग के लोगों द्वारा पढ़े गये तथा वर्तमान दौर में भी पढ़े जा रहे हैं। कई लोग डार्विन के सिद्धांतों से असहत होकर अपने अटकल पच्चू ज्ञान द्वारा बात को स्पष्ट करने की कोशिश करने लगे तथा आज तक भी कर रहे हैं। मजेदार बात यह है कि लोग अभी तक डार्विन के सिद्धांतों पर लड़ झगड़ रहे हैं, और तर्क वितर्क कर रहे हैं तथा शायद डार्विन के ही ऐसे लेख हैं जिन्हें कोई भुला नहीं सकता और न ही भुला सकेगा।

चार्ल्स डार्विन ने दो बातों को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में उभारने का यत्न किया हैः प्रथम, कि जीवित रहना कितना कठिन है तथा केवल वे ही जीवन जी सकते हैं जो कष्टों एवं मुसीबतों का मुकाबला करके बच निकलते हैं। दूसरा, ये बच निकलने वाले कई बार तो अत्यंत बुद्धिमता से तथा कई बार मौके के मुताबिक स्वयं को ढाल कर बच जाते हैं। इसी सिद्धांत को ही 'प्रकृतिक चयन का सिद्धांत' कहा जाता है।

यद्यपि चार्ल्स डार्विन के सिद्धांतों को घृणा करने वालों की कमी नहीं थी परंतु दूसरी उसको प्रेम करने वालों की संख्या भी कम नहीं थी। उनको मैडलों, डिग्रियों । सम्मानतथा अनेक सोसायटियों की सदस्यता प्रदान की गई। विज्ञान की दुनिया में कोई ऐसा मान-सम्मान होगा जो चार्ल्स डार्विन को न दिया गया हो। यह बात प्रसन्नता दायक है, अन्यथा अधिकतर महामानवों को उनके जीवनकाल में कष्टों एवं नफरतों के साथ दुत्कारा जाता रहा है तथा उनके देहांत के कई वर्षो के पश्चात उनके कार्यो को उचित सम्मान मिला।

चार्ल्स डार्विन के बारे में आज तक अनेक अनुचित कहानियां भी प्रचारित की जाती हैं कि जब वह चारपाई पर पड़ा अंतिम सांसें गिन रहा था तब उसने अपनी खोजों पर पछतावा किया था तथा ईसाई धर्म में अपनी आस्था जताई थी। ऐसा मिथ्या प्रचार वे लोग ही करते हैं जो चार्ल्स डार्विन के सिद्धांतों को मानने से इनकार करते हैं, क्योंकि इससे उनका धर्म के नाम पर चल रहा धंधा चौपट हो जाता है। डार्विन की मृत्यु भी कोई रहस्मयी चीज

नहीं है। उस समय उसके आसपास बैठे रिश्तेदारों ने चार्ल्स के अंतिम समय के बारे में बहुत से लेख लिखे हैं तथा स्पष्ट किया है कि चार्ल्स अपने अंतिम सांस तक अपने सिद्धांतों पर अडिग रहा था।

चार्ल्स डार्विन एक अतिप्रिय इंसान थे तथा वे शांति के पुंज थे। वे अत्यंत दयालु कोमल हृदयी, हंसी-मजाक वाले तथा अंहकार से कोसों दूर रहने वाले व्यक्ति थे। जबकि विश्व के चोटी के वैज्ञानिकों में उनका नाम सम्मिलित था तथा उनके साथ उनका उठना बैठना था। वे अपने कार्य में हमेशा व्यस्त रहते थे। इस कारण कुछ वर्ष लंदन में रहने के पश्चात वे सबसे दूर एक शांत स्थान डाऊन में समुद्र के किनारे रहने के लिए चले गये। वे शोर-शराबे से दूर इस कारण भी रहना चाहते थे ताकि स्वतंत्रता के साथ अपने ख्यालों में मस्त रह कर चिंतन कर सकें। दूसरी बात यह भी थी कि उनके स्वास्थ्य ने उनका कभी भी साथ न दिया। उनकी आयु जब जलगभग 33 वर्ष थी तब से ही उनका स्वास्थ्य खराब रहने लग गया था, जो ताउम्र उनके लिए दुखदायी बना रहा। शायद ही उनके जीवन का कोई ऐसा दिन होगा जब उन्होंने स्वयं को पूर्णतः स्वस्थ समझा हो। परंतु वे अपनी बुरी सेहत के बारे में हमेशा संतोष नहीं रखते थे। चार्ल्स ने उस समय भी स्वास्थ्य के बारे में हौसला नहीं छोड़ा था जब वे अपनी खोजों के दौरान पांच वर्षों के लिए कठिन समुद्री यात्रा पर निकल पड़े थे। उनके पेट में सी-सिक्नेस (Sea-Sickness) चक्कर बंधा रहता था और वे बीमार ही रहते परंतु उनकी सोच हमेशा स्वस्थ रही। यद्यपि उनके पिता जीन ने उनकी विचित्र बातों के बारे में एक टिप्पणी भी की थी कि 'चार्स्स इतना विकृत बुद्धि वाला है कि यदि उसके दिमाग में सुराख करके बुद्धि डाली जाए तो यह बुद्धिमान नहीं बन सकेगा।' मृदुभाषी, शांतचित रहने वाले चार्ल्स धैर्य-पूर्वक अपना कष्ट तो सह सकते थे परंतु जानवरों एवं बच्चों के ऊपर हो रहे अत्याचार को देख कर वे आपे से बाहर हो जाते थे। चार्ल्स अपने बच्चों को अत्याधिक प्रेम करते थे तथा उनके बच्चे प्रायः उनके अध्ययन कक्ष में चुपचाप चले जाते थे परंतु कभी भी उनकी किसी चीज को आगे पीछे न करते तथा न ही वे उनको

जादू टोने के सन्देह में महिला प्रताड़ना के दो मामले.

पिछले दिनों जादू टोने के सन्देह में महिला प्रताड़ना के दो मामले सामने आए है, जिनमें से एक में जांजगीर चाम्पा में एक महिला के साथ मारपीट की गई है वहीं दुर्ग जिले के मामले में एक महिला ने प्रताड़ना से तंग आकर फाँसी लगा कर आत्महत्या कर ली है,

जांजगीर चाम्पा के ग्राम मुनुनद में बच्चन बाई कश्यप नामक महिला पर जादू टोने करने का शक उसके पड़ोसियों द्वारा किया जाता था, तथा उसे बारघ्घ्बार तंग किया जाता था। हाल में ही उक्त महिला के घर में घुसकर उसके पड़ोसियों द्वारा लाठी डंडे से हमला किया गया, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गयी, महिला को अस्पताल में भर्ती किया गया तथा मामले की पुलिस में रिपोर्ट की गई,

वही दूसरी और दुर्ग भिलाई के ग्राम रीवागहन का एक मामला सामने आया है जिसमे कीर्तन बाई साहू नामक महिला को जादू टोने की आशंका में ग्रामीणों द्वारा प्रताड़ित किया जाता था, जिससे वह महिला शारीरिक एवं मानसिक रूप से विचलित हो गयी थी, तथा बार-बार प्रताड़ना एवं बदनामी के कारण उसने गांव में फाँसी लगा आत्महत्या कर ली। उसने अपने सुसाइड नोट में 3 ग्रामीणों के नाम का भी उल्लेख किया है। रानी तराई थाने में इस मामले की रिपोर्ट भी की गई है.

जादू टोने का कोई अस्तित्व नहीं है, इसलिए जादू टोने से किसी भी व्यक्ति को बीमार करने,नुकसान पहुंचाने की धारणा मिथ्या है, इस अंधविश्वास के कारण किसी भी महिला को प्रताड़ित करना अनुचित, गैरकानूनी है. कोई महिला टोनही नहीं होती. टोनही के सन्देह में हुई प्रताड़ना के लिए दोषी व्यक्तियों पर कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए. समिति शीघ्र दोनो गांव में जाकर ग्रामीणों से मिलकर समझाइश देगी ताकि, वे अंधविश्वास में पड़कर कानून अपने हाथों में न लें.

डॉ दिनेश मिश्र ,
अध्यक्ष अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति

गॉड इज़ नॉट ग्रेट

***(21वीं सदी में दुनिया में जो पांच दस सबसे महान् नास्तिक विचारक पैदा हुए हैं, उनमें से रिचर्ड डॉकिंस* के बाद सबसे बड़ा नाम आता है, क्रिस्टोफर हीचौन का।)**

क्रिस्टोफर हीचौन ने 2007 में 'गॉड इज नॉट ग्रेट' नाम की किताब लिखी और उस किताब में उन्होंने सैकड़ों सबूत दे कर यह साबित करने की प्रयास किया, कि पिछले 5000 साल में मानव जाति पर जितने भी महा भयंकर संकट आए हैं उस दौरान दुनिया के किसी भी ईश्वर, अल्लाह या गॉड ने मानव जाति की कोई मदद नहीं की!!

मानव जाति में जो मुश्किल से 5 प्रतिशत बुद्धिमान लोग हैं जिन्होंने मानव जाति को हर संकट के समय कोई न कोई रास्ता ढूंढ कर दिया है ।

लेकिन धर्म के नाम पर जो लोग अपना पेट पालते हैं और अपने आप को धर्म का ठेकेदार और ईश्वर का प्रतिनिधि समझते हैं, उन लोगों ने मानव जाति के जो 95 प्रतिशत लोग है, और जो जन्मजात बुद्धिहीन है, और जो किसी न किसी काल्पनिक सहारे के बगैर जी ही नहीं सकते, ऐसे लोगों को बार-बार धर्म ने अपने जाल में जकड़ कर रखा है।

दुर्भाग्य से आज क्रिस्टोफर हीचौन हमारे बीच नहीं है, लेकिन कोरोना वायरस ने फिर एक बार क्रिस्टोफर हीचौन को सही साबित किया है। और यह भी साबित किया है कि कोरोना वायरस प्रकृति ने पैदा किया है, इंसान ने पैदा किए हुए ईश्वर, गॉड और अल्लाह उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। सिर्फ विज्ञान है जो उसे आज कंट्रोल करेगा।

सभी धर्मो के ठेकेदारों का यह सनातन दावा है कि, ईश्वर इस ब्रह्मांड का निर्माता है और वह सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ और हर जगह पर मौजूद है और उसकी मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता है ।

दुनिया का सबसे बड़ा धर्म क्रिश्चन है और पूरी दुनिया के क्रिश्चन लोगों का सबसे बड़ा गुरु इटली के रोम शहर में रहता है, जिसे वेटिकन सिटी कहा जाता है। आजकल कोरोना के डर से इटली के सभी चर्च और वेटिकन सिटी लॉकडाउन है और उनका सबसे बड़ा धर्म गुरु यानी पोप कहीं छुप कर बैठा है।

दुनिया का सेकंड नंबर का धर्म इस्लाम है और दुनिया भर में फैले मुसलमानों की सबसे पवित्र भूमि और पवित्र धर्मस्थल मक्का, मदीना है, वह भी आज पूरी तरह से बंद है, और दुनिया के तीसरे नंबर का धर्म यानी हिंदू धर्म और उसके सभी प्रसिद्ध धर्मस्थल जैसे कि चारों धाम, बालाजी, मंदिर, शिर्डी के साईं बाबा का मंदिर, जम्मू के वैष्णो देवी का मंदिर और बहुत सारे छोटे-मोटे मंदिर आज लॉक डाऊन हैं। दुनिया के किसी भी धर्म में और किसी भी भगवान में इतनी ताकत नहीं है कि वह कोरोना नाम के एक मामूली कीटाणु को रोक सकें।

कोरोना वायरस ने फिर एक बार साबित किया है की ईश्वर, गॉड या अल्लाह यह सब पाखंड हैं। धर्म के ठेकेदारों ने बुद्धिहीन लोगों के अज्ञान और डर का फायदा उठाकर उनका शोषण करने के लिए दुनिया भर में बड़े-बड़े धर्मस्थल बना रखे हैं। और हजारों सालों से भोली-भाली जनता के अज्ञान और डर का नाजायज फायदा उठा रहे हैं और उनका शोषण कर रहे हैं।

जब हजारों लोग मुंबई से शिरडी तक बिना चप्पल पहने हुए पैदल जाते हैं और साईं बाबा को अच्छी बीवी, अच्छी नौकरी, अच्छी संतान और धंधे मे मुनाफा मांगते हैं और समझते हैं कि साईं बाबा उनको यह सब कुछ दे देगा। यदि साईं बाबा या बालाजी या वैष्णो देवी या अजमेर शरीफ या फिर मक्का मदीना और वेटिकन सिटी अपने भक्तों की ऐसी छोटी मोटी मांगे और मुरादें पूरी करते हैं और मानव जाति का हमेशा हित और सुख देखते हैं, तो फिर आज सारे के सारे छुपकर क्यों बैठे हैं? कोरोना में ज्यादा ताकत है या फिर ईश्वर, अल्लाह या गॉड में ज्यादा ताकत है?

विज्ञान कहता है 14 बिलियन साल पहले बिग बैंग के माध्यम से इस ब्रह्माण्ड का धीरे-धीरे विकास हुआ है। और लगभग 5 बिलियन ईयर पहले पृथ्वी निर्माण हुआ है।

इस पृथ्वी पर आज तक विज्ञान ने लगभग 18 मिलियन प्रजातियां चिन्हित की हैं, और मानव जाति होमोसेपियन 18 मिलियन प्रजातियों में से एक प्रजाति है। इस विश्व के अनगिनत साल के इतिहास में मानव जाति का कोई अता-पता नहीं था, मानव जाति मुश्किल से पिछले चार मिलियन साल से इस पृथ्वी पर आई है। आज तक कई प्रजातियां पृथ्वी में आई कुछ साल तक रही और जलवायु बदलते ही नष्ट हो गई। मानव जाति भी इस पृथ्वी पर हमेशा रहेगी इसका कोई भरोसा नहीं है। जिस तरह डायनासोर और न जाने कितनी प्रजातियां आई हैं और समाप्त हो गई, इंसान भी इनमें से एक मामूली प्रजाति है।

इस विश्व को चलाने वाली एक शक्ति है इसे विज्ञान 'नेचर या प्रकृति' के नाम से जानता है। विज्ञान यह भी मानता है कि प्रकृति एक निचित नियमों के अनुसार इसको चलाती है। यदि इस प्रकृति पर काबू पाना है तो हमारे हाथ में सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है इस प्रकृति के रहस्य में नियमों को अनुसंधान संशोधन और प्रयोग के द्वारा जान लेना। आज तक विज्ञान ने प्रकृति के बहुत सारे नियमों को खोज लिया है और विज्ञान की खोज निरंतर जारी है। दुनिया के सारे धर्म हमको सिर्फ प्रकृति की पूजा करने की शिक्षा देते हैं वे कहते हैं कि पूजा करने से प्रकृति प्रसन्न होगी और हमारी मांगे और मुरादें पूरी करेगी। दुनिया के सारे धर्मो की यह मूलभूत शिक्षा ही सरासर झूठ है। विज्ञान ने इस बात को साबित किया है कि पूजा पाठ करने से प्रकृति के अपने नियम कभी नहीं बदलते हैं। यदि प्रकृति पर काबू पाना है तो उसका एकमात्र रास्ता है प्रकृति के नियमों को जानना। आज तक दुनिया में मानव जाति के सामने जितनी भी समस्याएं आई जैसे कि प्राकृतिक आपदाएं, और सभी प्रकार की संसर्गजन्य बीमारियां । किसी भी धर्म ने या धर्म गुरु ने या ईश्वर ने इनमें से एक भी बीमारियों का कोई इलाज मानव जाति को नहीं दिया ।

यह तो सिर्फ विज्ञान हैं जिसने मलेरिया, इनफ्लुएंजा, कॉलरा, स्मॉल पॉक्स और कितनी बीमारी पर साइंस ने दवाइयां खोजी हैं और इन महामारियों को हमेशा के लिए दुनियां से मिटा दिया है। कोरोना के लिए भी बहुत जल्द साइंस इलाज ढूंढ के निकालेगा ही यह कटुसत्य हैं !!

आज तक मानव जाति के ऊपर जब भी कोई बड़ा संकट आता है तो सारे मानव अपने अपने तीर्थ स्थल पर जाकर भगवान अल्लाह या गॉड के सामने झुक जाते हैं, किन्तु कोरोना वायरस ने तो यह रास्ता भी बंद कर दिया है। अभी सिर्फ हमारे सामने एक ही रास्ता है और वह है विज्ञान का !!!

सारे भगवान छुप कर बैठे हैं। हमारे सामने सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है हॉस्पिटल!! यह रास्ता हमें भगवान ने नहीं विज्ञान ने दिया है। इसलिए कोरोना वायरस से कुछ सीख लो !!

विज्ञानवादी बनो और जाति धर्म के सांचे से बाहर निकल कर एक नजर से हर इंसान और प्रकृति से प्रेम करना सीखो।

उस समय परेशान करते जब वे गहन चिंतन में लीन बैठे होते थे।

चार्ल्स बचपन से ही, बाहर से भिन्न भिन्न प्रकार के पौधे, फूल एवं जीव-जंतु लाकर एकत्र करते रहते थे तथा उनका विवरण भी लिखते रहते थे। बाद में एक बार डार्विन ने कहा था कि, 'जो बालक वस्तुएं एकत्र करना पसंद करता है या तो वह एक कंजूस है या आर्ट कलेक्टर अथवा प्रकृति के बारे में जुनूनी है।'

चार्ल्स डार्विन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक लिखते समय अत्यधिक कठोर परिश्रम किया था, यहां तक कि एक खण्ड लिखने पर उसने तीन महीने व्यतीत किये थे। हमारे ये महानविज्ञानी इस दुनिया को अप्रैल, 1882 में सदा के लिए अलविदा कह गये। उनके मृतक शरीर को वेस्टमिनिस्टर एबी में दफनाया गया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके समस्त पेपर कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में संभाल कर रख लिये गए हैं। इंग्लैंड में दस पौंड की मुद्रा पर उनको आज भी श्रद्धांजलि दी जाती है।

(हिंदी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार)

महिला सम्मान के लिए संघर्ष : सबरीमाला

-डॉ. प्रमोद दुर्गा, राहुल थोरात

गतांक से आगेः-

युक्तिवादी कार्यकर्ताओं ने दूसरी ज्योति जलायी

वर्ष 1982 में सुकुमारन ने अपने साथियों के साथ एक अलग ही तरकीब अपनाई। 14 जनवरी को मंदिर में आरती समाप्त हो जाने के बाद ज्योति तो जलने वाली ही थी। उन्होंने एक दिन पहले याने 13 जनवरी के दिन आसपास के अन्य कुछ जगहों पर वैसी ही ज्योति जलाईं। 13 जनवरी 1982 को एक नहीं बल्कि 12 ज्योति पहाड़ में जलीं। एक साथ 12 ज्योति जलने के कारण लोगों को अचरज हुआ। इस कारण 14 जनवरी की ज्योति का आकर्षण खत्म हुआ। सभी ओर हलचल मच गयी। स्थानीय और राष्ट्रीय समाचार पत्रों में इस बारे में समाचार प्रकाशित हुए। 'आल इंडिया रेडियो' ने भी इस का रिपोर्टिंग किया। 'हिन्दू' जैसे प्रतिष्ठा-प्राप्त समाचारपत्र ने इस पर समाचार प्रसिद्ध किया तथा विख्यात अँग्रेजी पत्रिकाओं में इस पर लेख छप गए। इस कारण लोगों में काफी प्रबोधन हुआ। इस के बाद युक्तिवादी संघटन और केरल के अन्य प्रगतिवादी संगठनों ने केरल में इस पर काफी प्रबोधन किया। इस का असर ये हुआ की आज इस मकर ज्योति को देखने के लिए केरल के बहुत कम भक्त आते हैं। वर्ष 1983 में भी सुकुमारन और उन के साथियों ने फिर से पहाड़ पर ज्योति जलाने का प्रयास किया लेकिन पुलिस और भक्तों ने उन के साथ मारपीट की। ये मारपीट इतनी भयंकर थी की सुकुमारन तीन माह अस्पताल में भर्ती रहें।

युक्तिवादी संघटन ने-मकर ज्योति का रहस्य क्या है- इस बात पर लगभग 30 से 40 वर्ष अनुवर्ती कार्य किया है, लोगों का प्रबोधन किया है। इस का अच्छा फल उन्हें वर्ष 2008 में मिला है। केरल सरकार और देवस्थान बोर्ड ने वर्ष 2007 में भिन्न भिन्न जगह यह घोषित किया है कि यह ज्योति कोई चमत्कार नहीं बल्कि मानव निर्मित ज्योति है। सरकार और देवस्थान बोर्ड द्वारा यह घोषित करना यह युक्तिवादी संघटन के कार्य का यश है। वर्ष 1988 में 'इंडियन एक्स्प्रेस' इस समाचारपत्र में प्रसिद्ध हुए एक समाचार के अनुसार, अपनी सारी जिंदगी सबरीमाला जाने वाले एक भक्त प्रभाकरण पिल्लई ने कहा, 'मैं बचपन से बहुत बार यहाँ आया हूँ, लेकिन मकर ज्योति का किसे भी आकर्षण नहीं था। सब यह जानते थे कि यह ज्योति पहाड़ के आदिवासी जलाते हैं। बाद में केरल सरकार के एक परियोजना के अंतर्गत यहाँ के आदिवासी वह जगह छोड़ कर चले गए और बाद में यह ज्योति बिजली बोर्ड के लोग जलाने लगे। बाद में इसे चमत्कार का स्वरूप प्राप्त हुआ।'

त्रावणकोर देवस्थान बोर्ड का न्यायालय में शपथपत्र ज्योति मानव निर्मित ही है :

वर्ष 2011 में लगभग तीन लाख भक्त मकर ज्योति का दर्शन ले कर जब पहाड़ उतर रहे थे तब एक जीप लोगों में घुस गयी। इस में हुई भगदड़ में अनुमानतः 200 भक्तों की मृत्यु हुई। सभी मृत भक्त तमिल नाडू, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के थे। यह प्रकरण केरल उच्च्य न्यायालय में दाखिल हुआ। दुर्घटना की जांच करते समय उच्च्य न्यायालय ने ज्योति की जांच के आदेश दिये और देवस्थान बोर्ड को शपथपत्र दाखिल करने के लिए कहा। इस बारे में देवस्थान बोर्ड ने न्यायालय में लिखित शपथपत्र दिया है कि यह ज्योति मानव निर्मित है। इस पर 'इंडिया टूडे' इस पत्रिका में समाचार दिया गया है। 'द हिन्दू' इस दैनिक समाचार पत्र में 21 जनवरी 2011 को राधा कृष्णन कुद्दूर का एक लेख प्रसिद्ध हुआ है। उस के अनुसार देवस्थान बोर्ड के उस समय के अध्यक्ष राजगोपाल नायर ने न्यायालय को कहा है कि यह ज्योति मानव निर्मित है तथा पंदालम राजमहल समिति के अधिकारी पी. रामवर्मा राजा ने

'द हिन्दू' इस दैनिक समाचारपत्र को पत्र लिख कर यह सूचित किया है कि यह ज्योति मानव निर्मित है। अय्यप्पा मंदिर के मुख्य तंत्री याने मंदिर के मुख्य पुरोहित कंदारारू माहेश्वरू की यह राय है कि आदिवासी लोग जंगल में रहते थे। उस समय वे भगवान की पूजा करने के लिए वे जिस जगह रहते थे, उस पहाड़ पर यह ज्योति जलाते थे। बाद में आदिवासियों ने जंगल छोड़ किया। अय्यप्पा सेवा संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डी. विजयकुमार की भी यही राय है की यह ज्योति मानव निर्मित है। डी. विजयकुमारय तथा नायर समाज सेवा संघ के सचिव जी. सुकुमारन की यह राय है की यह ज्योति याने ईश्वर की दीपपूजा या दीप आराधना है और पहले यह ज्योति आदिवासी निर्माण करते थे। अतः, यह ज्योति जलना यह एक धार्मिक कार्यक्रम है, यह इन सब की राय है।

महिलाओं के मंदिर प्रवेश प्रतिबंध की परंपरा का कोई आधार नहीं है :

सबरीमाला पहाड़ पर स्थित अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में महिलाओं के प्रवेश प्रतिबंध के बारे में कोई खास इतिहास नहीं है। कई लोगों के पास कई अलग अलग संदर्भ उपलब्ध हैं। मूलतः यह मंदिर हिन्दू परंपरा का, बौद्ध परंपरा का या आदिवासी संस्कृति का हिस्सा है, यह बात अचूक रूप से कानूनन सिद्ध नहीं हो रही है। अभी भी इस की कानूनी जांच हुई नहीं है, लेकिन यह भी एक संदर्भ हो सकता है।

इस मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर कब से प्रतिबंध है, इस की कोई अचूक जानकारी नहीं है, लेकिन अलग अलग तर्क किए जाते हैं। हिन्दू परंपरा को मानने वाले लोगों का यह कहना है कि इस मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर पहले से पाबंदी नहीं है। आदिवासी समाज के अध्येता डॉ. सजीव का कहना है की आदिवासी समाज के पास मंदिर का प्रशासकीय और पूजा का काम था तब यह महिला प्रवेश प्रतिबंध की प्रथा नहीं थी। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय का स्वागत किया है, तथा यह हमारी माँग का ही एक हिस्सा है, यह उन का कहना है।

पहले मंदिर में महिलाएं जाती थीं!

अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में महिलाएं जाती थीं, इस बात के कई प्रमाण उपलब्ध हैं। त्रावणकोर देवस्थान बोर्ड ने न्यायालय में एक शपथपत्र में यह लिखित में दिया है कि इस मंदिर में महिलाएं जाती थी। सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस पर भाष्य किया है। सर्वोच्च न्यायालय में जितने भी शपथपत्र दाखिल हुए है उन से यह ही निष्कर्ष निकलता है कि इस मंदिर में पहले महिलाएं जा चुकी हैं। दिसंबर और जनवरी इन दो महीनों के उत्सवों के दिन छोड़ कर अन्य दिन इस मंदिर में महिलाओं के जाने के संदर्भ मिलते हैं।

वर्ष 1939 में पंदालम के राजा ने सपरिवार इस मंदिर में प्रवेश किया था यह दर्ज किया गया है। उस समय उन के साथ उन की रानी थी, इस बात का भी उल्लेख है। उसके बाद वर्ष 1990 में त्रावणकोर देवस्थान बोर्ड की आयुक्त मा. चंद्रिका ने अपनी पोती का चावल खिलाने का कार्यक्रम भी अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में किया था। उस समय उन के कन्या की उम्र 22 वर्ष की थी। उन्होंने इस बारे में शपथपत्र सर्वोच्च न्यायालय में प्रस्तुत किया है। 29 सितंबर 2018 के 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में यह फोटो आ चुकी है। इस फोटो को खींचने के बाद की फोटोग्राफर ए. पी. जॉय की कहानी बड़ी मजेदार है। उन्हों ने मा. चंद्रिका को यह बिनती की, कि यह फोटो प्रसिद्ध ना करें लेकिन उन की इस बिनती को नकारा गया और 'मैं यह फोटो प्रसिद्ध करूंगी', मा. चन्द्रिका ने कहा था। जॉय जहां रहते थे, उस कमरे में एक आदमी 50,000 रुपये ले कर आया था। यह फोटो ना देने की कीमत थी 50,000 रुपये लेकिन ए. पी. जॉय ने यह फोटो समाचारपत्रों को दे दिया और दूसरे दिन यह फोटो समाचारपत्र में प्रसिद्ध हुआ। उस के बाद एक पाठक यह फोटो ले कर न्यायालय में गया। फोटो की यह कहानी 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने प्रसिद्ध की हैं। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय में इस फोटो का संदर्भ लिया गया है।

चावल खिलाने की प्रथा के समय महिलाओं का प्रवेश :

केरल में नए जन्मे बच्चे को अय्यप्पा मंदिर में ले जाकर अन्न-प्राशन संस्कार किया जाता है।

पहला निवाला खिलाया जाता है, वह भी चावल का निवाला खिलाने की प्रथा है। इसे चावल खिलाने की प्रथा कहते हैं। वर्ष 1990 में केरल देवस्थान बोर्ड के आयुक्त की पोती का चावल खिलाने का कार्यक्रम यहीं हुआ था। उस समय उस बच्चे की माता और अन्य महिला रिश्तेदार वहाँ उपस्थित थे। इस के विरोध में दायर याचिका का फैसला देते हुए वर्ष 1992 में केरल उच्च न्यायालय ने 10 से 50 उम्र की महिलाओं के प्रवेश पर पाबंदी लगाई थी।

मंदिर प्रवेश के लिए न्यायालय में संघर्षः

अय्यप्पा स्वामी का मंदिर पहले से ही प्रसिद्ध था ही, लेकिन वर्ष 2018 में यह मंदिर और ज्यादा प्रसिद्धि और चर्चा के केंद्र में आ गया। इसी कारण था, भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय। 10 से 50 के उम्र वाली महिलाओं को मंदिर में प्रवेश दिया नहीं जाता। इस पर 'इंडियन यंग लॉयर्स असोसियेशन' की याचिका सर्वोच्च न्यायालय में थी। इस पर निर्णय देते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि महिलाओं को मंदिर में प्रवेश नकारा नहीं जा सकता और यह समानता के तत्व के विरोधी है और इस मंदिर में महिलाओं को प्रवेश खुला कर दिया।

केरल सरकार ने वर्ष 1965 में हिन्दू सार्वजनिक मंदिर और पूजा स्थल प्रवेश कानून पारित किया है। इस कानून के नियम 3 ब ने अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में महिलाओं के जाने पर प्रतिबंध लगाया है। यह प्रथा वैसे ही चल रही थी। इस नियम ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15-1, 15-2 ब और अनुच्छेद 25 को बाधा पहुँच रही है तथा यह कानून संविधान के मूलभूत अधिकारों के विरुद्ध हैं, इस आशय की जनहित याचिका वर्ष 2006 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय में दायर की गयी थी। इस याचिका पर वर्ष 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया है।

लेकिन इस से पहले वर्ष 1990 में ऐसी ही याचिका केरल उच्च न्यायालय में दायर हुई थी, लेकिन केरल उच्च न्यायालय ने महिलाओं के मंदिर प्रवेश पर पाबंदी लगाने वाला कानून उचित करार दे कर प्रवेश पर पाबंदी लगाई थी।

सर्वोच्च न्यायालय के चार न्यायाधीशों की टिप्पणी

सर्वोच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा, माननीय न्यायाधीश फली नरीमन और माननीय न्यायाधीश धनंजय चंद्रचूड़ ने उन के निर्णय में बहुत ही उद्‌बोधक चर्चा की है, यह दिखाई देता है। उन्होंने कहा है कि, 'मूल्य केवल कागजों पर ही ज्यादातर रहे हैं। देवत्व के खोज में और आध्यात्मिक प्रगति में महिलाओं के साथ आचरण करते हुए उन को हमारे देश में हमेशा दोयम दर्जे का स्थान दिया है। ईश्वर की पूजा करने का अधिकार लिंग-भेद पर आधारित नहीं हो सकता। एक ओर स्त्री को देवी मान कर पूजना और दूसरी ओर भक्ति करने के बारे में उन पर कठोर नियम बनाना, यह दोहरा मापदंड हमें बंद कर देना चाहिए। कोई भी श्रद्धा और धर्म भेदभाव निर्माण नहीं करते, लेकिन पितृतंत्र वाले कर्मकांड महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करते हुए दिखाई देते हैं।"

सर्वोच्च न्यायालय में कुछ युक्तिवाद :

28 सितंबर 2018 को सर्वोच्च न्यायालय ने महिलाओं को मंदिर प्रवेश का अधिकार देते समय महिलाओं को प्रवेश नहीं दिया जाना चाहिए, इस हेतु दिये गए प्रमुख कारणों को नकारा है। महिलाओं को प्रवेश ना दिया जाये, इस हेतु प्रवेश के विरोधी लोगों ने दिये हुए कारण बहुत ही शोचनीय और किसी भी विवेकी व्यक्ति को स्वीकार्य होने वाले नहीं है।

उनमें से एक कारण यह है कि, अय्यप्पा स्वामी का मंदिर और उन की सारी परंपरा एक स्वतंत्र धर्म संप्रदाय का हिस्सा है। ये सभी प्रथाएँ और परम्पराएँ 'अय्यप्पा धर्म' का हिस्सा हैं और ये सभी बातें एक भिन्न धर्म संप्रदाय का हिस्सा होने के कारण संविधान के अनुच्छेद 26 के अनुसार किसी भी धर्म संप्रदाय को अपनी प्रथा और परंपरा के अनुसार जीने का मूलभूत अधिकार होने के कारण संविधान के अनुसार इसमें कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता। लेकिन माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अय्यप्पा स्वामी और वहाँ की प्रथाओं को अलग धर्म, पंथ मानना स्वीकार नहीं किया है, इसे हिन्दू धर्म का ही हिस्सा मान लिया है और हिन्दू धर्म के लोगों को जो भी अधिकार हैं वे सभी अधिकार महिलाओं को भी है। यह मान कर महिला-बंदी हटाई है। संविधान के अनुच्छेद 26 के अनुसार अय्यप्पा स्वामी के भक्तों को

अलग धर्म संप्रदाय, यह मान्यता देने के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने मना कर दिया है।

दूसरा कारण यह दिया गया था की अय्यप्पा स्वामी स्वयं जिंदगी भर ब्रह्मचारी रह चुके हैं और उन्होंने बड़ी तप चर्या की थी। अय्यप्पा स्वामी ने ब्रह्मचर्य का पालन किया था। इस कारण वर्ष 10 से 50 इस उम्र की महिलाओं को प्रवेश ना देने की बड़ी परंपरा, मान्यता और श्रद्धा है, अतः उस का पालन किया जाये। पंदलम राजाओं ने अय्यप्पा का मंदिर स्थायी रूप से ब्रह्मचारी के रूप में निर्मित किया है। अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में 41 दिनों का उपवास और ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले लोग ही आते हैं। इस कारण यहाँ महिलाओं को प्रवेश नहीं दिया जाता होगा, यह भी कहा जा रहा था। और तो और, माहवारी वाले महिलाओं के बारे में तो अधिक आक्षेप लिए गए थे। ऐसे ब्रह्मचर्य का पालन करने पर ही मन और शरीर की शुद्धता का पालन किया जाता है, यह कोर्ट को दिये हुए कागजातों में कहा गया है। सभी भौतिक सुखों से दूर जा कर आध्यात्मिक स्तर पर पहुंचा जा सकता है। जो भक्त इस प्रकार का 41 दिनों का उपवास करता है, वह स्वयं को अपने आप से सभी स्त्रियों को दूर रखता है, इतना ही नहीं, उस की पत्नी, बच्चे और माँ से भी अपने आप को दूर रखता है। कोई भी व्यसन नहीं करता और स्वयं को एक अलग जगह रखता है। स्वयं का अन्न स्वयं तैयार करता है। दिन में दो बार नहाता है। दिन में एक बार ही अन्न खा लेता है और नंगे पैर चलता है। इस प्रकार का कठोर 41 दिनों का उपवास कर के भक्त यहाँ आ जाते हैं। इस कारण यहाँ स्त्रियों को अगर प्रवेश दिया जाए तो भक्तों को संविधान के अनुच्छेद 25 एक के अनुसार उन का धर्म जीने का, विश्वास करने का और प्रचार करने का अधिकार बाधित हो जाएगा। इस कारण यहाँ स्त्रियों को प्रवेश ना दिया जाये।

इस पर, स्त्रियों के कारण कोई भी धर्म बाधित होने की कोई वजह नहीं बनती, यह निर्णय माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दे कर यह मुद्दा निपटा दिया है। स्त्री को मंदिर में प्रवेश नकारना यह हिन्दू धर्म का भाग नहीं है। इस कारण यह प्रथा धार्मिक है और धर्म का विशेष भाग होने के कारण वह बदला नहीं जा सकता, ऐसी कोई बात नहीं है। तथा, 10 से 50 उम्र की महिलाओं को मंदिर में प्रवेश देने से कोई भी सार्वजनिक नैतिकता, स्वास्थ्य या शांति खतरे में आने वाली नहीं है। अय्यप्पा धर्म ऐसा कोई अलग ही संप्रदाय है, यह मानने से माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इनकार किया है तथा वह हिन्दू धर्म का ही भाग माना है। माहवारी के काल में स्त्री से कोई भी नैतिकता या शुद्धता भंग नहीं होती, यह निष्कर्ष दिया है। स्त्री, पुरुष अलग-अलग हैं और उनमें कुछ भेद है, यह तत्व हिन्दू धर्म का भाग नहीं। सब से महत्वपूर्ण यह है कि संविधान ने स्त्रियों को समान माना है और यह उन का मूलभूत अधिकार धर्म, परंपरा, संप्रदाय, संस्कृति, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य के नाम पर छीन नहीं लिया जा सकता, ये राय न्यायालय ने दर्ज करायी हैं। मंदिर में महिलाओं को प्रवेश ना देना, यह अपवादात्मक और प्राचीन परंपरा है, यह भी मननीय न्यायालय ने मान्य नहीं किया है और सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि कर्मकांड बदलते हैं और इस कारण कोई धर्म समाप्त नहीं होता या धर्म के मूल तत्व पर कोई भी असर नहीं होता- यह राय प्रस्तुत की है।

स्त्री बंदी के समर्थकों ने, और विशेष रूप से इस मंदिर के तंत्री याने पौरोहित्य करने वालों ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय में यह कहा है कि, धर्म की परंपरा के अनुसार और आयुर्वेद के अनुसार माहवारी के समय महिलाओं को आराम की जरूरत होती है और शारीरिक दृष्टि से वे अशुद्ध होती हैं। इस कारण वे उन 41 दिनों के उपवास का पवित्र काम नहीं कर सकती और यह धर्म की एक पुरानी और सर्वत्र पालन की जाने वाली बात होने के कारण उसे धार्मिक परंपरा का और श्रद्धा का आधार मिलना चाहिए। माहवारी के समय महिलाएं अशुद्ध होती हैं। अन्य भक्तों का ब्रह्मचर्य भ्रष्ट ना हो और उन का मन विचलित ना हो, इस कारण स्त्रियों को प्रवेश नहीं होना चाहिए, यह दावा किया गया। मंदिर की अठारह सीढ़ियाँ चढ़ते समय ईश्वर को अर्पण करने के लिए जो पवित्र चीजें लायी जाती हैं, उन की पवित्रता भी भ्रष्ट ना हो इस लिए स्त्री बंदी है, यह भी एक मुद्दा प्रस्तुत किया गया। नैतिकता की रक्षा हो जानी चाहिए, यह संविधान की ही अपेक्षा होने के कारण यह प्रथा याने धार्मिक नैतिकता का ही भाग है, इस कारण इस की रक्षा होना आवश्यक है।

और एक विचित्र मुद्दा पुरोहितों ने प्रस्तुत किया था, वह है जिस समय ईश्वर की आराधना भक्ति भाव के साथ की जाती है, प्रार्थना की जाती है, ईश्वर को पुकारा जाता है, उस समय मंदिर परिसर में अगर महिलाएं उपस्थित हों तो वह आराधना, पुकार और प्रार्थना ईश्वर सुनेंगे नहीं और भक्तों की कठिनाइयाँ दूर होने के लिए मदद नहीं होगी, याने ईश्वर पुकार सुनेंगे ही, ऐसा नहीं हो सकता। वह पुरोहित के हाथों में नहीं है। इसे उन्हों ने 'देवप्रसन्नम' इस शब्द का उपयोग किया है, याने मंदिर परिसर में महिलाएं अगर हो तो ईश्वर प्रसन्न होगे नहीं, यह वे कहना चाहते थे।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय पर अमल करते हुए हमें राजनीतिक कीमत चुकानी पड़ी– क. म. पी. के. चित्रभानू

सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को प्रवेश देने पर केरल का राजनीतिक माहौल गरमा गया। वर्तमान कम्युनिस्ट सरकार ने न्यायालय के निर्णय पर अमल कर दिया। दो महिलाओं को पुलिस बंदोबस्त दे कर उन का मंदिर प्रवेश करा दिया। उस के बाद अय्यप्पा भक्तों ने अपनी धार्मिक भावनाएँ आहत हुई, यह कह कर बड़े पैमाने पर आंदोलन शुरू किया। नायर सोशल सर्विस (एन एस एस) यह संगठन इस आंदोलन में बड़े पैमाने में सक्रिय हुआ। केरल में नायर समाज का राजनीति और अर्थ प्रणाली पर वर्चस्व है। ब्राह्मण समाज के बाद यही समाज यहाँ प्रगति है। इस मंदिर प्रवेश के खिलाफ लाखों महिलाओं को रास्ते पर उतार कर सरकार का निषेध किया गया।

इस आंदोलन के बारे में केरल राज्य सरकार की और कम्युनिस्ट पार्टी की क्या भूमिका थी, यह जानने के लिए हम ने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के राज्य कमिटी सदस्य एड. पी के चित्रभानू से मुलाकात की। एड. चित्रभानू कोट्टायम के प्रसिद्ध वकील हैं। उन का वामपंथी प्रगतिशील आंदोलन में सक्रिय सहभाग होता है। इस आंदोलन के बारे में जानकारी देते हुए एड़. चित्रभानू ने कहा, 'अय्यप्पा स्वामी के मंदिर में महिलाओं को प्रवेश देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अमल करते हुए हम ने जबरदस्त राजनीतिक कीमत चुकाई है। मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर हमारी भूमिका हमेशा सकारात्मक रही है। इस कारण हम इस बात के पक्षधर थे कि महिलाओं को मंदिर में प्रवेश दिया जाये।'

सबरीमाला आंदोलन के दौरान विरोधियों ने हमें 'नास्तिकों की सरकार' कह कर अपमानित किया है। हम हिन्दू विरोधी है, यह अप-प्रचार नहीं किया, बल्कि हम नास्तिक हैं, यह प्रचार विरोधियों ने चालाकी से किया, इस कारण केरल के मुस्लिम और ईसाई मतदाताओं के मन में संभ्रम निर्माण हुआ। इस कारण लोकसभा चुनाव में वामपंथी पार्टियों के उम्मीदवार हार गए। इस आंदोलन के कारण हमें बड़ी राजनीतिक कीमत चुकनी पड़ी है। लेकिन हम विचलित नहीं हुए हैं। विरोधियों के अप-प्रचार का और महिलाओं के सम्मान का मुद्दा ले कर हम साल भर लगे रहे हैं। महिलाओं को मंदिर में प्रवेश दिया जाए इस हेतु सम्पूर्ण केरल राज्य में महिलाओं की अभूतपूर्व मानवी श्रृंखला बनाई। इस से मंदिर प्रवेश के पक्ष में भी केरल का महिला वर्ग है यह संदेश पूरे देश में पहुँच गया।

फैसले के उपरांत विधानसभा उप-चुनाव में वामपंथी पक्ष का विधायक सबरीमाला परिसर के निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुआ है। इस कारण हमें यह लगता है कि लोग यह बात जान गयें हैं कि सबरीमाला मंदिर प्रवेश आंदोलन इस विषय को राजनीतिक रंग दे कर लोगों की भावनाओं को भड़काया गया। हमारे वामपंथी सरकार के विरोध में भ्रम निर्माण किया गया था, वह इस उप-चुनाव के विजय से दूर हुआ।

ये मुद्दे भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नकारे हैं। महिलाओं को मंदिर में प्रवेश ना देना-यह उन के धार्मिक अधिकारों का हनन है, यह मान्य नहीं किया जा सकता, यह कहा है। मंदिर में प्रवेश करना और ईश्वर की पूजा करना, यह प्रत्येक हिन्दू का अधिकार उस के जाति, प्रांत और लिंग-भेद का विचार किए बिना है। नैतिकता किसी एकाध व्यक्ति, समूह या धार्मिक गुट को क्या लगता है, इस पर निश्चित नहीं हो सकती, बल्कि संवैधानिक नैतिकता को उच्च माना जाना चाहिए। इस कारण महिलाओं को प्रवेश ना देना, यह संवैधानिक नैतिकता के खिलाफ है। संवैधानिक नैतिकता इंसान में भेदभाव करने वाली नहीं होगी। व्यक्ति का सम्मान यह समूह के संविधान के मूल्य के विरोधी यह परंपरा है।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय क 450 पन्नों वाला यह निर्णय पढ़ते समय बार बार डा. नरेंद्र दाभोलकर के 'आम्ही खरे धार्मिक' 'हम सच्चे धार्मिक) इस व्याख्यान की याद इसी कारण आ जाती है। नीतिवान और विवेकी समाज निर्माण, यह ही महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति का अंतिम ध्येय है यह बात डॉ. दाभोलकर के लेखन में बार बार उल्लेखित की गई है और मा. सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में यही कहा है कि, महिलाओं को किसी भी प्रकार का भेदभाव किए बिना मंदिर में प्रवेश मिलें, यह ही धार्मिक और संवैधानिक नैतिकता है।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने किन बातों को नकाराः

माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का अवलोकन करने पर यह ध्यान में आ जाएगा कि माननीय न्यायालय ने धार्मिक श्रद्धा में हस्तक्षेप नहीं किया **है**, बल्कि श्रद्धा और अंधविश्वास में अंतर स्पष्ट किया है। कौन सी बातें धार्मिक हो सकती हैं और कौन सी बातें धार्मिक नहीं हो सकती, इस की चर्चा माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने की है। माननीय न्यायालय ने महिलाओं को मंदिर में प्रवेश देते हुए कौन सी बातें नकारी हैं, यह हम ने ध्यान में लेना चाहिए।

हमारे घर की महिलाएं हमारी सहचारिणी याने हमारी माता, बहन, कन्या, पत्नी ये अशुद्ध हैं, यह बात मा. सर्वोच्च न्यायालय ने नकारी है। माहवारी के दिनों में वे अशुद्ध और अपवित्र होती हैं। हमारी माता, बहन, पत्नी और कन्या ये अनैतिक बातों की जड़ हैं। समाज में स्थित अनैतिकता की जड़ हमारे घर की स्त्रियाँ है, ये सभी महिलाओं से संबन्धित बातें माननीय न्यायालय ने नकार दी हैं। क्या आप को यह नहीं लगता की हमारे घर की हमारी सभी सहचारिणी अशुद्धता की जड़ हैं, यह विचार ही अनैतिक और अविवेकी है? इन सभी बातों को नकारना याने हमारा धर्म डूब जाएगा, धर्म का अस्तित्व समाप्त होगा, धर्म की पहचान नष्ट होती, हमारी श्रद्धा, आस्था, परंपरा, संस्कृति और वि वास ये बातें अब अतीत में खो जाएंगी, ऐसा हो सकता है? इस पर आप ने शांति और विवेक के साथ विचार करना चाहिए।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय याने हमारी माता, बहन, कन्या और पत्नी का वे मनुष्य है, यह मान कर जारी किया गया आजादी का घोषणा पत्र ही है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय कहता है कि महिला अशुद्ध और अपवित्र हो ऐसा नहीं होता। वे वैसी हो नहीं सकती। वे उतनी ही इंसान है जितने हम सभी पुरुष इंसान हैं। उन की सभी शारीरिक क्रियाएँ उतनी ही प्राकृतिक और सहज हैं जितनी हम सभी की हैं। उसे शुद्ध-अशुद्धता की पट्टी लगा कर नापना, यह कानून, शास्त्र, विज्ञान, धर्म, परंपरा और संस्कृति में कहीं भी नहीं बैठता। आस्था और श्रद्धा के नाम पर अविवेकी विचार करने की अपेक्षा माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दिये हुए इस निर्णय का हम ने स्वागत ही करना चाहिए।

'सावित्री' के दो कन्याओं का मंदिर प्रवेश

माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद केरल की प्रो. बिन्दु अम्मिणी और कणकदुर्गा इन दो महिलाओं ने पुलिस बंदोबस्त के साथ अय्यप्पा मंदिर में प्रवेश किया। इस कारण केरल का सामाजिक वातावरण गरमा गया। इन दो महिलाओं को हम मिलना चाहते थे। मंदिर प्रवेश के बारे में उन के अनुभव सुनना चाहते थे। इस लिए हम ने प्रो. बिन्दु से संपर्क किया। उन्होंने हमें कोझीकोड, इस जिला स्थल पर आने के लिए कहा।

कोट्टायम से आठ घंटे की रेल यात्रा कर के हम दोनों कोझीकोड पहुंचे। 400 वर्ष पहले कोझीकोड के सागर किनारे पर वास्को-द-गामा ने पहला कदम रखा था और भारत की खोज की थी। कोझीकोड में हमारा स्वागत केरल युक्तिवादी संघम के वरिष्ठ कार्यकर्ता टी. पी. मणि ने किया। उन के साथ हम कोट्टायम सेंट्रल टाउन हाल पहुंचे। उसी जगह साक्षात्कार के लिए हमें प्रो. बिन्दु से मिलना था।

साक्षात्कार शुरू करने से पहले हम ने इस साहस-पूर्ण कार्य के लिए प्रो.बिन्दु का महाराष्ट्र अंनिस की ओर से अभिनंदन किया। उन्हें महाराष्ट्र अंनिस ने यानि शिंगणापुर में महिला मंदिर प्रवेश के लिए किए हुए आंदोलन की जानकारी संक्षेप में दी। बाद में साक्षात्कार शुरू हुआ।

...शेष अगले अंक में

बुवाबाजी (बाबागीरी)

–डॉ॰ नरेन्द्र दाभोलकर

गतांक से आगे...

पाखंड की मानसिकता और सामाजिकता

ढकोसले की तरफ भागने वाले जनसमूह का मतलब एक अंधेरे भविष्य की गंभीरचिंता है। सामाजिक स्तरों पर नगर एवं देहातों में रहने वाले अलग-अलग उम्र के स्त्री-पुरुष जब अपने-अपने स्तरों पर इस मानसिकता के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दावेदार बन जाते हैं, तब उसके पीछे कौन से प्रमुख कारण हैं, उन्हें समझना बहुत आवश्यक होता है। उन्हें इस प्रकार दर्ज किया जा सकता है।

1. व्याकुलता, अस्थिरता, अपराध की भावना

विगत डेढ़ -दो दशकों से एक नई अर्थव्यवस्था पूरे विश्व में आकार ले रही है। उसका प्रमुख लक्षण आज की बेकारी है। आज का व्यक्ति इसीलिए निराश एवं घुटन की मानसिकता में जी रहा है। ऐसे लोगों का शोषण बहुत शीघ्र होता है। लेकिन जिम्मेदार शोषक सामने नहीं आते। ऐसे समय व्यक्ति किसी आधार की तलाश में रहता है। साक्षात् मिलने वाले, बोलने वाले बाबा का आधार उसके लिए महत्त्वपूर्ण बनता है। उसकी अद्‌भुत दैवी शक्ति से समस्या का समाधान मिलने की आशा होती है। अंधी भाग-दौड़ वाली ज़िंदगी से निर्मित होने वाली व्याकुलता, अस्थिरता उस बाबा के दैवी आश्रय की ओर आकर्षित हो जाती है। ख्यातलब्ध नायक एवं नायिकाओं की फिल्में घड़ाधड़ फ्लॉप हो जाती हैं। अव्वल स्थान के खिलाड़ी अपना फॉर्म गंवा बैठते हैं। किसी अज्ञात शक्ति के कारण यह संकट आते हैं, जिसका ज्ञान बाबा को होता है और वही अब इसे दूर भी करेंगे, ऐसा उनके भक्तों का विश्वास होता है। जब अनैतिक मार्ग से धन-दौलत, सुख-सुविधाएं प्राप्त की जाती हैं, तब मन अपराधी के रूप में संत्रास रहता है। बाबा के चरणों में लीन हो जाने से उनकी कृपा को प्राप्त कर अपराधी मन को कुछ मात्रा में शांति मिलती है।

कवि मंगेश पाडगावकर ने ऐसी मानसिकता का वर्णन बहुत कलात्मकता से किया हैः

ःलोग बने हैं कंकाल अंदर से खोखले
अदृश्य आतंक से घबराए निराधार
हर कोई चाहता है जबर्दस्त बुवा
जो निकालेगा मन की चिंता की जुएं
'जय साईं' पुकार कर अधिक की रिश्वत लेता
अभी तक फंसा नहीं, कृपा बाबा की
हम नहीं खोजेंगे, हम नहीं लड़ेंगे
हम नहीं दो हाथ करेंगे जिंदगी से
रीढ़ छीज चुकी पूरी तरह सरजोर, सभी लाचार
बुवा के नाम जप का उच्चार बनाता बेहोश हमें।'

2. काल्पनिक खौफ

सामाजिक जीवन की रफ्तार ज़रूरत से अधिक तेज हो गई है। जीवन में भाग-दौड़ नहीं बल्कि जीवन ही भाग-दौड़ बन गया है। इसीलिए अचानक होने वाली दुर्घटनाओं से दिल दहल जाता है। जैसे खचाखच भीड़ वाली लोकल से पति रोज यात्रा करते हैं। उन्हें कुछ होगा तो नहीं? बेटी अजनबी शहर में अकेली रहती है, उसे कोई छेड़ेगा, सतायेगा तो नहीं? आसपास के घरों में रात में लूटमार होती है, आज रात मेरे घर का नंबर तो नहीं? बेटे के दोस्त शराबी हैं, कहीं बेटे को यह बुरी आदत न लगे-ऐसी अनेक चिंताओं की दीमक मनुष्य के मन में खोखला करती हैं। ऐसे समय जब वह काल्पनिक खौफ प्रत्यक्ष दिखाई देता है तब उसका सामना किया जा सकता है, लेकिन ऐसा न होकर तब 'डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं' कहने वाले बाबा का आधार ही मन को उस खौफ से दूर करता है।

3. अतृप्त वासनाओं की पूर्ति

आधुनिक संसार में भौतिक सुखों का उपभोग करने के स्रोत और संभावनाएं बढ़ गई हैं। नित नये आकर्षण लोगों को खींच रहे हैं। लेकिन प्रत्यक्ष उनकी प्राप्ति न के बराबर होती है। सके लिए भ्रष्टाचार की नीति सभी को रास नहीं आती। ऐसे समय बाबा का सहारा लेकर 'अलीबाबा की गुफा' खोलने की संभावना को व्यक्ति आजमाता हैं यह उसकी लालसा होती है।

4. **मानसिक बीमारियांः**

गंभीर मानसिक बीमारियों का प्रमाण भारत में 1 प्रतिशत है। हल्की मानसिक बीमारी का प्रमाण 7 से 10 प्रतिशत है। मन की बीमारी अभी भी लोगों को अटपटी लगती है। मन की बीमारी यानी पागलपन यही उनकी मान्यता है। हमारे समाज में पागलपन व्यक्तित्व पर लगा एक कलंक माना जाता है। मानसिक इलाज की व्यवस्था हमारे देश में अपर्याप्त हैं। जो है, वह , बहुत महंगी है। इन सारी पृष्ठभूमि पर मानसिक दृष्टि से हल्की अथवा गंभीर बीमारी से ग्रस्त होने वाले लोगों की आध्यात्मिक बाबा-बुवा, गुरु, स्वामी अथवा 'बाहर की' परंपरागत विचारधारा के अनुसार, उनकी बीमारी पर यही इलाज प्रभावी होते हें, इसीलिए साधुत्व के ढोंग से और प्रेरणा मिलती है।

5. मनोकायिक बीमारियांः

अधिकांश बीमारियां शारीरिक लक्षणों के द्वारा व्यक्त होती हैं, जैसे-जबान बंद होना, लकवा मारना, दृष्टिहीन हो जाना आदि। ये बीमारियां प्राथमिक स्तर पर मानसिक होती हैं, तत्पश्चात् वे शारीरिक लक्षणों के द्वारा प्रकट होती हैं। इसे मनोकायिक बीमारी कहते हैं। ऐसा रोगी मानसोपचार विशेषज्ञ के इलाज से ठीक होता है। जिस बाबा पर श्रद्धा है, उसकी बातों को मानकर ऐसा रोगी स्वस्थ हो जाता हैं 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' उक्ति के अनुसार सभी शारीरिक बीमारियां भी धीरे-धीरे ठीक हो जाती हैं। मनोवैज्ञानिक कारणों से बाबा और भक्त मरीज दोनों अनजान होते हैं। इसलिए इन घटनाओं के लिए अनुकूल माहौल अपने आप तैयार हो जाता है।

6. शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का अभाव एवं खर्चीला इलाजः

अनेक कारणों से बीमार पड़ने वाले लोगों की इस देश में भारी संख्या है। इन बीमारियों के इलाज, सुविधाएं तथा उसके लिए आवश्यक खर्च बहुत से लोगों के लिए सामर्थ्य से बाहर होता है। विकल्प ढूंढने वाले ऐसे लोगों को शरीर पर चादर डालकर, फर्श पर सिर रखकर हाथ से शल्यक्रिया करने वाले बाबा अधिक भरोसेमंद लगते हैं।

7. निरर्थकता की भावना से पीड़ित महिलाएंः

हमारे समाज में महिलाएं अनेक कारणों से निरर्थकता की भावना को लेकर जी रही हैं। उनके मन को शांति देने वाली, मानसिक आधार देने वाली कोई भी अधिकृत व्यवस्था समाज में नहीं है। परिवार से बेसहारा हुई स्त्री को समाज में संतुलित जीवन जीना एक चुनौती होती है। न ससुराल, न मायका-ऐसी स्थिति में वह बाबा, बुवा, स्वामी, गुरु के सत्संग, सहवास एवं सेवा का आधार लेती हैं, क्योंकि ऐसे गुरुगीरी समाजमान्य होते हैं, जहां पर सुरक्षित होने का अहसास होता है।

8. आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, मोक्ष, मुक्ति शब्दों का मायाजालः

भारत के अधिकतर हिंदुधर्मीय जनमानस पर उपर्युक्त शब्दों की मुहर लगी मिलती है। बचपन से ही उसने आत्मा-परमात्मा की (न समझने वाली) चर्चा सुनी होती है। माया और ब्रह्म, परब्रह्म, आत्मा जैसे शब्द उसके दिमाग में बचपन से ही डाले जाते हैं। जीवन का लक्ष्य मोक्ष अर्थात् 'मुक्ति को प्राप्त करना' है और उसके लिए संसार का भवसागर पार करना होगा'- ऐसे विचार उसके मन में घर कर लेते हैं। इनमें से किसी का भी अर्थ उसे पता नहीं होता। परंतु ये शब्द और उसके अर्थ बहुत महान, पवित्र, उदात्त हैं, ऐसे संस्कार उसके अबोध मन पर पड़ते हैं। बाबा-बुवा, गुरु, स्वामी-इन शब्दों को उपयोग अधिकतर वाणी से करते हैं, इसलिए वे भी दिव्य, पवित्र और महान बन जाते हैं।

9. विश्व नियंत्रण करने वाली शक्ति और अवतारवादः

इस विश्व का नियंत्रण करने वाली कोई अलौकिक एवं दैवी शक्ति है, ऐसा बहुसंख्यक लोग मानते है। अवतारवाद की भावना हिंदू संस्कृति में परंपरा से हैं इसलिए बाबा साक्षात् ईश्वर का अवतार ही हैं। वे हमारे विघ्नहर्ता हैं, तकदीर के मालिक हैं, यह मानसिकता बाबा की शरण में उनको ले जाती है।

10. संभाव्य-असंभाव्यता का सिद्धांत :

अपना भविष्य जानने के लिए लोग बाबा के पास जाते हैं। जीवन में अच्छे दिन आने के लिए बाबा अपनी दैवी शक्ति का उपयोग करें, ऐसी याचना करने के लिए ये लोग उनके पास जाते हैं। बाबा की महिमा का रसभरा वर्णन सुनने वालों को भी बाबा महान लगते हैं। प्रत्यक्ष प्रश्नों के अचूक

उत्तर बाबा कैसे देते हैं। ? प्रश्न होते हैं-गर्भवती स्त्री को लड़का होगा या लड़की ? चुनाव में दो उम्मीदवारों में से कौन जीतेगा ? इसके उत्तर बहुविकल्पीय होते हैं। इसलिए जो भी उत्तर बाबा देते हैं, उसके औसत नियमानुसार अचूक होने की 50 प्रतिशत संभावना होती है। लड़का या लड़की में से कोई भी एक जन्म लेता ही है। (सोनोग्राफी की सुविधा के कारण अब बाबा इस प्रश्न से हाथ धो बैठे हैं।) दो उम्मीदवारों में एक की विजय निश्चय ही होती है। बाबा इतने तो बुद्धिमान होते ही हैं कि प्रत्येक संभाव्य अथवा असंभाव्यता के नियम के अनुसार उत्तरों का अनुमान कर लेते हैं। जिनके बारे में उत्तर सही नहीं होते, वे उसे अपने भाग्य का फेर समझते हैं। लोग मान लेते हैं कि नसीब में यही था।

11. सांस्कृतिक दृष्टि से व्यक्त होने की जरूरतः

व्यक्ति सामाजिक होता है इसीलिए सांस्कृतिक दृष्टि से उसे समूह में व्यक्त होने की जरूरत होती है। गांव में संयुक्त परिवार पद्धति होती है। वहां के मान-अपमानों को सिर पर उठा कर रहना पड़ता है। शहरों में फ्लैट संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं तक सीमित हो गया हैं पड़ोस में कौन रहता है, पता नहीं । एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होने की जरूरत नहीं महसूस की जाती। इसीलिए हम भी किसी समूह का हिस्सा हैं, यह भावना मनुष्य को सुरक्षा प्रदान करती है। बाबा-भगतों के भक्तगणों के समूह में यह भावनात्मक संतोष मिलता है। वहां पर सभी एक-दूसरे को बाबा के भक्तों के रूप में मिलते हैं। शहरी गंवार, गरीब--अमीर, शिक्षित-अनपड़, स्त्री-पुरुष-सभी एक मानसिक स्थिति में होते हैं।

12. अंधविश्वासी मनः

समाज में यथार्थ घटित होता है और मनुष्य उस पर सोचने वाला प्राणी समझा जाता है। अच्छा-बुरा, सच-झूठ को तय करने के लिए उसमें सजग दृष्टि होनी चाहिए। लेकिन समाज की मानसिकता इसके विरुद्ध नजर आती है। वह अंधविश्वासी बन जाता है कि ऐसे ढकोसलों के पनपने के लिए वह उपजाऊ जमीन तैयार करता है।

13. सामाजिक प्रतिष्ठा का लाभः

गुरु का शिष्य बनने में स्वामी और शिष्य के रूप में राजनीतिक हस्तियों को -दोनों का फायदा होता है। बाबा के पास बड़ा अनुयायी वर्ग होता है। गुरु से आदर और कृपा मिलना अनुयायी वर्ग में ऊंची प्रतिष्ठा का विषय होता है। दूसरी ओर शिष्य बाबा की तारीफों के पुल बांधते नहीं थकते। यह सब कथित सिद्ध साधकों की चतुराई होती है।

14. पैसा, सत्ता, जनसंचार माध्यम और गुंडों का आतंकः

ढकोसले का धंधा अत्यधिक किफायती और बिना पूंजी लागत का होता है। किसी भी धंधे की सुरक्षा के लिए नैतिक-अनैतिक व्यवस्था होती है। वैसी ही गुरुगीरी के ढकोसले की सुरक्षा में वह सक्रिय रहती है। बाबा, भगत, गुरु कितनी भी उदात्तता की भाषा क्यों न बोलते हों लेकिन उनके विरुद्ध बोलना, छापना अर्थात् उनके नकाब को उतारने का प्रयत्न बिलकुल सहन नहीं किया जाता। बाबा के विरुद्ध लिखने वाले, खबरों को छापने वाले पत्रकार तथा अखबारों के सामने चीख-पुकार की जाती है। उन्हें धमकियां दी जाती हैं। उनके विरुद्ध मानहानि का दावा भी किया जाता है। उनके घरों पर धावा बोल दिया जाता है, उनसे मारपीट की जाती है। बाबा ऐसा आतंक फैलाने वाली फौज पहले से ही तैयार रखते हैं। पैसों का बीज बोकर सद्‌भावना को खरीदा जाता है। विरोधियों का मुंह बंद रखने के लिए अर्थनीति अपनाई जाती है। खेद इस बात का है कि जनसंचार माध्यम भी ऐसी अर्थनीति के गुलाम बनते जा रहे हैं। बाबा की महिमा के वर्णन पूरे पन्नों में 'अर्थपूर्ण' शीर्षकों के साथ छपवाए जाते हैं। अपने क्षेत्र की राजनीतिक अथवा पूंजीवादी सत्ता अपने समर्थन में ही रहे, इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार अध्यात्म का दावा करने वाले लोग वास्तव में नगद नारायाण का व्यवहार करते हैं।

15. दैवी आतंक

कोई दुष्ट शक्ति षड्‌यंत्र रचाकर सताने वाली होती है, ऐसी गलत भावना लोगों को आतंकित करती रहती है। मांत्रिक-तांत्रिकों के संदर्भ में भी ऐसा ही आतंक लोगों में होता है। ऐसे व्यक्ति की दुश्मनी मोल लेने का साहस लोगों में नहीं होता। कभी-कभी बाबा और समय आने पर उनके चेले भी धमकियां देने से पीछे नहीं हटते। दैवी आतंक से सामान्य लोग घबराते हैं। उन्हें कितने भी कटु अनुभव क्यों न हो, लेकिन वे उसके विरुद्ध बातें

जाहिर करना ठीक नहीं समझते।

16. धंधे का रैकेटः

बाबा का बहुत बोलबाला रहता है। मांत्रिकों के दैवी इलाज के लिए लोगों की लंबी कतारें लगती हैं। इन सबसे धंधे की एक श्रृंखला तैयार होती है। भक्त और जरूरतमंदों को लाने-छोड़ने वाले वाहनों का धंधा जोरों पर रहता है। भीड़-भाड़ वाले इलाकों में छोटी मोटी जरूरतों को पूरा करने वाले उद्योग चलने लगते हैं। चायपान, भोजन, निवास, फोटो, नारियल, फूलों की मालाएं आदि चीजों को बेचने वाले दुकानदार फायदे में रहते हैं। बाबा का धंधा उनके धंधों को हमेशा चालू रखता है।

17. राज्य मान्यता-लोकमान्यता

बुवा-बाबा को जो धन मिलता है, वह उसकी मुफ्त की कमाई होती है। भौतिक सुखों की रेलपेल उनके पास हमेशा रहती है। लेकिन कमाई का कुछ हिस्सा वे सामाजिक कार्यो में खर्च करते हैं। इससे उन्हें अपने आप लोकमान्यता मिल जाती है इधर राज्यसंस्थाओं का भी सहयोग मिलता है। इसीलिए उनकी ओर से भी राज्यमान्यता मिलती है। 'तू चुप, मैं भी चुप' समझौते पर सब कुछ बिना रोक-टोक के शुरू रहता है।

18. अफवाहों का मानसशास्त्रः

जो बाबा-भगत अपनी दैवी शक्ति के लिए चर्चित रहते हैं, उनके कर्तृत्व से होने वाले चमत्कारों की कथाएं निरंतर फैलाई जाती हैं। बाबा की शक्ति से लाभान्वित हुए मरीज, दिवालिया निकले रईस अपनी प्रतीति के अनभव बढ़ा-चढ़ाकर बयान करते हैं। लेकिन जांच-पड़ताल के बाद केवल अफवाहें ही सामने आती हैं।

19. साहसी वृत्ति का अभाव एवं उदासी वृत्तिः

भारतीय जनमानस लड़ाकू वृत्ति का नहीं हैं उसमें जुझारू बनने की इच्छा नहीं दिखाई देती। नया कुछ ढूंढने, उत्साह, प्रसन्नता से रसिक जीवन जीने, नए क्षितिजों में उड़ान भरने जैसी मानसिकता बहुत कम लोगों में होती है। 'भगवान ने जैसा रखा है, वैसे ही रहो' जैसी यथास्थितिवादी मानसिकता का प्रभाव लोगों पर अधिक है। इसे सींचने वाले साधुओं के क्या कहने।

20. स्त्रियों का असंतुष्ट काम-जीवनः

बाबा बनने पर स्त्रियों से सहवास की अनुकूलता सहज ही प्राप्त होती है। लेकिन जिस मात्रा में महिलाएं बाबा की अनुयायी बन जाती हैं, उसे देखकर हैरानी होती है। महिलाएं ऐसा क्यों करती हैं? उत्तर के रूप में यह बात सामने आती है कि बाबा के दैवी प्रभाव की ओर वह आकर्षित होती है। अपने आप वहां की वासना का वह शिकार बनती है। फिर बदनामी के डर से चुप रहती है। दूसरी संभावना यह बताई जाती है कि स्त्री के अंतर्मन की अतृप्त कामवासना इसका एक कारण हो सकती है। स्त्री अपनी कामवासना को दबाती है। अनेक कारणों से वह बता नहीं सकती। इस संदर्भ में उसका अज्ञान भी होता है, लेकिन इस संदर्भ में बोलना वह अनैतिक समझती है। स्त्री-पुरुष के संबंधों में पुरुष की कामतृप्ति शीघ्र होती है और पूर्ति का एहसास भी उसे होता है। वह इस क्रीड़ा से जल्दी दूर हो जाता है। बेशक स्त्री न बोलती हो लेकिन उसके विरुद्ध बोलना, छापना अर्थात उसके नकाबों को उतारने का प्रयास बिलकुल सहन नहीं करती। वह आंतरिक स्तर पर व्याकुल होती है, दुखी होती है। वह सामाजिक बंधनों के बोझ तले दबी होती है। पुरुष अपनी इच्छापूर्ति अनेक मार्गो से करता है, लेकिन स्त्री के पास ऐसा विकल्प नहीं होता। अपने बच्चे की परवरिश करना, नाम जपना, भगवान की पूजा, कथित अध्यात्म जैसे विकल्पों से स्त्री अपने आप पर नियंत्रण में रखती हैं। विवाहेतर संबंधों का विकल्प उसके लिए बहुत भारी होता हैं भारतीय सामाजिक जीवन में वह बहिष्कृत बन जाती है। उसे व्यभिचारी कहा जाता है। लेकिन बाबा, बुवा के इर्द-गिर्द कथित धार्मिक-नैतिक शक्ति होती है। लोकप्रियता होती है। इसीलिए उसके सहवास के बारे में लोगों में चर्चा की गुंजाइश नहीं होती। यह परिणाम परंपरागत जनमानस में जड़ें जमाई हुई श्रद्धा के रसायन का है। इसीलिए बाबा से सहज ही शारीरिक संबंध स्थापित होते हैं। जिस बाबा के केवल दर्शन के लिए लोग घंटों तरसते हैं, अधिकार से मिला उसका सहवास भी एक कारण हो सकता है। वाघमारे बाबा जैसे सामान्य रूप के बाबा की ओर महिलांए भारी संख्या में जाती थीं। एक ही परिवार की सास-बहू, बेटी और मां के साथ उसके संबंध गवाह सहित प्रस्तुत किए गए थे। इसका मामला अभी चल रहा है। लेकिन ऐसा भयावह

यथार्थ इस क्षेत्र में पाया गया है। स्त्री शरीर-संबंधों की अपेक्षा अपनापन और प्यार के संबंधों से अधिक जुड़ी होती है। अपवाद के रूप में ही कुछ स्त्रियां शारीरिक संतोष के लिए बाबा की ओर आकर्षित होती हैं। अधिकांश स्त्रियों का उद्देश्य होता है कि बाबा की कृपादृष्टि और हस्तस्पर्श से उनके पारिवारिक व्यथा-वेदनाओं का शमन हो। आज के भारतीय समाज की अधिकांश महिलाएं आध्यात्मिक उद्देश्य से बाबा के पास जाती हैं। उन्हें पूरी तरह से वासनापूर्ति से जोड़ना महिलाओं पर अन्याय ही होगा, इस बात पर भी गौर करना चाहिए।

21. व्यावसायिक रचनाः

ढेकोसले के मामलों में आधुनिक उच्च तंत्रों का उपयोग किया जाता है। योगशास्त्र, काम-जीवन, आध्यात्मिक उन्नति, व्यक्तित्व विकास, आदि बातों पर अंग्रेजी में भाषण देना बाबा ने आत्मसात् किया जो उच्चवर्ग की मानसिकता के अनुकूल होता हैं आराधना या साधना के अनेक प्रकार नृत्य, संगीत अथवा क्रीड़ा के स्वरूप में होते हैं। ऐसा आभास निर्मित किया जाता है कि ये सारी बातें जीवनावश्यक हैं। संपर्क, शोहरत, अनुवर्तन के संदर्भ में मौजूद व्यथा अधिकांश समय 'कार्पोरेट' स्तर की होती है। बाबा के पास जाने पर लोगों का मन आश्वस्त होता है। उसके अनेक कारण होते हैंः

1. विरेचन- शरीर और मन की भाग-दौड़ करने की पद्धति।
2. एंडारफीन - जैव रासायनिक और तरल पदार्थ से दिमाग को सुकून मिलने की आशा होना।
3. सूचनावर्तित्व - मन को सूचना देकर मनोशारीरिक बीमारियों का इलाज हो जाता है, जिसका श्रेय बाबा को जाता है।
4. मानसिक प्रभाव 'प्लासिबो इफेक्ट'- बाबा की कृपा से मार्ग मिलना और ठीक होने की भावना निर्मित होना, यह मानसिक प्रभाव होता है।
5. स्वयंनियंत्रित बीमारी (सेल्फ क्यूरेबल डिसीज) - कुछ बीमारियां निश्चत् समय के बाद अपने आप ठीक हो जाती हैं। इसी दौरान अगर बराबर का अशीर्वाद लिया हो ता ज्ञेय बाबा को जाता है।
6. समुपदेशन -बाबा के साथ सलाह-मशवरा एवं चर्चा लोगों को एक समुपदेशन लगता है। इस काउंसलिंग का उन पर प्रभाव पड़ता है। इसका श्रेय भी बाबा की दैवी शक्ति को मिलता है।
7. स्पांनियम रिग्रेशन -अचानक रोग-प्रतिकार शक्ति बढ़ जाती है। उससे बीमारी थम जाती है। यह रोग-प्रतिकार शक्ति एकदम कैसे बढ़ गई, इसका अविलंब उत्तर विज्ञान के पास भी नहीं होता। ऐसी सूरत में कथित चमत्कार बाबा के प्रभाव एवं कृपा-प्रसाद का कारण बन जाता है।
8. मनुष्य समुदायप्रियता- मनुष्य की शोधवृत्ति समूह में शिथिल हो जाती है। उचित-अनुचित, सच-झूठ का चयन करने वाली विवेक-बुद्धि छुप जाती है। बाबा के पास जनसमुदाय हमेशा रहता है-बाबा के असाधारण हुनर का गुणगान करते हुए व्यक्ति को 'अब मेरी समस्याओं का हल निकलने ही वाला है' जैसे विश्वास होने लगता है

ढकोसले की मानसिकता का रुझान दो प्रमुख बातों से होता है-नसीब अथवा दैववादी कल्पना और दूसरी है चमत्कार।

.... शेष अगले अंक में

जावेद अख्तर को रिचर्ड डाकिंस पुरस्कार सम्मानित किये गये

अनुभवी गीतकार वह कवि जावेद अख्तर को मशहूर रिचर्ड पुरुस्कार से नवाजा गया है। यह पुरस्कार विश्वप्रसिद्ध जीवविज्ञानी के नाम पर उन लोगों प्रदान किया जाता है जो सावर्जनिक रूप से धर्महनिर्पेक्षता, तर्कशीलता और वैज्ञानिक सत्यता के लिये काम करते हैं । जावेद अख्तर को यह पुरुस्कार उनके 'कारण' व ' तर्कशीलता' के विचारों को बढ़ावा दिये जाने पर अपना योगदान देने के लिये प्रदान किया गया है।

०००

नित्यानंद के खिलाफ इंटरपोल ने जारी किया ब्लू कार्नर नोटिस

अहमदाबादः इंटरपोल ने स्वयंभू बाबा नित्यानंद के खिलाफ ब्लू कार्नर नोटिस जारी किया है। गुजरात पुलिस ने बुधवार को बताया कि उसकी तलाश के लिए यह नोटिस जारी किया गया है। कर्नाटक में दुष्कर्म का मामला दर्ज होने के बाद नित्यानंद देश से फरार हो गया है। गुजरात पुलिस ने नित्यानंद के खिलाफ पिछले साल नवंबर में दर्ज एफ आई आर के संदर्भ में एक स्थानीय अदालत में दाखिल चार्जशीट में ब्लू कार्नर नोटिस जारी होने का खुलासा किया। उसके गुजरात स्थित आश्रम में दो लड़कियों के गायब होने के बाद यह एफआईआर दर्ज की गई थी। डीएसपी के.टी. कमरिया ने बताया कि नित्यानंद के खिलाफ यह नोटिस इस महीने जारी किया गया। ब्लू कार्नर नोटिस भगौड़े अपराधी की तलाश के लिए जारी किया जाता है। उन्होंने कहा कि वे उसके खिलाफ इंटरपोल से रेड कार्नर नोटिस जारी करने की कोशिश कर रहे हैं। -एजेंसी

-अमर उजाला-23-1-2020

मस्जिद में खाना देने गई नाबालिग से इमाम ने किया बलात्कार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

तिजारा (अलवर), तिजारा थाना इलाके के एक गांव में मस्जिद में खाना देने गई नाबालिग से इमाम ने बलात्कार कर दिया। घटना के बाद से आरोपी इमाम फरार है। वहीं, पीड़िता के भाई ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल और न्यायालय के समक्ष बयान करा दिए हैं। आरोपी की तलाश जारी है।

तिजारा थानाधिकारी जितेन्द्र नावरिया ने बताया कि पीड़िता के भाई ने सोमवार रात थाने में शिकायत दी कि गांव स्थित एक मस्जिद में पड़ोसी गांव निवासी सद्दाम पुत्र इलियास पिछले तीन साल से इमाम का कार्य करता है। वहां उसकी बच्चों को पढ़ाने और लोगों से नमाज अता कराने की जिम्मेदारी है। मस्जिद के इमाम सद्दाम के लिए गांव के हर घर से नंबरवाइज खाना भेजा जाता था। 14 जनवरी को इमाम का खाना भेजने का नंबर उसके घर से था। रात करीब 8 बजे उसकी 15 वर्षीया नाबालिग बहन घर से मस्जिद में इमाम सद्दाम के लिए खाना लेकर गई और उसे टिफिन सौंपा। उसी दौरान सद्दाम ने उसका हाथ पकड़कर मस्जिद के कक्ष में खींच लिया और कमरे का दरवाजा बंद कर उसके साथ बलात्कार किया। आरोपी ने घटना के बारे में किसी को बताने पर पीड़िता को जान से मारने की धमकी भी दी। बाद में पीड़िता ने जैसे--तैसे कमरे से बाहर आकर शोर मचाया। पास की दुकान पर बैठे कुछ लोग वहां पहुंचे। जिन्हें देख आरोपी बाइक स्टार्ट कर फरार हो गया। पुलिस ने शिकायत पर तुरंत मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। आरोपी के बारे में फिलहाल कोई सुराग हाथ नहीं लगा है।

मंदिर में रह रहा बाबा बच्ची का अपहरण कर हुआ फरार, पलवल में दबोचा

मुरथल, सोनीपलः थाना क्षेत्र के गांव के मंदिर में रह रहा एक बाबा 12 साल की एक बच्ची को बहकाकर अपने साथ ले गया। जब बच्ची के परिवारजनों को मामले का पता लगा तो उन्होंने पुलिस को अवगत करवाया। जिस पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए मुकदमा दर्ज कर आरोपी को पलवल में गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी के कब्जे में बच्ची को बरामद कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश कर दो दिन के रिमांड पर लिया है।

थाना क्षेत्र के गांव के रहने वाले व्यक्ति ने पुलिस को बताया कि उनके गांव में मंदिर में रहनेवाला बाबा मूलरूप से हिसार निवासी रवि उर्फ सीताराम उर्फ रामकिशोर उसकी 12 साल की बच्ची सको बहकाकर ले गया है। आरोपी के खिलाफ थाना पुलिस ने मुगदमा दर्ज कर लिया था।

(अमर उजालाः 1-2-2020)

बच्चियों से दुष्कर्म को आरोपी बाबा लक्ष्यनंद पहुंचा सलाखों के पीछे

पंचकुलाः रायपुर रानी स्थित छोटा त्रिलोकपुर के एक आश्रम मे 14 वर्षीय दो बहनों से दुष्कर्म के आरोपी बाबा लक्ष्यनंद को गिरफ्तार करने के बाद वीरवार को उसे कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। महिला पुलिस ने आरोपी लक्ष्यनंद को बुधवार की रात गिरफ्तार कर सिविल अस्पताल-6 में उसका मेडिकल करवाया था। वीरवार को कोर्ट में पेश करने से पूर्व उसका दोबारा मेडिकल कराया गया। आरोपी को कोर्ट में पेश करने से पूर्व पुलिस ने उससे पूछताछ कर पता लगाने के प्रयास किया कि वह कितने समय से बच्चियों से दुष्कर्म कर रहा था।

यह है मामला-बच्चियों ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 25 जनवरी को वे अपने भाइयों सहित रायपुररानी स्थित छोटा त्रिलोकपुर में लक्ष्यनंद के आश्रम में सेवा के लिए आई थी। आश्रम में आरोपी लक्ष्यनंद ने दोनों बहनों और भाइयों को अलग-अलग कमरों में रखा। इसके बाद आरोपी तीन दिन तक उनसे दुष्कर्म करता रहा। बच्चियों को घर भेजने से पहले आरोपी लक्ष्यनंद ने उन्हें धमकाया कि यदि उन्होंने किसी को उसकी करतूत के बारे में बताया तो वह उन्हें जान से मार देगा।

-अमर उजाला 31-1-2020

महिला ने ज्योतिषी पर लगाए दुष्कर्म के आरोप

संवाद न्यूज एजेंसी

घरौंडा। शहर के एक नाम गिरामी ज्योतिषी व तन्त्र विधा शास्त्री पर एक महिला ने दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। रेप की घटना बीती 14 मार्च की बताई जाती है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़िता ने आरोप लगाया है कि ईलाज के बहाने आरोपी ने उसे सम्मोहित किया और उसके साथ दुष्कर्म को अंजाम दिया। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत के आधार पर आरोपित तांत्रिक के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

मनोज कुमार, थाना प्रभारी घरौंडा के अनुसार एक विवाहिता द्वारा तांत्रिक पर दुष्कर्म करने के आरेप लगाए गए है। पीड़िता ने शिकायत दी है। महिला की शिकायत के आधार पर तांत्रिक के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी गई है।

(अमर उजाला 20-3-20)

टीवी चैनल पर भविष्य बताने वाला कार चोरी में अरेस्ट

प्रेस. नई दिल्ली

कई न्यूज और धार्मिक चैनलों में लोगों को भविष्य बताने वाला एक ज्योतिषी चोरी की कारें खरीदने के आरोप में सा ऊथ दिल्ली पुलिस के हत्थे चढ़ा है। जानकारी के मुताबिक, आरोपी ने पूर्व राष्ट्रपति के साथ तक तस्वीरे खिंचवाई हुई हैं। वृंदावन निवासी एमबीए डिग्रीधारी ज्योतिषी नीतीश शास्त्री चोरी की लग्ज़री कारें खरीदता था। पुलिस ने नीतीश के साथी को भी गिरफ्तार किया है जो कारें चुराकर उसे बेचता था। पुलिस ने बीएमडब्ल्यू ऑडी, टयोटा इनोवा और वॉक्सवेगन की मंहगी कारें आरोपियो से बरामद की है। साऊथ दिल्ली के डीसीपी रोमिल वानिया ने बताया कि 41 साल के नीतीश के अलावा 45 साल के जॉय विज की भी गिरफ्तारी हुई हैं। नीतीश वृंदावन का रहने वाला है। ज्योतिषी का काम करता हैं। वह कई न्यूज और धार्मिक चैनलों पर भाग्य बताने वाले शो में दिख चुका है। साथ ही प्रॉपर्टी पेशे से भी जुड़ा हुआ है। वहीं, जॉय फरीदाबाद की ग्रीन फील्ड कालोनी का रहने वाला है। जॉय जिस मंहगी कार में चाबी लगी हुई पाता था, चुराकर भाग निकलता था। ड्राईवर की नौकरी करते हुए वह कई बार अपने मालिकों की कार भी चुरा चुका था। 1995 में भी इसकी गिरफ्तारी हुई थी। पुलिस ने बताया कि 20 फरवारी को हौजखास इलाके से एक इनोवा कार चोरी हुई थी। मामले में पुलिस जांच करते हुए जॉय तक पहुंची।

गुजरातः मंदिर में छप रही जाली करंसी, पुजारी और 5 अन्य गिरफ्तार

एजेंसियांः गुजरात, 10 मई , राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) ने गुजरात के सूरत स्थित एक मंदिर में छप रही जाल करंसी के मामले में पर्दाफाश किया है। इस मामले में मंदिर के पुजारी समेत 6 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पता चला है कि यह सारे इसी मंदिर से जाली करंसी छाप रहे थे। इस मामले का संगीत पक्ष यह है कि मंदिर का पुजारी भी इस घिनौने कार्य में शामिल था।

ज्ञातव्य हो कि इन्होंने बढ़िया स्कैनर और लेज़र प्रिंटर इस मंदिर में रखे हुए थे।

अंधविश्वास के चलते

कोरोना के लिए ताबीज बेचने वाला गिरफ्तार

लखनऊः कार्यालय संवाददाता

कोरोना को कमाई का जरिया बनाने वाले कथत तांत्रिक को वजीरगंज पुंलिस ने शनिवार को गिरफ्तार किया। उस पर ताबीज और झांड़फूंक के जरिए कोरोना भगाने का लोगों ने आरोप लगाया है। इंस्पेक्टर वजीरगंज दीपक दुबे के मुताबिक उसने कई जगह कोरोना भगाने के बैनर व पोस्टर लगाए थे। मामले की जानकारी मिलने पर पोस्टर लगवाने वाले व्यक्ति की पहचान जवाहर नगर निवासी अहमद के रूप में हुई है। अहमद के खिलाफ पांबंदी की कार्रवाई के साथ ही धोखधड़ी की धारा में रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

नेपाली युवती को भारत में बलि देने की योजना में सात गिरफ्तार

नवलपरासी (नेपाल)- महानगरीय प्रहरी द्वारा एक युवती को तांत्रिक पूज के बाद भारतीय क्षेत्र में बलि दिए जाने की योजना की शिकायत मिलने पर सात लोगों को गिरफ्तार किया गया। काठमांडू प्रहरी परिसर डीएसपी होविंद्र बोगटी ने बताया कि नेपाली युवती को मॉडलिंग का प्रलोभन देकर उसे अच्छी रकम मिलने का झांसा दिया गया था। प्रस्ताव युवती ने मान लिया और उसे तांत्रिक पूजा के लिए विराटनगर लाया गया। पूजा के बाद से भारतीय सीमा में ले जाने की तैयारी थी लेकिन युवती को अंदेशा हुआ और उसने इसकी शिकायत की। इसके बाद पहरी टीम आरोपियों की हर गतिविधि पर नजर रखनी शुरू की। इस बीच यह बात सामने आई कि युवती को भारतीय क्षेत्र में बलि देने की योजना बनाई जा रही है। -ब्यूरो अमर उजाला-28-12-2019

11 रुपए के ताबीज से इलाज का दावा

पुराने लखनऊ के डालीगंज के पास कोरोना वाले बाबा का बैनर हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। बाबा ने दावा किया है कि जिन लोगों के पास मंहगा मास्क खरीदने के पैसे नहीं हैं, वे बाबा से 11 रुपये का ताबीज लेकर कोरोना वायरस को खत्म कर सकते हैं। हालांकि जब बाबा को फोन किया गया तो बातचीत के दौरान उन्होंने अपना मोबाइल फोन बंद कर लिया। इसके अलावा मड़ियांव इलाके में एक बाबा दस रुपये लेकर झाड-फूंक के जरिए कोरोना वायरस खत्म करने का दावा कर रहा हैं। इसके अलावा शहर की पुरानी दरगाहों के आगे भी कोरोना वायरस से लड़ने के ताबीज लोगों को बेचे जा रहे हैं।

झाड़ा लगा ठीक करने वाला फौजी पकड़ा

भास्कर न्यूजः शाहजहांपुर

पुलिस ने थाना क्षेत्र के गांव भनुगड़ा अहीर से बकायदा प्रचार-प्रसार कर बीमारियों का झाड़ा लगाने वाले अमरसिंह फौजी पुत्र घीसाराम यादव को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारर्री सुरेंद्र रावत ने बताया कि अमरसिंह फौजी अपने परिवार के साथ बकायदा विज्ञापन बोर्ड लगाकर मोतीझरा, कोरोना, मलेरिया सहित विभिन्न बीमारियों का झाड़ा लगाता है। जिसकी सौ रुपये फीस भी निर्धारित है। अमर सिंह फौजी से झाड़ा लगवाने हरियाणा, एनसीआर एवं राजस्थान के भी लोग आते हैं। सोमवार को ग्रामीणों की शिकायत पर जब पुलिस मौके पर पहुंची तो उस समय भी बड़ी संख्या में लोग यहां झाड़ा लगवाने आये हुए थे। पुलिस ने फौजी को अफवाह फैलाने एवं लोगों को ठगने के मामले में गिरफ्तार किया है।

विवाहिता की बलि का प्रयास तांत्रिक जेठ ने रची साजिश

बरेली। 8 जनवरी (एजेंसी) शहर में एक सनसनीखेज मामला सामने आया है जिसमे तांत्रिक जेठ, ननद ओर ननदोई ने घर की बहू की बलि देने की कोशिश की। महिला के शरीर पर चाकुओं से लगे 101 घावों पर डाक्टरों को 300 टांके लगाने पड़े। मामला शहर के बारादरी थाने के मुहल्ला सिकलापुर का है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपित ननद को गिरफ्तार कर लिया है जबकि तांत्रिक जेठ व ननदोई फरार हैं। बरेली के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र पांडेय ने बताया कि आरोपी ननद असामान्य हरकतें कर रही है। उसने पीड़िता रेणु को चाकू मारने की बात कबूल कर ली है। रेणु का इलाज कर रहे डा. मुकुल अग्रवाल ने बताया कि मरीज के शरीर पर करीब 101 जख्म हैं जिन पर 300 टांके लगाने पड़े। दो दर्जन से ज्यादा टांके तो सिर्फ चेहरे पर आए हैं, हालत नाजुक है। इंस्पेक्टर बारादरी नरेश त्यागी ने बताया कि आरोपी ननद मोनी को जेल भेज दिया गया है। उसने घटना कबूल ली है। अन्य की तलाश में दबिश दी जा रही है। भोजी पुरा के मार्डन विलेज घंघोरा गांव निवासी रेणु की शादी आठ साल पहले सिकलापुर में धर्मशाला वाली गली निवासी संजीव से हुई। पिछले कुछ महीनों से रेणु के ससुर जगदीश बीमार चल रहे थे। रेणु के जेठ मूली और ननद मोनी तांत्रिक क्रिया करते हैं। तीनों ने मिलकर पिता को तंत्र विद्या से ठीक करने के लिए रेणु की बलि देने की साजिश रची। फिर रविवार देर रात उसकी बलि देने की कोशिश की। इसके लिए रेणु के चेहरे समेत पूरे शरीर पर चाकू से 101 जख्म किए गए थे। इस दौरान किसी तरह रेणु जान बचाकर घर से भाग निकली थी। रेणु घर से लहूलुहान होकर निकली थी और बरेली कॉलेज पहुंच कर बेहोश हो गई। इस दौरान गश्त पर निकली पुलिस ने उसे जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया। पति, सास, और ससुर आदि को सब पता था, लेकिन उन्होंने चुप्पी साध रखी थी। महिला को होश आया, तब उसने पूरी घटना बताई।

(*दिनांकः 9-1-20202)*

इलाज में हाथ चूमता था बाबा, संपर्क में आए 19 लोग

रतलाम के नयापुरा में कोरोना महामारी का इलाज कराने भी पहुंच गए

रतलाम (नई दुनिया प्रतिनिधि)ः नयापुरा के झाड़फूंक करने वाले असलम बाबा की कोरोना संक्रमण से 4 जून को मौत के बाद उसके संपर्क में आए लोगों के पॉजिटिव निकलने का सिलसिला जारी है। बाबा के सीधे संपर्क में आनेवालों में 19 पॉजिटिव हैं। प्रशासन ने 29 बाबों को क्वारटकाइन सेंटरों पर भेजा है।

मंगलवार रात आई रिपोर्ट में जिले में 24 नए मरीज सामने आने के बाद हड़कंप मच गया है। हैरानी की बात यह है कि सतर्कता को लेकर इतना प्रचार प्रसार करने के बाद भी कुछ लोग बाबा के पास कोरोना का इलाज कराने पहंच गए थे। बाबा लोगों का हाथ चूमकर कोरोना को भगा रहा था।

चार जून को बाबा की कोरोना संक्रमण से मौत के बाद कांटेक्ट ट्रेनिंग में कुछ अन्य लोगों को क्वारंटाइन कर सैंपलिंग की गई तो 7 जून को मिली रिपोर्ट में नयापुरा के छह पॉजिटिव मिले।

'छौपदी' में रहने के लिए मजबूर करने वालों को हो सकती है जेल

काठमांडूः नेपाली सरकार ने 'छौपदी' कुप्रथा पर लगाम लगाने के लिए अहम कदम उठाया है। मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को घर के बाहर 'छौपदी' में रहने के लिए मजबूर करने वालों को सरकार योजनाओं से हाथ धोना पड़ सकता है। इतना ही नहीं, महिलाओं के खिलाफ इस प्रकार की पड़ताड़ना में शामिल लोगों को तीन महीने की जेल और जुर्माना भी देना होगा। सरकार ने यह कदम इस महीने की शुरुआत में अछाम जिले में एक महिला परबाती बुडा रावत (21) की मौत के बाद उठाया है। इस सिलसिले में पुलिस ने महिला के बहनोई को गिरफ्तार किया था। -अमर उजाला : 28-12-2019

तर्कशील सेमिनार का आयोजन किया गया

पूण्डरी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की मीटिंग सम्पन्न

दिनांक 15-3-2020 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा की एक बैठक का प्रदेशाध्यक्ष श्री फरियाद सिंह सनियाणा की अध्यक्षता में आयोजन किया गया। सर्वप्रथम पूण्डरी इकाई के प्रधान मान सिंह सैनी ने बैठक में पहुंचे। सभी प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए अपनी अपने विचार रखे। प्रतिनिधियों के आपसी परिचय के पश्चात् रामेश्वर जींद ने अपनी बात रखते हुए कहा कि सोसायटी के कार्यक्रमों में नवयुवकों को आगे बढ़ना चाहिए। सुभाष तितरम ने अपने संबोधन में वर्ण व्यवस्था एवं आर्य समाज की वास्तविकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि अनपढ़ एवं अज्ञानता अंधविश्वासों की जननी है। इकाई नग्गल-मटेहड़ी के प्रधान श्री हरबलास ने बताया कि उनके संयुक्त परिवार के सभी 25 सदस्यों ने शरीरदान करने का शपथ-पत्र भरा हुआ है। उन्होंने ज्वाला जी में हर समय ज्वाला प्रकट होने के वैज्ञानिक कारणों पर भी प्रकाश डाला। इकाई सफीदों से मा. कर्ण सिंह ने बताया कि उनका पूरा परिवार पूरी तरह से अंधविश्वासों से मुक्त हो कर एक आनन्ददायक जीवन व्यतीत कर रहा है। जीत सिंह जांडली ने अपनी मधुर आवाज में महिलाओं को समर्पित एक रागनी प्रस्तुत की।

यमुनानगर के साथी राजेश बिंद्रा ने कहा कि जो व्यक्ति तार्किक चिंतन वाला होगा, वही सही रूप में मानवतावादी हो सकता है। जगत सिंह साकरा ने वैज्ञानिक चिंतन को और आगे बढ़ाने पर बल दिया। सुखदेवसिंह यमुनानगर इकाई के प्रधान ने पदार्थ एवं आध्यात्मवाद विषय पर अपने विचार रखे। बलवान रिढाना ने शहीद भगत सिंह की जीवनी पर एक रागनी प्रस्तुत की।

पत्रिका 'तर्कशील पथ' के संपादक बलवंत सिंह लेक्चरार ने अपनी बात रखते हुए सभी साथियों को अधिक से अधिक पुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का सुझाव दिया। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने आगे कहा कि द्वंद्वात्मक भौतिक के अध्ययन के पश्चात ही कोई व्यक्तिसही रूप में तर्कशील अथवा नास्तिक बन सकता है। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रदेशाध्यक्ष फरियाद सनियाणा ने अपनी कथनी और करनी में एकरूपता रखने का तथा अपने अच्छे व्यवहार से सभी लोगों के दिलों में सम्मानजनक स्थान बनाने पर बल दिया। कुछ दिन पूर्व उन्होंने एक ढोंगी द्वारा रशिफल एवं राशियों के पत्थरों की अंगूठियां बेचने वाले पाखण्ड का पर्दाफाश किया था। उस ढोंगी द्वारा सोसायटी के सदस्यों के सामने लिखकर दिया हुआ माफीनामा भी दिखाया।

कार्यक्रम के अन्त में प्रसिद्ध जादूगर सम्राट अशोक कुमार ने विभिन्न जादू के आईटम दिखाकर वहां पर उपस्थित कार्यकर्ताओं का मनोरंजन किया, व उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि शशिबाला पत्नी मान सिंह सैनी द्वारा पूरे प्रोग्राम का सुचारू रूप से मंच संचालन किया। उन्होंने बेहतरीन मंच संचालन करते हुए वहां पर उपस्थित कार्यकर्ताओं के मन पर अमिट छाप छोड़ी। सुभाष तितरम ने पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई। कार्यक्रम की सफलता में पूंडरी इकाई के साथी रामफल सैनी, कृष्ण हलवाई एवं मान सिंह सैनी का विशेष योगदान रहा। अन्त में कृष्ण हलवाई द्वारा प्रदेश भर से आए हुए कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करते हुए अपनी बात रखने के साथ बैठक संपन्न हो गई।

मैं बोलता हूं तो इल्जाम है बगावत का
मैं चुप रहूं तो बड़ी बेबसी सी होती है।
-बशीरबद्र

केस रिपोर्ट

अनैतिक हालत में देखने पर

-बलवंत सिंह, लेक्चरार

गुरनाम सिंह अपने परिवार सहित गांव से बाहर अपने खेतों मे बनाए हुए मकान में रहता है। उसके दो भाई भी उसके आसपास ही बनाए गए अपने मकानों में रहते हैं। गुरनाम सिंह एवं उसके भाई सभी काफी बड़े जिमींदार हैं। गुरनाम सिंह का एक ही पुत्र जसकीरत है, जो कि दसवीं कक्षा का छात्र है। जसकीरत के पैदा होने के बाद गुरनाम व उसकी पत्नी ने परिवार नियोजन अपना कर अगे और सन्तान उत्पन्न नहीं की थी। आठवीं कक्षा तक तो जसकीरत अत्यन्त सौम्य स्वभाव का लड़का था। वह तब तक अपने मां-बाप का पूरी तरह से आज्ञाकारी पुत्र था। पढ़ाई एवं खेलों में वह हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहता था। उस समय तक गुरनाम एवं उसकी पत्नी में आपस में कभी कभार झगड़ा व तनाव हो जाता था परंतु जसकीरत की कभी कोई शिकायत नहीं आई थी।

हालांकि गुरनाम सिंह 30-32 एकड़ जमीन का मालिक था परंतु उसने और अधिक धन कमाने के उद्‌देश्य से एक कंबाईन खरीद ली थी। कंबाईन को चलाने के लिए उसने एक ड्राईवर तथा अन्य वर्कर रखे हुए थे परंतु फिर भी वह लगभग हर सीजन में कंबाईन के साथ चला जाया करता था। कंबाईन पर जाने के समय और कंबाईन का सीजन लगा कर वापिस आने पर गुरनाम सिंह की पत्नी प्रायः उससे अत्यधिक झगड़ा किया करती थी। इसी दौरान गुरनाम की भाभी के साथ उसकी पत्नी का का झगड़ा शिखर पर पहुंच गया था, जिसके कारण उन देवरानी और जेठानी का आपस में बोलचाल बिल्कुल ही बन्द हो गया था।

बचपन से लेकर आज तक जसकीरत अपने मां एवं बाप का तथा अपनी मां तथा ताई का आपस में झगड़ा देखता चला आ रहा था। तब वह इस लड़ाई-झगड़े को कोई महत्व नहीं देता था। वह तो बस अपनी पढ़ाई में अथवा अपने खेल में मग्न रहता था। उसके लिए अपने पिता और तायाजी (ताऊजी) के घर में कोई फर्क नहीं होता था। वह अधिकतर अपने ताऊ जी के बच्चों के साथ खेला करता था। तथा उन्हीं के साथ अपनी ताई के हाथों से वह पर खाना भी खा लिया करता था। उसका ताऊजी बच्चों के खाने-पीने की चीजें अपने बच्चों के साथ-साथ उसे भी नित्यप्रति दे दिया करता था, बल्कि उसे तो बाकियों से अधिक ही दे दिया करता था। ऐसा कई सालों तक चलता रहा।

अब जब जसकीरत दसवीं कक्षा में पढ़ रहा था तो उसका व्यवहार बिल्कुल बदल गया था। वह बात-बात पर अपनी मां के साथ लड़ने -झगड़ने लग गया। अब जब भी उसके मां और बाप में किसी बात को लेकर आपस में झगड़ा हो जाता तो वह अपने बाप का पक्ष लेकर अपनी मां की ऐसी की तैसी कर देता। उसका क्रोध देखकर उसके मां-बाप आपसी झगड़े को भूल कर जसकीरत को शांत करने में अपनी शक्ति लगा देते परंतु वह शांत होने के जाये घर से बाहर निकल कर किसी दोस्त के पास चला जाता। अपने रिश्तेदारों एवं दोस्तों के साथ उसका व्यवहार अत्यन्त मधुर रहता था। उसके सभी रिश्तेदार एवं दोस्त मित्र उसके मृदु व्यवहार का गुणगान करते नहीं थकते थे, परंतु वह अपनी मां के साथ छोटी-छोटी बात पर ही आग बबूला हो जाता था। ऐसे में वह अपनी पढ़ाई में भी पिछड़ता चला जा रहा था।

जसकीरत के व्यवहार से परेशान हो कर अंधविश्वासी मानसिकता के कारण, घर वाले किसी बाबा के पास 'पुच्छा लेने' हेतु पहुंच गये। उस बाबा ने जसकीरत पर ओपरी-पराई का साया बता दिया तथा मोटी दक्षिणा लेकर उसकी सुरक्षा के लिए एक ताबीज बना दिया। जब घर आकर उस ताबीज को जसकीरत के गले में पहनाने लगे तो वह अत्यधिक क्रोधित हो उठा और उसने अपनी मां को एक-दो थप्पड़ जड़ दिए तथ उस ताबीज को उसने तोड़-मरोड़ कर फैंक दिया।उस बाबा द्वारा जसकीरत पर 'ओपरी-पराई की कसर' वाली बात ने उस परिवार के अंधविश्वास की गहरी खाइयों की ओर धकेल दिया। अब वे एक से बढ़कर एक बाबाओं तांत्रिको-मांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों की शरण में जाने लगे। ज्यों-ज्यों वे बाबाओ की शरण

में जा कर अपने धन की लूट करवाते रहे, त्यों-त्यों जसकीरत और अधिक क्रोधवान होता चला गया।

अन्त में जब वे हरतरफ से निराश हो चुके थे तब उनके एक रिश्तेदार ने, जो सोसायटी के जनहित कार्यों से परिचित था, उन्हें मेरा पता देकर मेरे पास रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केन्द में भेज दिया। मैंने पहले गुरनाम से व उसकी पत्नी से बातचीत करके आवश्यक जानकारी जुटाई। फिर जसकीरत को अपने पास बुला लिया। पहले तो वह मेरे साथ किसी भी प्रकार का सहयोग नही कर रहा था, परंतु काफी लम्बे समय तक प्रयास करनेपर वह मेरे मनोवैज्ञानिक प्रभाव में आता चला गया। मेरे द्वारा मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग के दौरान पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए उसने अपनी मनोव्यथा को इस प्रकार से व्यक्त किया।

उसने बताया कि बचपन से वह अपने मांबाप की इकलौती संतान होने के कारण अत्यधिक लाडप्यार से पाला पोसा गया था। अत्यधिक लाडला होने के बावजूद भी वह अपनी मां एवं बाप का पूर्णतः आज्ञाकारी था। यद्यपि उसके मां एवं बाप छोटी-छोटी बातों को लेकर आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे? परंतु वह उन दोनों का बराबर से सम्मान करता था। अपने मातापिता के साथउ सके ताऊ जी व ताई जी भी उसे अपने बच्चों की भांति ही स्नेह करते थे। खास कर के उसके ताऊ जी समय-समय पर अपने बच्चों के साथ-साथ उसे भी खिलौने एवं खाने-पीने की चीजें ला कर देते रहते थे। एक प्रतिष्ठित स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने के कारण वहां पर बेहतर अनुशासन एवं पढ़ाई वाला माहौल होने से उसका मन पढ़ाई में बहुत लगता था। नियमित तौर पर होमवर्क करने तथा मन लगा कर पढ़ाई करने से अपनी कक्षा में उसकी गिनती टॉप के विद्यार्थियों में होती थी। नौवीं कक्षा तक वह पढ़ाई में टॉप पर रहा था।

दसवीं कक्षा में दाखिला लेने के पश्चात् उहें स्कूल में जाते हुए उन्हें अभी कुछ दिन ही हुए थे कि एक दिन स्कूल प्रबंधन ने किसी कारण से स्कूल की समय से पहले ही छुट्टी कर दी थी। स्कूल की वैन सभी बच्चों को गांव में उनके घरों के पास छोड़ कर चली गई। जसकीरत खुशी-खुशी अपना स्कूल बैग उठाए घर की ओर चल पड़ा। घर के गेट से जब वह चुपके से अंदर दाखिल हुआ तो कमरे के अंदर से धीमे स्वर में किसी की बातचीत होती हुई सुनाई दी। कमरे का दरवाजा बंद होने के कारण उसने एक खिड़की के छोटे से सुराख में से कमरे के अंदर झांका। कमरे के अंदर का दृश्य देख कर उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। उसे लगा जैसे कि उसके सिर पर आसमान फट पड़ा हो। अंदर बैड पर उसकी मां एवं उसका ताऊ पूर्णतः आपत्तिजनक अवस्था में आपसे में लिपटे हुए पड़े थे। अपनी मां को इस हालत में देखकर उसका रोम-रोम क्रोध से भर उठा। उसने आंगन में पड़ा एक डंडा उठाया और अपनी मां एवं ताऊ को मारना शुरू कर दिया। शोर सुन कर उसके चाचा एवं ताऊ के परिवारों के सदस्य वहां पहुंच गए। तब तक उसका ताऊ जो कि शरीरिक रूप से जसकीरत से बलशाली था, उसने उसे काबू में कर लिया। परिवारजनों के सामने उहोंने बात को गोलमोल कर के हवा हवाई कर दिया। उस दौरान गुरनाम सिंह कंबाईन के साथ मध्यप्रदेश में गया हुआ था। वापिस आने पर भी वह इस घटना से अनभिज्ञ ही रहा, क्योंकि जसकीरत यह बात अपने पिता को बताने में हिचकिचाता रहा और उसकी मां तथा ताऊ गुप चुप ही अपने अपने कामों में व्यस्त रहे। वैसे भी चोर अपनी चोरी की बात कभी किसी के साथ साझा नहीं करते। परंतु जसकीरत के मन में क्रोध का बवंडर विशाल आकार लेता चला गया। अपने ताऊ के साथ लड़ाई करना अभी उसे बस में नहीं था, परंतु अपनी मां के साथ वह छोटी-छोटी बात पर झगड़ा करने लग गया। जब कभी गुरनाम सिंह उसे ऐसा करने से रोकता तो वह अपने बाप के साथ भी झगड़ पड़ता था। वास्तविक कारण को समझने के बजाए जब वे बाबाओं की शरण में जाने लगे तथा बाबाओं ने जब उस पर ओपरीपराई की कसर का होना बता दिया तो जसकीरत और अधिक उदण्ड होता चला गया। पढ़ाई की ओर ध्यान न देने के कारण वह पढ़ाई में भी पिछड़ता चला गया।

जसकीरत की मनोव्यथा सुनने के पश्चात् मैंने उसकी मां के साथ भी अकेले में बातचीत की। सब मैंने उसे जसकीरत की वास्तविक समस्या के बारे में अवगत कराया और उनकी समस्या के समाधान के लिए उसे सहयोग करने के लिए अनुरोध किया। पहले पहले तो वह अपने द्वारा किये गये अनैतिक क्रिया कलापों के बारे में ना-नुकर करने लगी। परंतु जब मैंने उसे मनोवैज्ञानिक ढंग से मानसिक दबाव देकर पूछताछ की

तो उसने अपने द्वारा किये गये अनैतिक क्रियाक्लापों की बात को स्वीकार कर लिया। साथ ही उसने अपने द्वारा अनैतिक रास्ते पर चलने के कारणों का खुलासा करते हुए बताया कि उसके मां-बाप ने गुरनाम सिंह के साथ उसकी शादी उसकी सहमति के बगैर गुरनाम की जमीन-जायदाद को देखते हुए कर दी थी। गुरनाम सिंह का कद-काठ एवं शक्ल-सूरत उसे पसंद नहीं थी, परंतु अपने मां-बाप की इज्जत का ख्याल रखते हुए वह शादी करके अपने ससुराल आ गई थी। शादी के कुछ समय पश्चात् जब उनके घर मे पुत्र का जन्म हो गया तो उसने पुत्र मोह में उसके लालन-पालन में स्वयं को व्यस्त कर के अपने आपको अपने ससुराल के अनुसार ढाल लिया था। अब अपना पति एवं पुत्र दोनों ही अत्यन्त प्रिय थे। परंतु गुरनाम सिंह के सिर पर और अधिक धन कमाने की धुन सवार थी। उसने धन कमाने की लालसा में एक कंबाईन खरीद ली थी।अब वह और अधिक कमाई करने की लालसा में सीजन के समय कंबाईन के साथ मध्यप्रदेश अथवा किसी अन्य राज्य में चला जाता था और लम्बे समय तक घर वापिस नहीं आता था। लम्बे समय तक अपने पति से दूर रहने कारण उसके यौवन की उमंगें व अभिलाशाएं उसे कचोटती थीं। अपने पति के प्रेम सुख से लम्बे समय तक वंचित रहने के कारण वह उदास और परेशान हो जाती थी। ऐसे में एक दिन अकेली उदास देखकर उसके जेठ ने उसकी भावनाओं को कुरेदते हुई कुछ बातें कह दीं। उसका जेठ अपने भाई गुरनाम सिंह से शक्ल-सूरत एवं डीलडौल में काफी सुंदर दिखाई देता था। जेठ की भावनात्मक बातों ने उसकी उमंगों एवं अभिलाशाओं को मानो पंख प्रदान कर दिये। पति कमाई करने के लिए बाहर गया हुआ था। और पुत्र रोजाना स्कूल में चला जाया करता था। वह घर में अकेली ही होती थी। घर का जो थोड़ा बहुत काम होता था, उसे वह जल्दी से निपटा कर विचारों में मग्न हो कर बैठ जाया करती थी। ऐसे में उसे जेठ ने जब दो-चार बार उसके साथ स्नेहमयी, भावनात्मक एवं उकसाहट वाली बातचीत की तो वह मन ही मन में अपने जेठ की ओर आकर्षित होने लग गई। अब वे रोजाना ही किसी न किसी बहाने से लम्बी-लम्बी बातचीत करने लग गए। एक दिन वे बातें करते करते बेडरूम में बैठ गये। ऐसे में भावानओं में बह कर पहले तो वे आपस में आलिंगनबब्द हो गये और फिर मर्यादा की सभी सीमाएं लांघकर एक दूसरे में खो गये।

अब उनका यह सिलसिला नियमित रूप से चलने लग गया। दोनों के घर वालों को इस क्रिया की रती भर भी खबर नहीं थी। अतः वे निश्चिंत हो कर अपनी वासनाओं की नदी में तैरते चले जा रहे थे। परंतु हर बुरे काम का बुरा नतीजा एक दिन सामने आ ही जाता है। एक दिन जब जसकीरत स्कूल से जल्दी वापिस आ गया और उसने अपनी आंखों से उन्हें अपनी वासनाओं में डूबे हुए देख लिया तो उन्हें लग जैसे उन पर घड़ों पानी गिर गया हो। जब जसकीरत डंडा लेकर उन्हें पीटने लगा तो अपने बचाव में जेठ ने जसकीरत को पकड़ कर गिरा लिया। जब तक परिवार वाले वहां पर पहुंचे तब तक वे संयमित हो चुके थे। अतः उन्होंने उस सारा घटनाक्रम को गोलमोल बातों के सहारे ठप्प कर दिया। और उल्टे जसकीरत को ही मानसिक तौर पर उखड़ा हुआ घोषित कर दिया।

अब सारी बात साफ हो जाने पर मैंने उसे उसे परिवार एवं खास करके उसके पुत्र के भविष्य का वास्ता देकर उसे सीधे रास्ते पर आने एवं मर्यादा में रहने लिए प्रेरित किया। सारी वस्तुस्थिति को समझ कर उसने पूर्णतः संयम रखने एवं सामाजिक मार्यादा में रहकर अपना जीवन व्यतीत करने का मेरे सामने प्रण किया। उस समय पश्चाताप के आंसू उसकी आंखों से निकल कर उसके वस्त्रों को भी भिगो रहे थे। उसकी तरफ से निश्चिंत हो कर मैंने जसकीरत को दोबारा से अपने पास बुलाया। और मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग द्वारा उसके क्रोध को शांत करने के बार-बार निर्देश दिये। साथ ही उसे समझाया कि अभी तक यह रहस्य उसको व उसकी मां को ही ज्ञात है, यदि इस बात को आगे बढ़ाओगे तो यह बात पूरे समाज में फैल जायेगी जिस का सामना उसका परिवार नही ंकर पायेगा। फिर हो सकता है कि उसका बाप अथवा उसकी मां में कोई अथवा दोनों आत्महत्या कर लें। मेरे इन स्पष्ट निर्देशों के द्वारा उसकी आंखें खुल गईं और उसका क्रोधवास्तविक रूप में शांत होना शुरू हो गया। उसके बाद तीन-चार बार परामर्श केन्द्र पर ला कर उसकी मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग की गई। उसके बाद उस घर में कभी ऐसी कोई भी परेशानी नहीं आई।

नोटः यह एक सत्य घटना है। परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हें

पहचान

-कुमार विकल

यह जो सड़क पर खून बह रहा है
इसे सूंघकर तो देखो
और पहचानने की कोशिश करो
यह हिंदू का है या मुसलमान का
किसी सिख का या ईसाई का
किसी बहन का या भाई का

सडक पर इधर-उधर पडे पत्थर के बीच दबे
टिफिन कैरियर से जो रोटी की गंध आ रही है
वह किस जाति की है

क्या तुम मुझे बता सकते हो
इन रक्त सने कपडों
फटे जूतों टूटी साइकिलों
किताबों और खिलौनों की कौम क्या है

क्या तुम बता सकते हो
स्कूल से कभी न लौटने वाली बच्ची की प्रतीक्षा में खडी
माँ के आँसुओं का धर्म क्या है
और हस्पताल में दाखिल
जख्मियों की चीखों का मर्म क्या है
हाँ मैं बता सकता हूँ
यह खून उस आदमी का है
जिसके टिफिन में बंद रोटी की गंध उस जाति की है
जो घर और दफ्तर के बीच साइकिल चलाती है
और जिसके सपनों की उम्र फाइलों में बीत जाती है

ये रक्त सने कपडे उस आदमी के हैं
जिसके हाथ मिलों का कपडा बनाते हैं
कारखानों में जूते बनाते हैं
खेतों में बीज डालते हैं
पुस्तकें लिखते हैं
खिलौने बनाते हैं
और शहरों की अंधेरी सड़कों के लैंपपोस्ट जलाते हैं

लैंपपोस्ट तो मैं भी जला सकता हूँ लेकिन
स्कूल से कभी न लौटने वाली बच्ची की
माँ के आँसुओं का धर्म नहीं बता सकता
जैसे जख्मियों के घावों पर
मरहम तो लगा सकता हूँ
लेकिन उनकी चीखों का मर्म नहीं बता सकता।

बाबा नानक की कीरती

ताजा कमाते
ताजा खाते
पेट की खातिर
प्रवास में रहते

रख्वते शहर-गांव
ये सारे

जो भी बनते
महल चौबारे

फिर भी ये क्यों
युगों-युगों से

फुटपाथों पे
रहें बेचारे

क्यों यही है
इनका इतिहास

भविष्य इनका
बस सप्रवास

क्यों नहीं सत्ता
इनपको जासनती!

क्यों नहीं
जानना चाहती ?

जबकि सारी
सभ्यता को
मजदूर की ताकत
ही तो है रचती
(कवि नामालुम)

शब्दों के जाल से उपचार करना एक भ्रम

–मेघ राज मित्र

लगभग एक दहाका पहले की बात है। एक अध्यापका के युवा पुत्र की मृत्यु बिजली का करंट लगने से हो गई थी। किसी तांत्रिक के कुछ मंत्रों के जाप से उस की मृतक शरीर को मिट्टी में दबा दिया गया। घटना के समय उपस्थित व्यक्तियों में से बहुतों का दावा था कि मंत्रों के प्रभाव से मिट्टी में दबाया गया नौजवान प्रमात्मा का नाम जपता हुआ उठ खड़ा होगा। वह अध्यापिका किसी समय मेरे साथ स्कूल में पढाया करती थी। और मैं भी चाहता था कि उसका पुत्र इस तरह ठीक हो जाए। उसका नौजवान पुत्र वापिस आ जाए परन्तु सब कुछ तो चाहने से नहीं होता। कई बार जमीनी हकीकतें कुछ और होती हैं। बडे दावे किए जाते हैं कि गुरूबाणी के कुछ शब्द सुनने अथवा सुनाने से कैंसर के मरीज ठीक हो जाते हैं। गीता में से कुछ श्लोक पढने से टींवी सदा के लिए अलोप हो जाती है। कुरान की आयतों भी कइयों की रीड़ की हड्डी का मनका ठीक देती हैं। बाईबल में से कोई कहानी गूंगे को बोलने और लंगडों का चलने लगा देती हैं। हम तर्कशील चाहते हैं कि ऐसा हो जाए। अस्पतालों की जरूरत ही न रहे, डाक्टर दफा हो जाएं, गरीब लोगों के घर महंगे उपचार के कारण बरबाद होने से बच जाएं, मरीजों के दुख दर्द मिट जाएं परन्तु अफसोस ऐसा नहीं हो सकता। बीमारियां किसी कारण से ही शरीर को नुकसान पहुंचाती हैं। कई बार यह कारण शरीर में से किसी पदार्थ की कमी होती है और कई बार किसी प्रदार्थ की मात्रा ज्यादा बढ़ जाती है।

कुछ शब्दों का उचारण न तो शारीरिक कमियों को पूरा कर सकता है और न ही किसी शरीरक लाभ को नष्ट कर सकता है। बेचारे कीटाणुओं के दिमाग भी इतने विकसित नहीं होते हैं कि वह शब्दों के अर्थ ही समझ सकें। बीमारियों को शब्दों से शरीर से बाहर निकालने की कला मेरे तो समझ से बाहर है। परन्तु धार्मिक शब्दों में एक कला जरूर है कि इस का असर लोगों की जेबों पर जरूर हो जाता है। मैं हजारों शब्द उचाराण वालों को जानता हूं जो लोगों की जेबों में से शब्दो के उचारण से ही पैसे निकलवा रहे हैं। वह लोगों को शब्दों से ठीक होने वाले व्यक्तियों की हजारों उदाहरण पेश कर देते हैं। उन को पता है कि लोगों ने तो इन बातों की जांच, पडताल करनी ही नहीं है और न ही उन्होनें यह जानने की कोशिश करनी है। मरीज जिस बीमारी की दावा करता है क्या उसको सच्च में ही यह बीमारी थी। अथवा जब उस के शब्दों से ठीक होने का दावा किया जाता है तो उस के बाद बीमारी के खत्म होने की पुष्टि डाक्टरों ने की अथवा नहीं या वह बीमारी कुछ समय बाद अपने आप ठीक होने वाली तो नहीं थी।

अब भारद्वाज के केस को ले लें। गुजरात का शहर सूरत के पत्रकार भारद्वाज को हड्डियों के कैंसर की बीमारी थी। लगभग साढे तीन बर्ष बेहतरीन अस्पतालों में वह अपना उपचार करवाता रहा। अपने कुछ रिश्तेदारों के कहने पर आखिर उस ने अपने उपचार को अलविदा कह दी और २००२ में पंजाब के शहर अमृतसर आ कर गुरबाणी का पाठ एक दो दिन सुना। कहा जाता है कि वह इस से ठीक हो गया। उस के सभी टैस्ट नार्मल हो गए। इस घटना के विवरण तो सभी समाचार पत्रों में छाप दिए गए परन्तु २००६ में उस की मृत्यु जो उसी कैंसर से हुई, का समाचार किसी भी समाचार पत्र ने नहीं छापा। आज सैंकड़ों वैबसाइटों पर वासु भारद्वाज के गुरबाणी के पाठ से ठीक होने का बात तो दर्ज है परन्तु किसी एक ने भी उस की मौत की पुष्टि नहीं की।

असल में अंधविश्वास फैला देने वाली खबरें तो बड़ी बड़ी सुर्खियां लगा कर छापी जाती हैं परन्तु मिटाने वाले समाचारों को समाचार पत्रों में जगह देने की कंजूसी की जाती है। यह जानबूझ कर किया जाता है या अनजाने में। यह बात कभी भी मेरी समझ में नहीं आई ?

कहा जाता है कि बीज मंत्रों से बीमारियां ठीक करने की सलाह देने से रोगियों का कोई नुक्सान नहीं होता। कई बार तो यह सलाह भी दी जाती है कि डाकटरी उपचार भी करवाते रहें और बीज मंत्रों का इस्तेमाल भी करते रहें। अगर मरीज ठीक हो गया तो ठीक होने का श्रेय अपने सिर बांध लेना है, अगर मर गया तो घड़ा डाक्टरों के सिर फोड़ देना है। उनके तो दोनों हाथों में लड्डू होता है। मरीज ने यह परख तो करनी ही नहीं कि मुझे ठीक बीज मंत्रों ने किया है अथवा डाक्टरी उपचार ने? बीज मंत्रों के असर के दावे हजारों मरीजों का उपचार बीच में ही छुड़वा कर उन को मृत्यु के नजदीक ले जाते हैं। इस बात की प्रवाह मेरे प्यारे भारत में किसी को भी नहीं। लीडरों से बात करें तो कहेंगे अगर बीस तीस हज़ार मर भी जाएंगे तो भी भारत को कोई फर्क नहीं पडता।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि शब्दों का मनुष्य पर असर मानसिक भी नहीं होता। मैं ऐसे असर खुद भी सुने और देखे भी हैं। मेरे गांव के एक बजुर्ग ने एक बार मुझे बताया कि एक दुकानदार के घर में कुछ कमरों में रूई भरी पडी थी। उस के लडके की नयी नयी शादी हुई थी। उस की पुत्रबधु उसके पति से पूछने लगी कि यह रूई क्यों रखी है? तो उस ने मजाक में कह दिया यह रूई तुमने कातनी है। बस यह बात उस के दिमाग पर घर कर गया। वह हर समय यही कहती रही कि मैं इतनी रूई कैसे कातूंगी? मायके वालों से अपनी लड़की की यह हालत देखी न गई और वह उसे अपने गांव ले आए। एक पड़ौसी ने जब इस लडकी की हालत जानी तो वह घर वालों को कहने लगा कि मैं आपकी लड़की को ठीक कर सकता हूं और घर वाले उस को लड़की के पास ले गए। वह लड़की को कहने लगा कि कल मैं तेरे ससुराल गया गया था, वहां तो आप के घर आग लग गई। लड़की पूछने लगी कि रूई भी जल गई है? उसने कहा कि हां रूई भी जल गई है। बस इतना कहने की जरूरत थी कि लडकी ठीक हो गई।

इस तरह की ही एक घटना हमारी तर्कशील लहर के इतिहास में घट चुकी हैं। बठिंडा के हाजी रतन गुरूदवारे के साथ वाले घर की बात है कि घर वाला बंदूक खरीद लाया। पत्नी पूछने लगी कि आप बंदूक क्यों लाये हो? तो वह कहने लगा कि बंदूकें घर में आई बुरी ही होती है। इससे कोई मुझे मार देगा या मैं किसी को मार कर जेल चला जाऊंगा। बस इतना कहने पर ही घर में घटनाओं का सिलसिला शुरू हो गया। जब भी उसके पति द्वारा बंदूक के बारे में कही हुई बात उस स्त्री के दिमाग में आती तो घर में कहीं न कहीं आग लग जाती।

कई बार मिठास से कहे गए शब्द दवा भी बन जाते हैं और कडवे शब्द डंक मार जाते हैं। शब्दों से रोगों का उपचार एक धंधा ही है, इस से ज्यादा कुछ भी नहीं।

मिनीसोटा का एक डाक्टर निलोन अपनी पुस्तक में लिखता है कि १९७० में उस ने पादरी कुलमैंन से ठीक होने के दावे किए हुए पच्चीस व्यक्तियों की लिस्ट ली। एक स्त्री जिस को फेफडों का कैंसर कहा गया था। उस को तो यह बीमारी है ही नहीं थी। एक रीड की हड्डी के मरीज को ठीक होने से बैल्ट उतारने क सुझाव दे दिया गया। दूसरे दिन उस की रीड़ की हड्डी टूट गई। चार महीने के बाद उस की मौत हो गई।

बीज मंत्रों से उपचार करने वालों के दावों की पडताल करने की जरूरत है। अगर उन के दावे सच्चे हैं तो अस्पताल उन के सपुर्द कर देने चाहिए। अगर वह अपने दावों पर पूरे नहीं उतरते तो उन की जगह जेलों में होनी चाहिए।

आखिर में मैं अपने लोगों को यह सलाह दूंगा कि १९३५ में भारत में औसत आयु पैंतीस बर्ष थी। बीज मंत्र तो उस समय भी थे। परन्तु अगर आज यह भारत में ही ६८ बर्ष हो चुकी है। यह किसी भी बीज मंत्र ने नहीं की अपितु आधुनिक डाक्टरी उपचारों ने की है। चेचक, टी.वी., पोलीयो जैसी बीमारियां अगर आज नियंत्रण में आई हैं तो यह किसी बीज मंत्र कर के नहीं अपितु नवीनतम डाक्टरी खोजों से हुई हैं। धरती पर मौजूद कुछ मानव इतिहास का पहिया पीछे को मोड़ने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। हालांकि वह यह जानते हैं कि अगर उन को पुरातन युग वाली हालतों में जीवन व्यतीत करने के लिए कहा जाए तो वह उसी समय हाथ खड़े कर जाएंगे। परन्तु फिर भी बीते युग उन को अच्छे लगते हैं? क्यों बीते युग के प्रशंसकों की जेबें हमेशा खुली रहती हैं।

मैं और मेरी विचारधारा

-बिक्कर सिंह आज़ाद

बालपन में मैं अपने आस-पड़ोस के लोगों का अनुसरण करते हुए धार्मिक समागमों में जाकर पाठ सुनने, मात्था टेकने एवं अरदास-प्रार्थना करने जैसे कर्म-कांडों में शामिल होता रहा हूं। थोड़ा बड़ा हुआ तो बिना कोई विशेष भावना में में बसाए गांव के गुरुद्वारा में स्वयं पाठ करता तथा पाठ उपरान्त स्वयं की लिखी हुई कोई साधारण सी तुकबंदी की गई रचना-कविता या गीत तुकबंदी आदि, जैसे -'बल्ले नानका, तेरे हुक्म तो बिना न पत्ता हल्ले नानका!' भी तरन्नुम में गा कर सुना देता-जिसका भाव-अर्थ था ' हे नानक! तेरी आज्ञा के बिना तो पत्ता भी नहीं हिलता। सुनकर गुरुद्वारा में हाज़िर श्रोताओं ने आश्चर्य से कहना कि इतनी सूझ-बूझ से पाठ करने वाला पाठी और ऊपर से कवि भी, यह तो छुपा रुस्तम निकला भाई!

मैं अपनी प्रशंसा सुनता तो फूल कर कुप्पा हो जाता।

आठवीं नौंवी कक्षा में था, जब समाचार पत्र व अन्य हल्का-फुल्का साहित्य पढ़ने की रूचि जागृत हो गई। दसवीं श्रेणी में आते-आते मैं ने कर्मसिंह ज़ख्मी, जसवन्त सिंह कंवल तथा नानक सिंह के बहुत सारे उपन्यास पढ़ डाले थे। उन्हीं दिनों में 1960 के आसपास उत्तर आधुनिक वैज्ञानिक विचारधारा की रोशनी फैलाने वाले मैगज़ीन प्रतीलड़ी के कारण ही मेरे अंदर अन्य प्रोगेसिव साहित्य पढ़ने की भूख उत्पन्न हुई। ये प्रीतलड़ी के संपादक गुरबख्श सिंह ही थे जो अपने लेखों में पाठकों को प्रेरणा देते थे कि पाठ या आखण्ड पाठ के भोग की रस्मों में जा कर समय बरबाद न किया करो। धार्मिक तीर्थयात्रियों की भीड़ में शामिल होने का कोई महत्त्व नहीं होता। उनके ऐसे तर्कशील विचारों के कारण ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने प्रीतलड़ी का बहिष्कार कर रखा था। मैं स्वंय के बारे में कह सकता हूं कि प्रीतलड़ी, तर्कशील तथा 'रूपांतर' जैसी अति उत्तम प्रगतिवादी पत्रिकाओं का पाठक होने के कारण ही आज नास्तिक सोच को धारण किए हुए हूं। इसी सोच के प्रभाव में ही मैं बाबा नानक के संदर्भ में किसी समय लिखी हुई अपनी कविता-'वाह रे नानक! तेरी आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं झूलता!' का विश्लेषण करते हुए अब सोचता हूं कि बाबा नानक की आज्ञा पालन को तो उनके सपुत्रों लखमी दास व श्री चन्द ने भी नकार दिया था। जब बाबा जी ने उनको कीचड़ भरे गढ़े में गिरा बर्तन बाहर निकालने को कहा था, तो ये पत्ता झूलने वाली तो बात ही अलग है। पत्ते तो हवा के चलने से झूलते हैं-हवा दबाव के कारण चलती है। अधिक सख्त उम्मस हो तो आंधी भी आ सकती है। इसमें बाबा नानक का क्या रोल हुआ? उम्मस का कारण सूर्य की तपिश बनती है। ऐसे ही ब्रह्माण्ड की हर हरकत का कारण मूल कोई विशेष वजह होती है- उस विशेष कारण को हम अपने अपने प्रभु, ईश्वर, खुदा व गुरु पीर की महिमा के साथ जोड़ देते हैं, जो कि हमारी अज्ञानता ही होती है।

बाल्यावस्था में ही मैं अकसर देखता था कि अमावस के पश्चात् पहले या दूसरे दिन के नए-नए दृष्टिमान हुए चन्द्रमा को बहुत आदर की निगाह से निहारते हुए हमारे बापू जी बाबा जी अपनी पगड़ी में से धागा निकाल कर चन्द्रमास की ओर फेंकते हुए मुंह में से 'बोल वाहेगुरू जी का खालसा, बोल वाहेगुरु जी की फतेह' का जयकारा गुजाते हुए और साथ ही कहते-'पुराना ले जा, नया दे जा', उनके ऐसे कर्म-काण्ड पर उन दिनों तो शायद कोई प्रश्न उठा कर मैं ने उन्हें परेशान न किया हो, परंतु जब ऐसे वहम-भ्रम का विरोध करने वाले साहित्य ने मेरा ज़ेहन रौशन पाया तो मैं ऐसे अवसर पर उन्हें बताता कि चन्द्रमा भी तो हमारी धरती का एक उपग्रह ही है जहां हवा न होने के कारण किसी किस्म को कोई जीवन नहीं है। आपकी ओर से चन्द्रमा को लक्ष्य मान कर फेंके गए पुराने कपड़े का धागा उसके पास नहीं पहुंच सकता और न ही चन्द्रमा के पास कोई वाहन है जिसके ज़रिए वह पृथ्वी पर रहने वाले आप जैसे श्रद्धालुओं के लिए नए कपड़े भेज सके। और कपड़ा बनाने वाली कोई फसल भी तो चांद पर पैदा नहीं होती। अतः आपकी ओर से फतेह बुलाना या नमस्कार करना भावहीन है।

मेरी ओर से इतना समझाने पर पर भी वह

कभी न कभी अपनी यह परम्परा पूरी कर ही लेते थे। केवल इतनी सी रस्म निभाना ही उनकी धर्मिकता थी। किसी मंदिर, गुरुद्वारे, तीर्थ-यात्रा, अमावस, पूर्णमाशी इत्यादि उत्सव में शामिल होने हेतु वे नहीं जाते थे। काम धंधे वाले व्यक्ति थे, अपने खेती-किसानी के कार्य में ही व्यस्त रहते थे।

मेरी पृष्ठभूमि अशिक्षित परिवार वाली है परंतु अब मेरी संतान पढ़े लिखों में गिनी जाती है। बिना इज़हार किये मेरा परिवार तर्कशील स्वभावका है। मेरा छोटा पौत्र अभी बाबा फरीद स्कूल की नर्सरी कक्षाओं का था। जब एक बार वह मेरे साथ 23 सितंबर को बाबा फरीद के उत्सव में नगर-कीर्तन में शामिल होकर गुरुद्वारा गोदड़ी साहेब देखने चला गया। उन्हीं दिनों में उस गुरुद्वारा परिसर के अन्दर का सरोवर अभी पूरा नहीं बन पा था। ऊपर के अधिकतर भाग में सीढ़ियों बन चुकी थीं किन्तु नीचे के तीन चार जगह जहां फर्श लगना था अभी कच्ची ही थी। उस नीचे वाले कच्चे भाग में फर्श से तीन चार फुट की ऊचाई तक कुछ दिन पहले ही पानी भरा गया था, इस वजह से कि बाबा फरीद उत्सव में शामिल होने वाले श्रद्धालु अगर चाहें तो उस प्रतीकात्मक पवित्र सरोवर में अपने हाथ पांव धोकर पवित्र होने का अनुभव कर सकें पर वहां तो अन्ध श्रद्धा का बोलबाला हो चुका था। उत्सव वाले दिन से पहले ही उस बनाए जा रहे सरोवर के कच्चे तले में भरे हुए चार-पांच फुट गहरे पानी में सिर्फ हाथ मुंह धोने की वजह सरोवर की पवित्रता प्रति अंधश्रद्धा के प्रभाव में श्रद्धालुओं की स्नान करने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी थी। उर्स वाला दिन आते आते स्नान कराने वाले लोगों के पावों से तलाब के कच्चे तले की मिट्टी पानी में घुलने से वह पानी वाला हिस्सा गंदे कीचड़ भरे गड्ढे का रूप धारण कर चुका था और अन्धश्रद्धा वाले लोग उसी कीचड़ में ही अपने बीमार बच्चों को अपने हाथों से 'स्नान कराने' का विश्वास पाल रहे थे। उन्हें यकीन था कि सरोवर की पवित्रता के कारण उनके रोग दूर हो जाएंगे।

हमारे उस सरोवर के पास जाने के समय भी एक प्रौढ़ व्यक्ति अपने चमड़ी रोग में ग्रस्त बच्चे को उस कीचड़ में 'स्नान' कराता हुआ गोथल रहा था तो उसे देखते हुए आश्चर्यचकित हो कर मेरा पौत्र मुझे पूछने लगा-'बा, इतने गन्दे कीचड़ भरे पानी में वह लड़के को क्यों नहलाए जा रहा है?'

इससे पहले कि मैं रविन्द्र को तसल्ली भरा कोई जवाब देता, हमारे नजदीक ही रुकी हुई एक अन्धश्रद्धा रखने वाली महिला घबराई हुई विचलित वाणी में चीखी-'ना रे छोहर, पवित्र सरोवर के पानी को गन्दा नहीं कहना चाहिए। पाप लगेगा!'

उस महिला की ओछी सी बात सुनकर मुझे हंसी आ गई। मैं ने रवि को ओर मुस्करा कर देखा और उसे बताया-'रवि बेटे, तू ने ठीक समझा। यह पानी वास्तव में गंदा ही है। पवित्र नहीं। कितने बीमार लोग यहां नहाने आए। अपने शरीर को लगे हुए खतरनाक रोगों के जीवाणु छोड गए हैं और कितनी नई बीमारियां यहां से लेकर जाएंगे। ये लोग किसी तर्क-दलील को नहीं जाने-अंधविश्वास में ही इलाज ढूंढने वाले हैं ये। मैं तुझे शाबाश देता हूं जो कीचड़ को कीचड़ ही कहा। भविष्य में भी ऐसे ही समाज के हर बर्ताव को विवेकशील दृष्टि से देखते-परखते रहना। कभी भूल कर भी धर्म के नाम पर अन्ध विश्वास न पनपने देना...।' मैंने उसे यह भी बताया कि हमारा समाज धर्म केनाम पर अन्धविश्वास के जाल में बुरी तरह से फंसा हुआ है। किसी गुरुद्वारा या मंदिर आबद में पाठ-पूजा के समय कोई कोमल स्वभाव का व्यक्ति लाऊड स्पीकर की अति कड़कड़ाती हुई आवाज़ से तंग आकर दुखी हुआ बाध्य होकर कह बैठे कि यह ऊंचा शोर प्रदूषण तो जान खाए जा रहा है-तो बस, उसका इतना कहना ही खतरे का कारण बन सकता है। उसक`साथ मॉब लिचिंग बर्पा हो सकती है-धार्मिक कट्टरपंथियों की भीड़ उसे मार सकती है। हालांकि उसने स्पीकर की असहनीय ऊंची आवाज़ के लिए ही शब्द के लिए ध्वनि-प्रदूषण का प्रयोग किया है। फिर भी कट्टरपंथियों ने उसके द्वारा बोले गए शब्दों को 'ईश-निंदा' कह कर उसकी पिटाई कर देंगे। मूलवादी इस तरह की घटनाओं के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

मैं अंधश्रद्धा का विश्लेषण करता हुआ रवि को उसकी सूझ-समझ की बधाई दे ही रहा था तो रवि सहसा हंस कर बोला, 'अगर मेरी समझ सही है तो मुझे हौसला अफजाई का ईनाम दो!' और मैंने उसे एक रुपए का सिक्का दिया था।

आज मैं ढेरों वैज्ञानिक पुस्तकों का प्रभाव कबूल करके पक्का नास्तिक विचारों को धारण किए हुए हूं और मुझे हर्ष है कि मेरा परिवार भी मेरा अनुसरण करते हुए धार्मिक अन्धश्रद्धा का त्याग चुका है।

(गांव तूत, फिरोज़पुर, पंजाब)

गोबर, गोमूत्र और कोरोना .

डॉ दिनेश मिश्र, नेत्र विशेषज्ञ

पिछले कुछ समय से विश्व कोरोना वायरस के संक्रमण से जूझ रहा है जिसमें दुनिया भर के 100 से अधिक देशों के नागरिक संक्रमित हो चुके हैं ,भारत के भी करीब 18 प्रदेशों के किसी ना किसी हिस्से से मरीजों के कोरोना से संक्रमित होने की खबरें सुनाई पड़ती है। पूरे विश्व में एक करोड़ से अधिक लोग कोरोना के संक्रमण के शिकार हुए हैं, मीडिया के प्रचार-प्रसार से कोरोना की चर्चा लगभग सभी जगह पहुंच चुकी हैं इसके संबंध में लोग आशंकित भी हैं, अपने स्वास्थ्य को लेकर, अपनी जान को बचाने के लिए और ऐसे में जब पूरे लोगों को सही वैज्ञानिक तरीके से कोरोना के फैलने, उसके संक्रमण, उसका उपचार ,उसका बचाव के बारे में बातचीत होना चाहिए तब बहुत सारे लोग इस वायरस संक्रमण के बारे, उसके उपचार के बारे में भी अजीबोगरीब बातें फैला रहे हैं और अंधविश्वास तथा भ्रम फैला रहे हैं जैसे कोई गोमूत्र पिलाने से, तो कोई गाय का गोबर से नहाने से, कोई ताबीज पहनाने से तो कोई झाड़ फूंक करने से संक्रमण खत्म करने की बात प्रचारित कर रहे हैं,,किसी भी बाबा,के द्वारा फैलाये गए प्रपंच में फंसने के पहले जरा सोचिए, कि यदि गौमूत्र पीने, गोबर से नहाने से कोरोना या कोई बीमारी ठीक होती तो हमारे प्रधानमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री नागरिकों को साफ सफाई से रहने ,बार बार हाथ धोने की सलाह देने की बजाय नेशनल मीडिया में नागरिकों को गौमूत्र पीने, गोबर में लेट कर ठीक होने का नायाब इलाज खुद क्यों नहीं बताते। अन्य देशों की तरह भारत सरकार भी इस मामले में विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं चिकित्सा विशेषज्ञों के द्वारा वताये गए प्रोटोकाल का ही पालन कर रही है.

पिछले दिनों दिल्ली के पास एक तथाकथित बाबा चक्रपाणी ने कोरोना वायरस के संक्रमण को खत्म करने के लिए गोमूत्र पार्टी आयोजित की, तो कहीं कुछ लोगों को गोबर से भरे गड्ढे में डुबकी मारते ,लगाते भी देखा गया .एयरपोर्ट में आने वाले लोगों को गौमूत्र पिलाने,गोबर से नहलाने की मांग की और कुछ लोगों को पिलाया. जबकि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रोटोकाल के चलते देश भर में सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम,खेल,क्रिकेट मैच, समारोह, स्थगित किये जा चुके है,राष्ट्रपति ,प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों ने भी अपने अपने सार्वजनिक कार्यक्रम स्थगित कर दिए है, मंदिरमस्जिद, चर्च, माल ट्रेनें, फ्लाइट स्कूल, कॉलेज बन्द हो रहे है,, यही हालत विदेशों में भी है .नागरिको से भीड़ भाड़ में न जाने,साथ सफाई से रहने,हाथ धोने,की बार बार सलाह दी जा रही है तब गौ मूत्र,पार्टी,गोबर के सामूहिक कार्यक्रम आयोजित करना कैसे उचित ठहराया जा सकता है, पुलिस ने उत्तर प्रदेश में एक तथाकथित बाबा को कोरोना से मुक्ति का ताबीज बेचते भी हिरासत में लिया और कोरोना की झाड़ फूंक करके स्वस्थ करने वाले कुछ बैगा भी सामने आये, इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के तरीकों से अलग-अलग स्थानों में काम कर रहे कतिपय लोगों ने देसी विदेशी तौर तरीके प्याज ,लहसुन, नीबू से भी कोरोना को खत्म करने की बात और दावे किये जाने लगे, जबकि जिन देशों से कोरोना के पॉजिटिव मामले मिले है और उन देशों में भी जहां काफी लोगों की मृत्यु हुई है, उनके सम्बन्ध में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी वर्तमान में इस संक्रमण से कोई उपयुक्त दवा उपलब्ध ना होने वैक्सीन उपलब्ध ना होने की बात कही है और लोगों से इस संक्रमण के फैलने से बचाव करने की बात ही कही है, पर उसके बाद भी अलग अलग किस्म के भ्रामक दावे सामने आते हैं. यहां यह बताना जरूरी है कोरोना एक प्रकार का वायरल संक्रमण है जिसे खोजा बहुत पहले जा चुका था, पर महामारी अभी हुई है, कोरोना संकमण में, पहले तो कुछ समय तक व्यक्ति लक्षण प्रकट नही होते पर धीरे धीरे उस व्यक्ति को खांसी बुखार और फेफड़े में संक्रमण होता है और सांस लेने की तकलीफ के कारण उसकी मृत्यु

हो जाती है पर यदि सही समय पर उस व्यक्ति को सही चिकित्सा मिल जाती है तो उसकी जान बचाई जा सकती है तथा यह वायरस हवा के माध्यम से नहीं फैलता बल्कि एक मरीज से दूसरे मरीज में फैल सकता है इसलिए बचाव के लिए मास्क पहनने ,एक से दूसरे रोगी से हाथ नहीं मिलाना ,हाथों को बार-बार सैनिटाइजर,साबुन, पानी से धोने से बचाव के तरीके वि व स्वास्थ्य संगठन एवं चिकित्सकों द्वारा कही जा रही है ताकि उसका फैलाव कम हो सके तथा यदि किसी व्यक्ति को हुआ भी है तो उसे अपने आप को अलग-थलग कर लेना चाहिए, ताकि उसके माध्यम से घर के दूसरे व्यक्तियों में संक्रमण न फैले .अभी भी जानकारी के अभाव डर और भ्रम के कारण कुछ मरीजों ने ना तो अपने संक्रमित होने की बात जाहिर की बल्कि कुछ लोग तो अस्पतालों में भर्ती होने के बाद भी लापता हो गए, जिन से दूसरे व्यक्तियों को संक्रमण फैल सकता है इसलिए आव यक है कि इस संबंध में व्यक्ति को ईमानदारी से सोच समझकर न केवल अपना खुद का बचाव करना चाहिए, बल्कि दूसरे लोगों पर भी संक्रमण न फैले इसके बारे में सावधानियां सुरक्षित एवं सुनिश्चित करना चाहिए

अब बात करनी पड़ेगी जो लोग गोमूत्र पीने से संक्रमण ठीक होने की बात कर रहे हैं, क्या इसमें कोई सच्चाई है तथाजो लोग गोबर के उपयोग से कोरोना के खत्म होने की बात करते हैं,क्या उसमें कोई सच्चाई है, गाय,भैंस,बकरी, मनुष्य, ऊंट,आदि स्तनपायी प्राणी है जिसमें से गाय, भैंस,के दूध का उपयोग हम पीने करते हैं,उसी प्रकार कुछ स्थानों में बकरीके दूध, तो राजस्थान के कुछ इलाकों में ऊंटनी के दूध का प्रयोग भी लोग करते हैं ।गाय का दूध भारत में सहजता से उपलब्ध है,था स्थानीय धार्मिक मान्यताओं के चलते गाय को माता का दर्जा दिया है,पर दूसरी बात है जिस प्रकार मनुष्य एक स्तनधारी प्राणी है और भी बहुत सारे स्तनधारी प्राणी ,क्या हम उनका मूत्र एवं मल बीमारियों के इलाज के लिए काम में लाते हैं, मनुष्य एवं सभ्य स्तनधारी प्राणी जो भी पानी पीते, है वह शरीर में आवश्यकतानुसार उपयोग हो कर किडनी के द्वारा मूत्र के रूप में बाहर निकलता है तथा जो खाद्य पदार्थ ग्रहण करते हैं ,उसमें से भोजन के पाचन के बाद जो पदार्थ आहार नली में बचता है वह धीरे धीरे मलाय से होते हुए मल के रूप में बाहर निकलता है, उसी प्रकार गाय ,भैस भी जो पानी पीती हैं, खाना खाती है और वह उसके शरीर में किडनी और मला ाय से बाहर निकलकर मूत्र एवं मल के रूप में बाहर निकलता है, इसका किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी बीमारी के इलाज में उपयोग करने में कितनी समझदारी है, सच्चाई यह है अलग-अलग क्षेत्रों में लोग उपलब्ध पशुओं का दूध पीते हैं जो कि वास्तव में उन पशुओं की संतानों के लिए उनके शरीर में बनता हैं पर क्या भैंस के मूत्र और बकरी के मूत्र और मल का ऊंटनी के मूत्र और मल का मनुष्य के मूत्र और मलका उपयोग करोना या किसी भी संक्रमण अथवा अन्य बीमारी के लिए करते हैं जो गाय के मूत्र ,मल का करने लगते हैं। जबकि गाय या किसी प्राणी के मूत्र,गोबर से बीमारियोंके ठीक होने के सम्बंध में न ही वैज्ञानिक तौर पर कोई परीक्षण हुए है, न कोई खोज हुई है,किसी रिसर्च पेपर में, यहाँ तक गूगल में भी इस सम्बंध में किसी सही वैज्ञानिक रिसर्च का उल्लेख नहीं है,सिर्फ मिथकों, कही सुनी बातों,के आधार पर ही पूरा प्रोपेगैंडा रचा हुआ है.

अंधविश्वास निर्मूलन अभियान के चलते मेरा ग्रामीण अंचल में जाना होता है जिन गोशाला में और जहां पर एक से अधिक गाय हैं ,वहां भी पर यदि गाय के मल और मूत्र को नियमित रूप से नहीं फेंका जाता तो वहां पर उसमें मक्खी ,मच्छर, कीड़े,संक्रमण एवं इतनी दुर्गंध आने लगती है कि बाहर से ही वहां सांस लेना मुश्किल जाता है,और उससे गांव में संक्रमण फैलने की आ ांका रहती है इसलिए अनेक स्थानों में इंसानों और पशुओं के लिए भी अलग अलग तालाब बनाये जा रहे ताकि संक्रमण न फैले, क्योंकि वास्तव में मूत्र एवं मल अपशिष्ट पदार्थ है जो अनुपयोगी होने के कारण हर प्राणी अपने शरीर से नियमित रूप से बाहर निकालता है, न कि यह कोई औषधिक पदार्थ ह।, पर कुछ आस्था और कुछ अंधवि शस के कारण लोग भ्रम में पड़े रहते हैं और दूसरों को भी भ्रम में डालने का किया करते हैं .गाय सहित किसी भी पशु के मल

मूत्र, पसीने, आंसू,नाक,कान से स्त्रावित होने वाले अनुपयोगी पदार्थ से मनुष्य पशुओं की किसी भी बीमारी के ठीक होने यह रुकने के बाद भी एक मिथक ही है। जिस प्रकार अन्य वायरल संकमण फैलते है उसी प्रकार कोरोना भी एक संकमण है जिससे सावधानी पूर्वक रहने से बचा जा सकता है , तथा समय रहते डॉक्टरी सलाह व उपचार से संक्रमण से ठीक हुआ जाना संभव है, दहशत, डर, भ्रम एवं अंधविश्वास का शिकार होने से बचें।

(अध्यक्ष अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति छत्तीसगढ़)

मजदूर औरत

-जयपाल
मोः 94666 10508

खिली हर सुबह
तपी हर दोपहर
ढली हर शाम
अंधकार में दबी रही रात भर।

ढोती रही पत्थर
तोड़ती रही पत्थर
खाती रही पत्थर।

पसीने से महक उठे खेत
धुल गए गांव-नगर-बस्तियां
पल गए घर-परिवार।

ईंट गारा बनकर
दीवारों में चिन गई
बजरी बन सड़कों पर
पांव तले बिछ गई।

कोई भी न देख सका
कितना वह कर गई
किसी को न पता चला
कहां वह चली गई।

लेखक के कविता संग्रह-'दरवाजों से बाहर' से साभार

आपका पत्र मिला

तर्कशील पथ का मार्च अंक मिला। सरसरी नज़र से पन्ने उलट रहा था तो अपने पांच दोहे 'मनुष्य के बारे में' पृष्ठ 19 पर छपे नज़र आये। प्रूफ की कोई गलती नही है। साफ सुथरे छपे हैं। बस अन्त में 'रणजीत' की बजाय 'अज्ञात' छपा है। अपनी रचना के साथ 'अज्ञात' देखना बड़ा मनोरंजक है। वैसे अब अज्ञात होने में बहुत देर तो नहीं होगी। पता नहीं कोरोना ही कर दे। स्वर्गीय या नारकीय नहीं, मेरी शब्दावली में सिर्फ 'स्मृतिशेष'।

पर जिन्दाजी अपने आपको अज्ञात पढ़ने का दिलचस्प अनुभव हुआ। एक बार पहले भी आपने मेरे एक काव्यांश पर कात्यायनी का नाम छाप दिया था, पता नहीं उसने पढ़ा हो तो उसे कैसा लगा होगा। असल में मैंने अपनी काव्य पुस्तिका 'परिवर्तन की पुकार' में से फिलर की तरह छापने के लिए कविताओं के जो टुकड़े आपको भेजे थे, वे मेरे नाम से अलग हो गये होंगे। आपको इसके लिए खेद व्यक्त करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि कविता ही महत्वपूर्ण है, यदि उसमें जान हो, कवि के नाम में क्या धरा है? स्वस्थ-प्रसन्न होंगे।

-आपका रणजीत, बैंगलूरू

संपादक की ओर सेः

उक्त दोहे व्हाटसएप ग्रुप में किसी साथी द्वारा डाले गये थे जो पसंद आने पर तर्कशील पथ में छाप दिये गये। जिस साथी ने ग्रुप में पोस्ट किये थे, निश्चय ही उसने कहीं से पढ़कर डाले होगे, जो उसे अच्छे लगे होंगे और उसे कवि का नाम मालुम नहीं होगा। निश्चय ही इससे आपकी सशक्त लेखनी का पता चलता है और किसी रचनाकार के लिये यह गर्व की बात होनी चाहिए।

-संपादक, तर्कशील पथ

(हिन्दुत्व का झंडा बुलंद करने वाले व हिन्दू देवी-देवताओं पर अभिमान करने वाले शिवसेना के मुखपत्र सामना में छपा शिवसेना के वरिष्ठ नेता संजय राऊत का आंख खोलने वाला लेख)

रोक ठोक-भगवानों ने मैदान छोड़ा

- संजय राऊत'

कोरोना वायरस का कहर ऐसा कि सभी शक्तिशाली देश मानो निर्जीव हो गए। मक्का से लेकर वेटिकन सिटी, बुद्ध गया मंदिर से लेकर शिर्डी, सिद्धिविनायक तक सर्वत्र सन्नाटा पसरा हुआ है। मनुष्यों पर आने वाले संकट के समय सर्वप्रथम ईश्वर मैदान छोड़कर भागता है। कोरोना के कारण धर्म और उनके ईश्वर सभी अनुपयोगी सिद्ध हुए। कोरोना वायरस के संक्रमण से सारा संसार तड़प रहा है। दुनिया दूसरे विश्वयुद्ध में भी इतना तड़फड़ाते हुए नहीं दिखी थी। खुद को सुपर पावर समझने वाले बहुत सारे देश कोरोना के सामने लाचार दिखाई पड़ रहे हैं। चंद्रमा और मंगल पर पैर रखनेवाले अमेरिका में राष्ट्रीय आपदा और आपातकाल घोषित हो चुका है, किसी समय पूरी दुनिया पर राज करने वाले ग्रेट ब्रिटेन ने खुद को पूरी तरह बंद कर लिया है। महारानी एलिजाबेथ को उनके राजमहल से अलग रखा गया है। अनेक बड़े देशों में यह सब घटित हो रहा है। प्रकृति द्वारा मानव अहंकार और भगवान देवी देवता का यह पराभव है'

संकट के समय मनुष्य भगवान की शरण में जाता है'

कोरोना के कारण सब उल्टा ही हो गया है। धर्म वर्तमान राजनीति की सबसे बड़ी पूंजी हो गया है परन्तु कोरोना प्रकरण में भगवानों को खुद ही इस वायरस से सुरक्षा देने का समय आ गया है। हिन्दू, इस्लामी बौद्ध सभी देश मृतप्रायः हो गए हैं। महाराष्ट्र के ही नहीं बल्कि देश के सभी मंदिर कोरोना के डर से बंद करने पड़े हैं।

भक्तों की भीड़ के कारण मंदिर की पत्थर की मूर्ति को देवत्व प्राप्त होता है।'

भक्तों की भीड़ ही रुक गई तो कैसा ईश्वर और कैसा ईश्वरत्व ?'

महाराष्ट्र में कोरोना नहीं बढ़े, इसलिए सिद्धि विनायक मंदिर बंद किया गया, तुलजापुर का भवानी माता मंदिर, कोल्हापुर का महालक्ष्मी मंदिर, पुणे का दगड़सेठ हलवाई गणपति मंदिर, त्र्यंबकेश्वर मंदिर, शिर्डी का साईं बाबा मंदिर सब बंद हैं। मुंबई का बाबुलनाथ मंदिर बंद है।

देवताओं ने अनेक असुरों का वध किया ऐसा पुराणों में कहा गया है किन्तु एक वायरस भगवानों और देवी-देवताओं पर भारी पड़ गया।' मक्का से वेटिकन तक और बालाजी से बुद्ध गया मंदिर तक कोविड-19 यानी कोरोना ने सिद्ध कर दिया कि मनुष्य पर आए प्रत्येक संकट के समय सबसे पहले ईश्वर मैदान छोड़कर भागता है ऐसा तस्लीमा नसरीन ने अभी हाल में ही लिखा है ।

'मक्का में सब कुछ ठप्प है, पोप का ईश्वर से संवाद फिलहाल बंद है। पुजारी मूर्तियों को मास्क लगाकर कर्मकांड कर रहे हैं सभी धर्मों और उनके ठेकेदारों ने मानव को कोरोना वायरस से भयभीत असहाय अवस्था में निराधार छोड़ दिया है।'

उन्हीं धर्मों के लिए भारत सहित पूरी दुनिया में हिंसाचार होता है परन्तु कोरोना के आक्रमण से एक भी धर्म नहीं बचा। इनसे कोई कुछ सीख लेगा क्या ?'

मदीना में पैगम्बर मुहम्मद जहां दफन हुए थे वहां की तीर्थयात्रा स्थगित की गई है । इस बार कोरोना के कारण हजयात्रा के होने पर भी शंका है, अनेक मस्जिदों में जुम्मा की नमाज स्थगित की गई है, कुवैत में अजान करके लोगों से घर में ही इबादत करने का आग्रह किया गया है, मौलवी भी अभी इस्लाम खतरे में है की बांग देते हुए नहीं दिखाई पड़ रहे हैं और कोरोना से बचाव के लिए मस्जिद में जाकर दुवा करो ऐसा नहीं कह रहे हैं, कारण उन सभी धर्मों के ठेकेदारों को यह विश्वास हो चुका है कि अब अल्लाह न केवेल कोरोनावायरस से बचाने नहीं आयेगा, सिर्फ वैज्ञानिक ही बचा सकते हैं जो

वायरस को खत्म करने के टीके की शोध कर रहे हैं।

चढ़ावे मन्नत के भगवान

कोरोना का सामना करने में चढ़ावे मन्नत वाले देवी-देवता भगवान सब औंधे मुंह गिर पड़े। घर में गोमांस रखना धर्मद्रोह है ऐसा कहकर इंसानों को मार डाला गया पर जो मांस नहीं खाते वे भी कोरोना के शिकार हुए।

'महाराष्ट्र में गाडगे बाबा ने जो कहा अंततः वही सच साबित हुआ। चढ़ावा मन्नत पूजा पाठ कर्मकांड यह वास्तविक धर्म नहीं है।'

'मानवता ही सच्चा धर्म है' यह कहने वाले गाडगे बाबा ही सही साबित हुए।'

'मंदिरों में मत जाओ! मूर्ति पूजा मत करो! देवताओं के लिए पैसा बर्बाद मत करो!'

'तीर्थयात्रा मत करो!'

'सत्यनारायण की पूजा मत करो!'

'पोथियों पुराणों के चमत्कारों पर विश्वास मत करो!'

'प्राणियों की हत्या मत करो!'

'शराब मत पियो!'

'साहूकारों से कर्ज मत लो!'

'अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा शिक्षण दो!'

'ऐसा गाडगे बाबा कीर्तनों में गाते थे, गाडगे बाबा ने कभी भी किसी मूर्ति के सामने सिर नहीं झुकाया, वे विज्ञानवादी संत थे, मनौती चढ़ावे पूजा-पाठ करने से महामारी नहीं जाती यह उन्होंने बताया था।' वही बात बार बार सच साबित हुई।'

येशू ने चमत्कार नहीं किया।

मक्का मदीना ने चमत्कार नहीं किया और ईश्वर भी लोगों से दूर हो गया।

अंततः विज्ञान और वैद्यकीय ज्ञान की ताकत पर इंसान कोरोना से लड़ रहा है।

लोगों को घर बैठना पड़ा, लोगों का रोजगार गया। भगवानों की दानपेटी में आने वाले पैसे में कमी आई, यह सत्य है परन्तु लोगों की मदद के लिए धर्म की कोई शक्ति आगे नहीं आई ।

मुंह पर कपड़े बांधने ही पड़े और सेनिटाइजर नाम के द्रव से सतत् बार-बार हाथ साफ करके काम करना पड़ रहा है। अंततः ईश्वर पत्थर का ही और मनुष्य सत्य यही सिद्ध हुआ।

डेढ़ करोड़ लोग होंगे प्रभावितः

कोरोनावायरस के कारण पूरी दुनिया में करीब डेढ़ करोड़ लोग प्रभावित होंगे। बड़े पैमाने पर मृत्यु होगी, मंदी और आर्थिक अराजकता के कारण हत्या, भुखमरी, अपराध बढ़ेंगे। अमेरिका, चीन, यूरोप जैसे देश लाचार हतबल होंगे। भारत की आर्थिक स्थिति डगमगाएगी।

प्रकृति पर विज्ञान द्वारा विजय प्राप्त करना असम्भव है। एक अज्ञात रहस्यमयी शक्ति दुनिया को नियंत्रित कर रही है वह रहस्यमई शक्ति मतलब ट्रंप, मोदी या चीन के सत्ताधीश नहीं।

चीन के एक मछली बाजार से फैलता हुआ यह वायरस पूरी दुनिया को भारी पड़ रहा है। और यह सभी देश परमाणु बम एवं मिसाइलों की स्पर्धा में ही खुद को धन्य मान रहे हैं। कोरोनावायरस के प्रकोप के कारण प्रधानमंत्री मोदी को भारत में ही अटककर रहना पड़ रहा है, यह उस प्रकरण से फायदे की बात हुई।

देश में संपत्ति न होने से देश भिखारी होता है अथवा संपत्ति होने के बावजूद समान बंटवारा न होने के कारण भी देश भिखारी होता है, अभी एक वायरस के कारण संसार भिखारी बनते हुए दिखाई पड़ रहा है।'

मनुष्य और विभिन्न धर्मो के सर्वोच्च भगवान भी गरीबी की संक्रमण अवस्था में जा रहे हैं।

कोरोना के कारण शेयर बाजार धराशाई हो चुका है जिसके कारण अंबानी से लेकर अडानी तक अमीर थोड़े ही सही गरीब हुए हैं।

उसी प्रकार संसार भर के सभी भगवान भी गरीब हुए हैं। भक्तों के बिना नेता या भगवानों को भी अमीरी नहीं।'

सिद्धिविनायक से लेकर' 'तुलजापुर तक, मक्का से' लेकर वेटिकन सिटी तक सभी भगवानों के दरबार में सन्नाटा पसरा हुआ है।'

'कोरोना ने यह क्या किया?'

मराठी से हिंदी अनुवादक'चन्द्र भान पाल'
(सामना आनलाइन)

लघुकथा

शिव सांई

-अशोक भाटिया

आज लम्बे समय के बाद पुजारी का तिलक चमक उठा है....

पांच बरस से इस मंदिर की प्रबंध-समिति जद्दोजहद करती आ रही थी, तब इस इलाके का एकमात्र धर्मस्थल यही शिव मंदिर होता था। मंदिर-समिति के प्रधान धर्मपाल शर्मा नियमों के बड़े पक्के थे, वो चाहे मंदिर के हों या स्वयं के, प्रातः काल जब तक स्नान-ध्यान न कर लें, त्रिपुंडधारी धरमपाल के लिए जल ग्रहण करना भी पाप था लेकिन पांच बरस पहले निकट के चौक पर सांई बाबा का मंदिर क्या बना, शिव मंदिर में लोगों की आमद कम होती गई, लोग कम तो चढ़ावा कम, इलाके की आबादी बढ़ रही हो- लेकिन भक्तों का आना कम होता जाए तो चिंता होनी लाजमी थी। चिंता का रहस्य यह था कि सांई-मंदिर में सांई-मूर्ति के साथ हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र भी लगे हुए थे। शिवजी ही नहीं, राधा-कृष्ण, सीता-राम और हनुमान भी वहां विराजे हुए थे, तो हिन्दुओं का उधर खिंचना स्वाभाविक ही था, और फिर बृहस्पतिवार को तो वहां मेला-सा लगा रहता। गांवों से भी स्त्री-पुरुष वहां धोक मारने आते ही रहते थे। हालाँकि कुछ ऐसे भी भक्त थे जो सांई मंदिर के बाद इधर भी आते थे पर उनका चढ़ावा भी दोनों तरफ बंट जाता था. ..तो चिंताएं कई थीं।

प्रबंध समिति ने सब पक्षों पर विचार के बाद मंदिर को भव्य बनाने का निर्णय लिया। संगमरमर का फर्श, बाहर तोरणद्वार की तरह भव्य गेट, भीतर घुसते ही बायीं तरफ एक बहुत ऊंचा पहाड़, जिस पर शिवजी की विशाल प्रतिमा, ताकि बाहर से आते-जाते लोग उसे देखकर आकर्षित हों। सब हुआ, पर कुछ अधिक दान-लाभ न हुआ। सांई-मंदिर में अब भी वैसी ही भीड़ जुटती। वहां की समिति के हर सदस्य ने इन पांच वर्षों में सांई मंदिर की आमदनी से ही कम-से-कम एक-एक शानदार गाड़ी जुटा ली थी। यानी सब मटियामेट होता जा रहा था।

मंदिर-समिति की आपात बैठक हुई। बैठक में हाहाकार मची रही ।...हिन्दू सांई मंदिर में जा रहे हैं..घोर अनर्थ! ...हिंदुत्व का क्या होगा !...इन्होंने तो मुख्य देवी-देवता भी बिठा लिए ...पर हम किसी को रोक तो नहीं सकते ...हिन्दुओं को इसमें रेवड़ की भांति मुंह उठाकर नहीं जाना चाहिए...कैसे रोकें इस रेवड़ को? खुलकर बोलो! ...हम ही क्यों न सांई बाबा की मूर्ति स्थापित कर डालें...यह हिन्दू धर्म के खिलाफ अनर्थ होगा...पर चढ़ावा नहीं आएगा तो धर्म का क्या करें !...ठीक बात ... इससे चढ़ावे की धार मोटी हो जाएगी।

...तो आज बृहस्पतिवार की सुबह भक्तों की भारी भीड़ के बीच सांई बाबा की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कर दी गई है। बरसों बाद दान-पात्र ने भरपूर डकार ली है! यह बड़ा दान-पात्र सांई-मूर्ति के लिए विशेष रूप से बनवाया गया है।

भीड़ छंट गई है। सांई-मूर्ति के आगे रुपयों का पहाड़ देख पुजारी का तिलक चमक उठा है। प्रधान धरमपाल अपने ढीले पेट पर परम संतुष्टि का हाथ फेरकर मूर्ति के आगे साष्टांग दंडवत हो गए है।

मो॰ 94161 52100

धर्मों ने एक समय समाज विकास की धारा में एक विशेष स्तर पर सहायक की भूमिका अदा की, लेकिन सभी धर्म वर्ग शोषण और व्यक्तिगत सम्पति के मालिकाने से अभिन्न रूप से जुड़े हैं, इसीलिए एक समय के बाद धर्म अन्ततः शोषक वर्ग के हाथों शोषण का हथियार बन जाते हैं।

-कामरेड शिवदास धोष

(स्मृति शेष)

तर्कशील लहर के स्तम्भ डॉ.विजयम को अलविदा

-विकास गोरा

नास्तिक केंद्र के कार्यकारी निदेशक डॉ विजयम का 22 मई, 2020 को सुबह 5 बजे, नास्तिक केंद्र, विजयवाड़ा, एपी, में निधन हो गया। वह 84 वर्ष के थे।

व्यक्तिगत जीवन

डॉ. विजयम जन्म 1 दिसंबर, 1936 को मछलीपट्टनम, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश में हुआ था। विजयम ने सुमति से एक 'हरिजन बस्ती' में विवाह किया था। सुमति, गोरा विज्ञान केंद्र के कार्यो और शिक्षकों के साथ पर्यावरण जागरूकता अभियानों के साथ निकटता से जुड़ी हुई थीं। सुमति ने शिक्षा के एक मजबूत विचार के रूप में तर्कसंगत सोच और सुधार की संस्कृति बनाने के लिए, अपने पति, विजयम के साथ नास्तिक केंद्र की नास्तिक और नास्तिक मार्गम पत्रिकाओं में तर्कसंगत प्रवचन में योगदान दिया है।

1968 में, विजयम मार्टिन लूथर किंग स्कूल अ फ सोशल चेंज, चेस्टर, पेंसिल्वेनिया गए। उन्होंने अल्पसंख्यकों, अश्वेत समुदायों की समस्याओं और अहिंसक सामाजिक परिवर्तन और गांधीवादी आंदोलन की प्रासंगिकता का अध्ययन किया।

उन्होंने 1969 में इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एजुकेशन, यूनाइटेड नेशनल प्लाजा, न्यूयॉर्क से एक प्रतिष्ठित फेलोशिप प्राप्त की, ताकि न्यूयार्क शहर में शहरी सामुदायिक समस्याओं का अध्ययन किया जा सके और सामुदायिक संगठनों को नस्ल संचालित संघर्षो और अनपढ़ माताओं के मुद्दों को संबोधित करने में मदद मिल रही है।

1971 में भारत लौटने पर, विजयम ने 5 साल के लिए गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में अनुसंधान निदेशक बर्ने। उन्होंने स्वतंत्र भारत में अहिंसक संघर्षो पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक मजबूत रिसर्च विंग की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, सियाग्रगा का राजनीतिकरण किया

1975 में गोरा के निधन के बाद, नास्तिक केंद्र की गतिविधियों को जारी रखने के लिए विजयम विजयवाड़ा लौट आए। प्रशिक्षण निदेशक के रूप में, ऑर्थिक समता मंडल, गोरा और जेसी कुमारप्पा द्वारा स्थापित एक गांधीवादी संगठन, जो 150 से अधिक गांवों में व्यापक ग्रामीण विकास में शामिल थे।

साहित्यिक योगदान

उन्हों 6 पुस्तकें लिखीं। हैं। नास्तिकता, अहिंसक सामाजिक परिवर्तन और विकास संबंधी मुद्दों पर अंग्रेजी, तेलुगु और हिंदी में 1000 से अधिक लेख लिखे।

उन्होंने नास्तिकता, तर्कवाद, मानवतावाद और अंग्रेजी में सामाजिक परिवर्तन पर कई मात्रात्मक और सूचनात्मक स्मृति चिन्हों का संपादन किया, जिनमें द्वितीय विश्व नास्तिक सम्मेलन, के स्मृति चिन्ह शामिल हैं, 1972 में 'चौथा विश्व नास्तिक सम्मेलन, 1996 के पांचवें विश्व नास्तिक सम्मेलन 2005 में 'छठा विश्व नास्तिक सम्मेलन 2007' और 2009 में सातवां विश्व नास्तिक सम्मेलन '।

पर्यावरण और आपदा तैयारी में योगदानः

40 से अधिक वर्षो के लिए, विजयम पर्यावरण जागरूकता के प्रचार में सक्रिय रूप से शामिल थे। उन्हें दिसंबर 1991 में पेरिस में आयोजित फ्रांसीसी सरकार द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था। पर्यावरण पर वैश्विक सम्मेलन 1992 में रियो डी जनेरियो में पृथ्वी सम्मेलन के लिए एक प्रस्तावना थी। उन्होंने एम्स्टर्डम में आयोजित विश्व मानवतावादी कांग्रेस में भाग लिया।

विजयम ने 1977 में चिल्ड्रेन जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर काम किया, उन्होंने 60 साल से अधिक के नास्तिक केंद्र में पर्यावरण और विज्ञान प्रदर्शनियों के माध्यम से विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाने में, एक अग्रणी संगठन के रूप में गोरा विज्ञान केंद्र को मजबूत करने में भाइयों नियांत और समराम के साथ मिलकर काम किया है।

नास्तिक और मानवतावादी आंदोलनः

अपने माता-पिता से प्रेरित होकर, विजयम को तर्कसंगत और नास्तिक वातावरण में लाया गया था। वे फेडरेशन ऑफ इंडियन रेशनलिस्ट एसोसिएशन (FIRA) के संरक्षक थे, जो प्रो. नरेन्द्र नायक के नेतृत्व में तर्कवादियों, नास्तिकों, मानवतावादियों और स्वतंत्रतावादियों की अखिल भारतीय संस्था थी।

विजयम 1972 से एक नास्तिक के रूप में नास्तिक केंद्र में सभी विश्व नास्तिक सम्मेलनों के संगठन से जुड़े हुए थे। 1972 में विजयवाड़ा में पहला विश्व नास्तिक सम्मेलन आयोजित किया गया था, दूसरा 1980 में विजयवाड़ा, 1983 में हेलसिंकी, फिनलैंड में तीसरा। विजयवाड़ा में 1996 में चौथा, 2005 में विजयवाड़ा में पांचवां, 2007 में विजयवाड़ा में छठा, 2009 में विजयवाड़ा में सातवां। डीके के ड । के। वीरमणि के साथ, विजयम तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में 7-9 जनवरी, 2011 को 8 वें विश्व नास्तिक सम्मेलन के सह-संयोजक थे। 2016 में विजयवाड़ा में नौवें और तमिलनाडु में तिरुचिरापल्ली में दसवें। 80 साल का नास्तिक सम्मेलन जनवरी 2020 में नास्तिक केंद्र, विजयवाड़ा में आयोजित किया।

विजयम अपने भाई लावणम के साथ नास्तिकता और मानवतावाद पर वैश्विक प्रवचन के निर्माण में सहायक थे और सर हरमन बोंडी, ब्रिटिश मानवतावादी एसोसिएशन, लेवी फ्रैगेल, न र्वेजियन ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन और अमेरिकी, फिनलैंड, जर्मन, फ्रेंच, कनाडाई, कनाडा के प्रतिनिधियों के प्रतिनिधि थे। ऑस्ट्रेलियाई, न्यूजीलैंड आदि, नास्तिक केंद्र के लिए संघ और एक वैश्विक आंदोलन के निर्माण में योगदान दिया। उन्होंने अंधविश्वास विरोधी विधेयक के माध्यम से अंधविश्वास और अशलीलता के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

धर्मनिरपेक्ष सामाजिक कार्य

उन्होंने नास्तिक केंद्र के धर्मनिरपेक्ष सामाजिक कार्य संगठनों, आर्थिक समता मंडल, वासव महिला मंडल और संस्कार को मजबूत करने के लिए अपने पूरे जीवन लगा दिया। ये सभी संगठन चार दशकों से अधिक समय से देश भर में गरीबों और सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले बच्चों, महिलाओं और समुदायों तक पहुंचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ओर से

तर्कशील सोसायटी हरियाणा डॉ. विजयम के निधन पर बेहद शोक व्यक्त करती है। डॉक्टर विजयंम एक बेहद समर्पित तर्कशील, अध्येता, समाजिक कार्यकर्ता रहे हैं। उनके प्रयासों से ही विश्व भर के प्रमुख नास्तिक विजयवाड़ा के नास्तिक केंद्र में आयोजित नास्तिक सम्मेलन में एकत्र होते रहे हैं। वे विश्व के नास्तिक आंदोलन को गति देने वालें में प्रमुख स्थान रखते थे। अपने पिता जी श्री गोरा, जो विख्यात नास्तिक रहे, के जाने के बाद उन्होंने नास्तिक आंदोलन को ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनके निधन के बाद चिकित्सीय उपयोग हेतु परिवार द्वारा मृतक शरीर प्रदान करने के कदम को तर्कशील सोसायटी सलाम भेजती है। वर्ष 2020 में 4-5 जनवरी को विजयवाड़ा में आयोजित नास्तिक सम्मेलन में बहुत से तर्कशील कार्यकताओं ने भाग लिया था और उनके साथ खुशनुमा पल बिताए थे। उनके साथ जुड़ी तर्कशील कार्यकताओं की स्मृतियां सदा साथ रहेंगी। उनका निधन तर्कशील आंदोलन के लिए अपूर्णीय क्षति है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के कर्मठ कार्यकर्ता नानक चंद, गांव संगरोली जिला कैथल का 26 अप्रैल 2020 को बीमारी के चलते गुर्दे फेल हो जाने के कारण देहांत हो गया है।,

नानक चंद जी पेशे से प्राइवेट तौर पर पशु चिकित्सा का कार्य करते थे। सोसायटी की प्रत्येक मीटिंग में तथा हर तर्कशील मेले एवं सम्मेलन में भाग लेते थे। बाद में डायबिटीज रोग के कारण टांग में गैंगरीन हो जाने के कारण उनकी एक टांग कटवानी पड़ी। बाद में अपाहिज हो जाने के कारण वे मीटिगों में आने से असमर्थ हो गये थे। फिर भी वह घर पर रहकर भी तर्कशील विचारों का प्रचार करते रहते थे। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है।

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल जंतीममसमकपजवत /हउंपसण्बवउ अथवा वट्सएप न. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णत: अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील-पथ के लिए चंदा भेजना हुआ आसान

तर्कशील पथ मैगजीन में पेज 2 पर Paytm Code अंकित है जिसे स्कैन करके मैगजीन का सालाना सहयोग या पत्रिका का बकाया चंदा आसानी से भेजा जा सकता है। अगर किसी साथी के पास पेटीएम नहीं है या चलाना नहीं आता, तो किसी भी अन्य जानकार के माध्यम से भिजवाया जा सकता है। एडरैस वट्सअप कर सकते हैं, ताकि अमूल्य विचारों की पत्रिका आप तक पहुंचती रहे।

-गुरमीत सिंह

हरियाणवी गजल

-मंगतराम शास्त्री

चौगरदे नै माच्ची रोवा राट सुणो
उजड़े हुये घरां की भी करलघाट सुणो
भारत का दिल फूक्या साफ प्लानिंग तै
स्यासत नै करी दिल्ली बारा बाट सुणो
पेड़ कदम्ब घणा रोया जिब जाण पटी
फूक दिया किरसन का जमना घाट सुणो
दुख-सुख के सीरी थे कल तक जो भाई
आज हुए दंग्यां म्हं आट्टो-पाट सुणो
दूर खड़े नै के बेरा दुख के हो सै
उसनै पुच्छो जिसके भिड़गे पाट सुणो
देश बचौगा तो बच पाओगे थम भी
मुल्ला-पंडत-एस्सी-बी.सी-जाट सुणो
आग लगावणिये सब लम्पट-गुण्डे थे
माणस थे जो उतरे मिर्त्यू घाट सुणो
जिनकै ताले भिड़गे वें तो न्यूं कह रे
कीड़े पड़कै मरियो मुल्की-लाट सुणो
कुरसी खात्तर पाप कमाये जो, उनका
भरकै फुट्टण नै होर्या सै माट सुणो
आज खड़ी जो करदी जनता की, तड़कै
थारी भी या खड़ी करैगी खाट सुणो
भाईचारा कायम करगे बस्ती म्हं
खड़तल वें जो लड़ने तै गए नाट सुणो

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

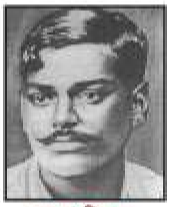
हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अत: सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

नायकों की आशा

आजादी के संग्राम में अपनी जानें कुर्बान करने वाले, फांसी के रस्सों को हंस हंस के चूमने वाले एवं काला पानी की सजाएं, भुगतने वाले नायकों ने ऐसी आजादी की कल्पना बिल्कुल नहीं की थी जिसमें हम जी रहे है, चुनौतियों के इस समय के हमारे अमर शहीद हस से कुछ आशा रखते हैं।

क्रांतिकारी सेनापति चन्द्रशेखर आजाद



जन्म दिवस
23 जुलाई 1906

15 वर्ष की उम्र में अपना एवं अपने पिता का नाम आजादी तथा घर को जेल कहने वाले चंद शेखर आजाद एक निडर क्रांतिकारी थे, तथा इंकलाबी दल के सेनापति। 28 फरवरी 1931 की शाम को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज पुलिस के साथ मुकाबला करते हुए शहीद हो गए।

गदरी शूरबीर : शहीद उधम सिंह



शहादत
31 जुलाई 1940

शहीद उधम सिंह ने जलियांवाला बाग में कत्लेआम करने वाले दोषी माईकल एडवायर को लंदन के फैकसटन हाल में गोली से उड़ा दिया और कहा कि अंग्रेजों के लिए भारतीय लोगों को कुचलना असम्भव है। मैं अंग्रेजी आतंकवाद के प्रभाव में दयनीय अवस्था में जीने की बजाए अपने लोगों के लिए मर जाने को तरजीह देता हूँ।

छोटी उम्र के शहीद : खुदी राम बोस



शहादत
11 अगस्त 1908

आजादी के संग्राम में मुजफ्फरपुर कांसप्रेसी (साजिश) केस में गिरफ्तार हुआ खुदी राम बोस छोटी उम्र में ही शहीद हो गए थे। देश भक्ति की प्रचंड भावना से भरे आजादी के संघर्ष में कुद पड़े और 18 वर्ष 8 महीने 11 दिन की उम्र मे फांसी पर चढ़ कर सदा के लिए अमर हो गए।

समर्पित इंकलाबी : राजगुरू



जन्म दिवस
24 अगस्त 1908

सेसलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के समर्पित इंकलाबी शहीद भगत सिंह के प्यारे साथी खूबसूरत चीजों के कद्रदान एवं निशाने की तरफ निरन्तर चलने वाले, राजगुरू आजादी संग्राम के समर्पित क्रांतिकारी। उन्हें 23 मार्च 1931 को शहीद भगत सिंह, सुखदेव के साथ रात के अंधेरे में अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था।

If undelivered please return to :
Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरुक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।